वर्ष–2, अंक–11
इंटरनेट संस्करण : 74

पत्रिका गर्भनाल

ISSN 2249–5967
जनवरी 2013

प्रवासी भारतीयों की मासिक पत्रिका

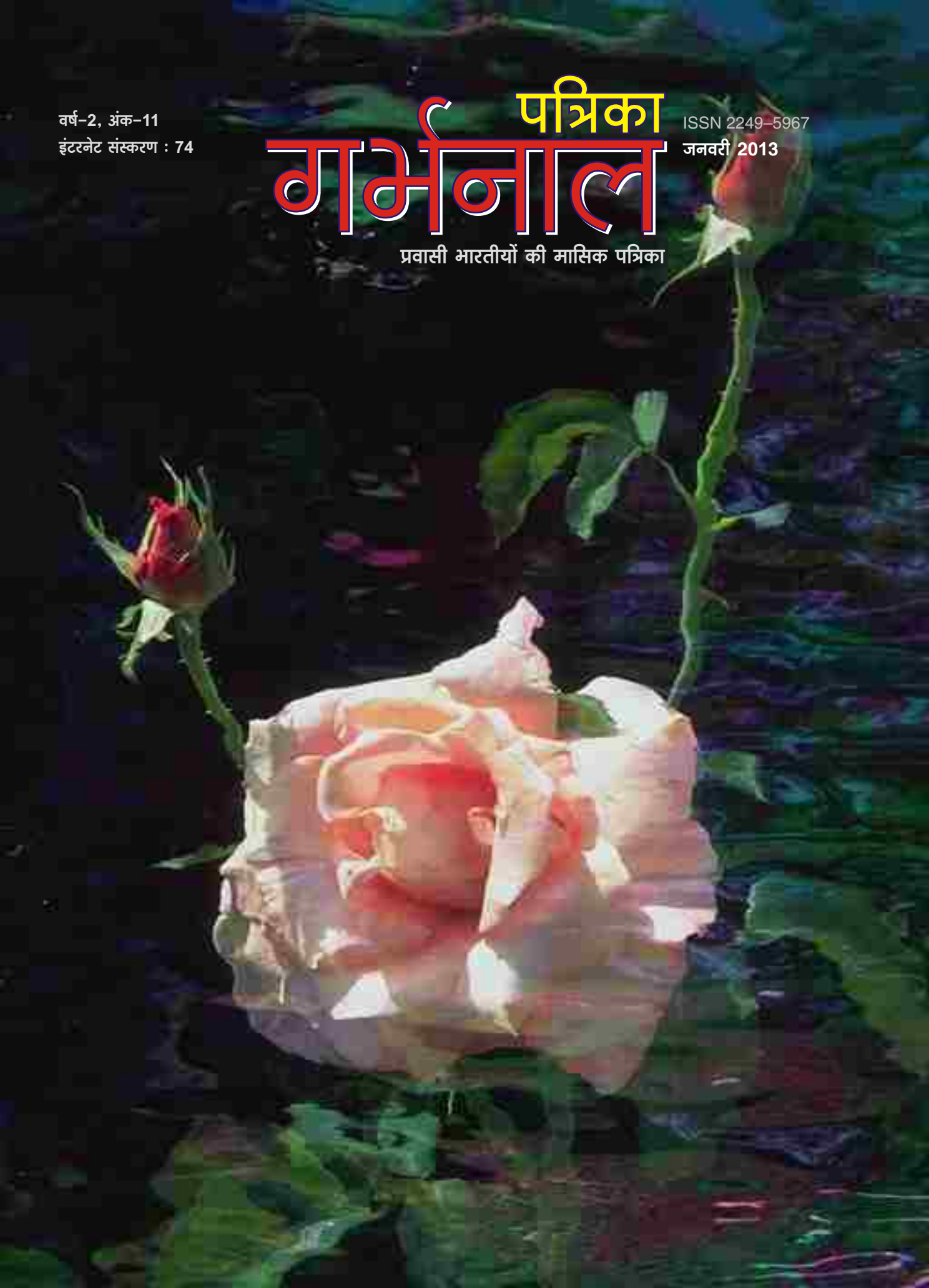

आईये, आभार प्रकट करें

9वें विश्व हिन्दी सम्मेलन–2012
में सम्मानित विदेशी मूल के हिन्दी–प्रेमी विद्वानों के
कृतित्व, हिन्दी के लिये उनके योगदान को
उजागर करने में सहयोग कीजिये
धन्यवाद कहिये!

विद्वानों के नाम हैं :

डॉ. पीटर गेराल्ड फ्रेडलान्डर, ऑस्ट्रेलिया

प्रो. सेर्गेई सेरेबिरयानी, रूस

मार्को जोली, इटली

प्रो. ल्यू अन्वूक, चीन

डॉ. श्रीमती बूधू, मारीशस

श्री बमरूंग खाम, थाइलैंड

प्रो. उपुल रंजीत हेवाताना गामेज, श्रीलंका

सुश्री वान्या जार्जिवा गंचेवा, बुल्गारिया

श्री जबुल्लाह 'फीकरी', अफगानिस्तान

श्री भोलानाथ नारायण, सूरीनाम

सुश्री कैटरीना बालेरीवा दोवबन्या, उक्रेन

डॉ. कृष्ण कुमार, ब्रिटेन

श्री इंदुप्रकाश पांडेय, जर्मनी

श्री सत्यदेव टेंगर, मारीशस

प्रो. टिकेदी इशिदा, जापान

श्री विजय राणा, ब्रिटेन

श्री वेदप्रकाश बटुक, अमेरिका

जानकारी भेजने के लिये ईमेल पता है :
garbhanal@ymail.com

अपनी बात

इस मास की तेरह तारीख को स्वामी विवेकानन्द (१८६३-१९०२) के आविर्भाव के डेढ़ सौ साल पूरे हो जाएँगे. लोक संसार में कुल उनचालीस साल की अल्पायु को कालदेवता ने परमायु की मर्यादा दी. एक दृष्टान्त प्रस्तुत हुआ कि दीर्घायु ही परमायु नहीं होती, अल्पायु भी परमायु हो सकती है.

भारतीय धर्मगुरुओं में वे पहले व्यक्ति थे जिसने अभाव, वंचना और दरिद्रता के लिए अशिक्षा, कुपोषण, कूपमण्डूकता को जिम्मेदार बताया और दैनन्दिन जीवनयापन की समस्याओं से जूझने में संसाधन के रूप में अध्यात्म को नियुक्त किया. सदियों की गुलामी ने भारतीयों के आत्मविश्वास को कुचल दिया था. यह बात उनकी समझ से परे थी कि वे स्वयम् अपनी स्थिति में उन्नति लाने में सक्षम हैं. और इसका साधन एवम् माध्यम शिक्षा ही हो सकती है. उन्हें एक प्रेरक संदेश की आवश्यकता थी. स्वामीजी ने वेदान्त के सिद्धान्त में इस सन्देश को आविष्कृत किया. लोग धर्म के साथ अपने को ओतप्रोत समझते थे, कर्मकाण्ड की औपचारिकता का निर्वहन करते थे, किन्तु वेदान्त के लोककल्याणकारी सिद्धान्तों से परिचय नहीं था. वे नहीं जानते थे कि व्यावहारिक जीवन में यह कैसे उपयोगी हो सकता है. जनगण को दो प्रकार के ज्ञान की आवश्यकता थी, अपनी दुनियावी जरुरियात को सुलझाने के लिए लौकिक ज्ञान एवम् अपने आपमें विश्वास कायम करने एवम् नीति बोध अर्जित करने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान. स्वामीजी ने लौकिक ज्ञान के लिए पश्चिम से सीखने की जरूरत को स्वीकार किया. उनका कहना था कि पश्चिम की वैज्ञानिक उपलब्धियों को ग्रहण किया जाना चाहिए. समस्या थी लोगों के बीच इन विचारों को कार्यान्वयित करने की. इस उद्देश्य से शिकागो की धर्ममहासभा से सन् १८९७ ई. में भारत लौटने के शीघ्र बाद उन्होंने पहली मई, १८९७ ई. में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की. आज विश्व के अनेक देशों में रामकृष्ण मिशन की शाखाएं कार्यरत हैं, जो शिक्षा, स्वास्थ्य एवम् भूकम्प, सुनामी, दुर्भिक्ष जैसी आपदा प्रबन्धन में महत्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान कर रही हैं. रामकृष्ण मिशन की शिक्षण संस्थाएँ उच्च गुणवत्ता के लिए जानी जाती रही हैं.

वे हिन्दू संन्यासी थे, लेकिन अपने अनुयाइयों को अपने मत के प्रति निष्ठा रखते हुए सभी धर्मों के प्रति सम्मान बनाए रखने की सलाह दी, जैसा उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस ने सिखाया था. ऐसा एक दृष्टान्त है, 'ईशा मसीह की तरह बनो तथा हो सकता है कि किसी का जन्म चर्च में हो, लेकिन उसे चर्च में मरना नहीं चाहिए.' सभी धर्म सर्वशक्तिमान तक पहुँचने के अलग-अलग रास्ते हैं, *'जअत मत ततअ पथ* (जितने मत उतने रास्ते)'. आध्यात्मिक सत्य की उपलब्धि सबों को प्रत्यक्षतः करनी होती है.

स्वामी विवेकानन्द के व्यक्तित्व का एक विशिष्ट पहलू है कि संन्यासी रहते हुए भी उन्होंने पारिवारिक दायित्वों का समर्पित व्यक्ति की निष्ठा से निर्वहन किया. गुरु रामकृष्ण परमहंस के साथ जुड़ी एक घटना की चर्चा प्रासंगिक होगी. एक बूढ़ा व्यक्ति ठाकुर के पास आया और निवेदन किया, 'ठाकुर, बड़ा कष्ट है, सहा नहीं जाता.' ठाकुर ने हँसते हुए उसे कहा 'जीवित रहोगे और जीवित रहने का टैक्स नहीं दोगे? टैक्स की चोरी करना चाहते हो?' विवेकानन्द ने जीवित रहने का टैक्स बड़ी निष्ठा से चुकाया. अपनी तमाम व्यस्तताओं एवम् कष्ट के बीच अपनी माँ एवम् भाई की जरूरतों को पूरा ही नहीं करते रहे, उनके प्रति संवेदनशीलता भी बनाए रखी.

सन् १८९३ ई. में शिकागो की महासभा में अपनी वाणी से जगत को चमत्कृत करने के बाद स्वामीजी एक दशक भी जीवित नहीं रहे. अजस्र यन्त्रणादायक रोगों से जूझते हुए अपने समय की विडम्बनाओं को निःशब्द सहते हुए भी विवेकानन्द हमलोगों को जो कुछ दे गए उसका हिसाब किताब देश विदेश के विमुग्ध विद्वानों की चेष्टा से आज एक शताब्दी के बाद भी पूरी नहीं हुई है.

स्वामीजी की वाणी एवम् रचना के रूप में हमें अंगरेजी में दस खण्डों में जो कुछ उपलब्ध है, उसे सम्भव करनेवालों में अनेकों सागर पार के हैं, जैसे उनके क्षिप्रलिपिकार (शॉर्टहैंड राइटर)' सारा एलेनवैल्डो, सारा बुल लॉरा ग्रेन और अन्य. उनके शिष्यों और समर्पित मित्रों में पश्चिम के मार्गरेट नोबल (बाद में जिनका परिचय भगिनी निवेदिता हुआ), कैप्टेन एवम् श्रीमती सेवियर, जोसेफिन मैक्लियॉड, सारा ओल बुल के नाम उल्लेख किए जाते हैं, जैसे अनेकों गुणी लोग थे. निवेदिता ने अपने को कलकत्ते में लड़कियों की शिक्षा के प्रसार प्रचार के लिए समर्पित कर दिया था.

अन्त में एक दार्शनिक की उक्ति को उद्धृत करते हुए— 'जीवन नदी के प्रवाह में घड़ियालों से साबिका पड़ा करता है, चढ़ाव और उतार होते हैं. हमें दार्शनिक होना होता है, भविष्य की ओर उन्मुख रहना होता है. हम यह नहीं कह सकते कि यह कल हुआ था और मैं इसकी ओर नहीं देखना चाहता. समाज की मुख्य धारा में नहीं तो, सामाजिक संलाप के लिए, प्रज्ञा-युक्त व्यक्तियों की आवश्यकता होती है, क्योंकि उनके साथ दर्शन, ज्ञान, प्रज्ञा, अनुभव और सर्वोपरि— सान्त्वना का समावेश हुआ करता है. सान्त्वना से अधिक महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं हुआ करता. यह आशा का नवीकरण करता है.' सान्त्वना के स्रोत के रूप में रामकृष्ण मिशन आज तक अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है. वयोवृद्ध पत्रकार पद्मश्री अमिताभ चौधुरी का एक संस्मरण प्रासंगिक है.

संजय की मृत्यु के बाद अखबारों में छपा कि इन्दिरा विमान दुर्घटना के स्थल पर देखने गई थी कि कहीं वहाँ उस धन राशि का कोई अंश पड़ा तो नहीं है, जिसकी संजय ने चोरी की थी. इन्दिरा रो भी नहीं पाई थीं, प्रधानमंत्री थीं न! बाद में इन्दिरा गाँधी कलकत्ते आईं. रामकृष्ण मिशन गईं. देहरादून के स्वामी अभयानन्द, जो उन्हें अपनी बेटी की तरह प्यार करते थे, के गोद में सर रखकर फूट-फूटकर रोईं. पुत्रशोक का रोदन रोकर चली आईं.

ganganand.jha@gmail.com

पत्रिका गर्भनाल

वर्ष-2, अंक-11 (इंटरनेट संस्करण : 74)

जनवरी 2013

सम्पादकीय सलाहकार

गंगानन्द झा

परामर्श मंडल

वेद मित्र, एम.बी.ई., यू.के.
डॉ. रवीन्द्र अग्निहोत्री, ऑस्ट्रेलिया
अनिल जनविजय, रूस
अजय भट्ट, बैंकाक
देवेश पंत, अमेरिका
उमेश ताम्बी, अमेरिका
आशा मोर, ट्रिनिडाड
डॉ. अनिल विद्यालंकार, भारत
डॉ. ओम विकास, भारत

सम्पादक

सुषमा शर्मा

तकनीकि सहयोग

डॉ. राजीव यादव, न्यूयार्क

आकल्पन सहयोग

डॉ. बृजेश तिवारी, लखनऊ

कम्पोजिंग

प्रताप परिहार

कानूनी सलाहकार

संजीव जायसवाल

सम्पर्क

डीएक्सई-23, मीनाल रेसीडेंसी,
जे.के. रोड, भोपाल-462023 (म.प्र.) भारत.
ईमेल : garbhanal@ymail.com

आवरण छायाचित्र

गूगल से साभार

प्रकाशित रचनाओं के विचार लेखकों के अपने हैं, जरूरी नहीं है कि सम्पादक इससे सहमत हों. विवाद की स्थिति में केवल भोपाल न्यायालय क्षेत्र ही रहेगा.

>> 4

युग प्रवर्तक - स्वामी विवेकानन्द

>> 8

हिन्दी की असली तस्वीर

>> 13

आगरा से नियागा तक

>>25

ईश्वर और मार्क्स का द्वंद्व

इस अंक में

स्मरण :	राजशेखर	4
मन की बात :	कौशिक कुमार शाण्डिल्य	6
	डॉ. ब्रजेश कुमार सिंह	8
विचार :	बीनू भटनागर	11
तथ्य :	डॉ. मयंक रावत	13
सामयिक :	विनय मोघे	21
बातचीत :	आत्माराम शर्मा	22
नजरिया :	राजकिशोर	25
व्याख्या :	मनोज कुमार श्रीवास्तव	27
चिन्तन :	बृजेन्द्र श्रीवास्तव	34
वेद की कविता :	प्रभुदयाल मिश्र	35
गीता-सार :	अनिल विद्यालंकार	36
प्रश्नोत्तरी :	डॉ. ओमप्रकाश गुप्ता	38
पंचतंत्र :		39
महाभारत :		40
अनुवाद :	गंगानन्द झा	41
	नीलम कुलश्रेष्ठ	44
कविता :	प्रो. डॉ. पुष्पिता अवस्थी	45
	प्रो. हरिशंकर 'आदेश'	46
	डॉ. माधवी सिंह	47
	सुधा मिश्रा	48
	विजय निकोर	49
	पल्लवी सक्सेना	50
	कीर्ति श्रीवास्तव	51
	भूपेन्द्र कुमार दवे	52
	अशोक सिंघई	53
शायरी की बात :	नीरज गोस्वामी	54
कहानी :	महेंद्र दवेसर 'दीपक'	55
खबर :		62
आपकी बात :		63

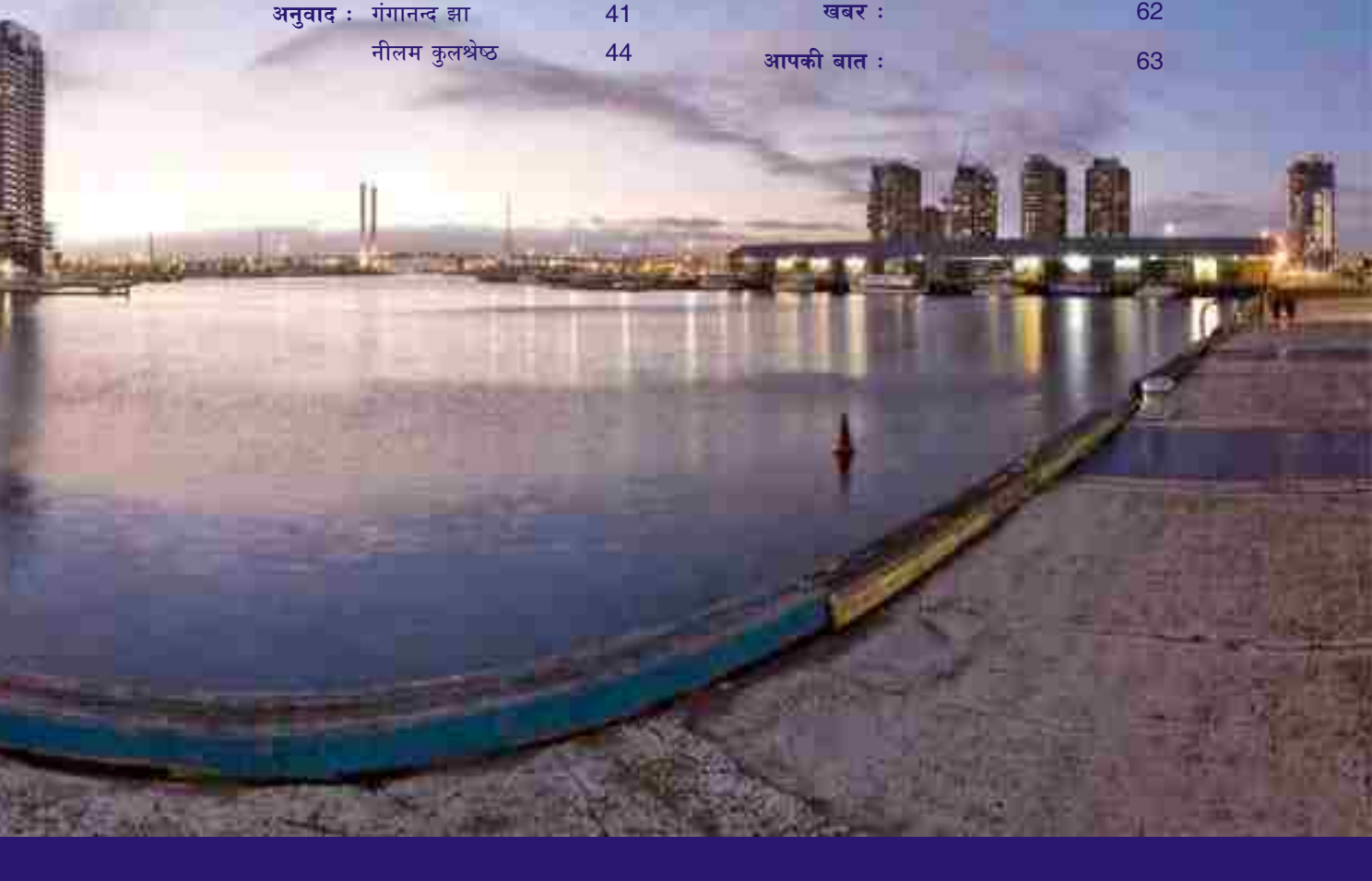

राजशेखर

विधिस्नातक, रामकृष्ण मिशन विद्यपीठ, देवघर के छात्र रहे हैं. सम्प्रति : चण्डीगढ़ में रहते हैं एवं 'खेलशाला' नामक स्वैच्छिक संस्था से प्रशासक सह विधि सलाहकार के रूप में जुड़े हैं.

सम्पर्क : raj.shekhar7794@gmail.co

स्मरण

युग प्रवर्तक - स्वामी विवेकानन्द

स्वामी विवेकानन्द की १५०वीं जयन्ती के अवसर पर मेरी चेतना में एक प्रश्न उभड़ता है, स्वामी विवेकानन्द भारत में कैसे प्रासंगिक हैं. एक साधारण-सा बंगाली बालक, जिसने संन्यास ग्रहण किया और जिसने संयुक्त राज्य अमेरिका के शिकागो में आयोजित धर्म महासभा में भारत का प्रतिनिधित्व किया, ने पूरे विश्व को अपने विचारों से आन्दोलित कर दिया. क्या उसका भारत पर प्रभाव सचमुच अल्पकालिक था या सर्वकालिक?

उनके साहित्य एवम् उपलब्धियों पर गौर करने पर स्पष्ट हो जाता है कि भारत के नवजागरण का श्रेय स्वामी विवेकानन्द को है. उनके बहुमुखी चरित्र एवम् विचारों के कारण ही पण्डित जवाहरलाल नेहरु, महात्मा गाँधी, सुभाषचन्द्र बोस, लिओ टॉल्सटॉय, रोमा रोलाँ, मैक्स मुलर जैसे अनेकों विद्वानों ने स्वामी विवेकानन्द को दार्शनिक, मानवतावादी, देशभक्त, समाजवादी, अग्रगामी और अनेकों अन्य विशेषणों से विभूषित किया है. कदाचित् अन्य किसी विचारक का आज के भारत पर तुलनात्मक प्रभाव नहीं है.

> *मेरे आदर्श बहुत कम शब्दों में प्रस्तुत किए जा सकते हैं, और वे हैं, मनुष्य को उसके देवत्व से परिचित कराना और जीवन की प्रत्येक गतिविधि में इसे अभिव्यक्त करने का उपदेश देना.*

उनके सन्देशों के प्रभाव का ही नतीजा है कि उनकी जन्मतिथि १२ जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है.

भारत पर स्वामी विवेकानन्द के प्रभाव की चर्चा करना सागर में पत्थर फेंकने जैसा है. सतर्क दृष्टि को जीवन के प्रत्येक चरण पर उनकी छाप दिखती है. मुझे उनके सन्देश, उनके कार्य और उनके विचार असीम आयाम के महासागर की तरह विस्तृत दिखते हैं.

भारत एवम् विश्व के मानव समुदाय की संरचना की समझ के मामले में स्वामी विवेकानन्द अपने समय से काफी आगे थे. उन्होंने समस्याओं की सही पहचान की और उन समस्याओं के समाधान के लिए विचार और कार्य प्रस्तुत किए. समग्र भारत भ्रमण के दौरान वे जनगण की भयंकर दरिद्रता और पिछड़ेपन से रूबरू होकर बहुत विचलित हुए.

उन्होंने स्पष्ट घोषणा की कि भारत के पतन एवम् पिछड़ेपन की सही वजह जनता की उपेक्षा है. उन्होंने घोषणा की, 'जब तक करोड़ों लोग भूखे और अशिक्षित हैं, मैं उन सारे लोगों को देशद्रोही मानता हूँ, जिन्होंने उनके खर्च पर शिक्षा हासिल की और उन पर ध्यान नहीं दिया.' इसी पृष्ठभूमि में उन्होंने कहा था, 'भगवान की सेवा मानवता की सेवा है.' आगे उन्होंने कहा गरीबी और अशिक्षा भारत की जनता का अभिशाप रही हैं. भूखों को भोजन देना और उनके मन में स्वयं पर आस्था कायम कर पाना असली काम है. इसके लिए उन्होंने दो प्रकार की शिक्षा का सुझाव दिया. जनता की आर्थिक अवस्था में उन्नति लाने के लिए लौकिक शिक्षा एवम् स्वयं पर आस्था भरने के लिए आध्यात्मिक शिक्षा. इन दो प्रकार के ज्ञान के प्रचार के लिए स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा को एकमात्र साधन अंकित किया और इसलिए कहा, 'शिक्षा मनुष्य में पहले से वर्तमान पूर्णता की अभिव्यक्ति है.'

> स्वामी विवेकानन्द ने कहा कि भारत के पतन एवम् पिछड़ेपन की सही वजह जनता की उपेक्षा है. उन्होंने घोषणा की, 'जब तक करोड़ों लोग भूखे और अशिक्षित हैं, मैं उन सारे लोगों को देशद्रोही मानता हूँ, जिन्होंने उनके खर्च पर शिक्षा हासिल की और उन पर ध्यान नहीं दिया.'

स्वामी विवेकानन्द यहीं नहीं रुके. शिक्षा के प्रसार एवम् प्रचार एवम् दलित जनता तथा औरतों के उत्थान के लिए अपनी योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए उन्होंने एक दक्ष संगठन की नींव रखी, जो श्रेष्ठ विचारों को दरिद्रतम एवम् क्षुद्रतम के निकट उपलब्ध कराएगा. यह संगठन रामकृष्ण मिशन है. सचमुच यह गर्व और गौरव की बात है कि स्वामी विवेकानन्द द्वारा स्थापित यह संस्था अविरत एवम् लगातार देश के अन्दर और विदेशों में पिछले ११५ वर्षों से उल्लेखनीय सेवाएँ देता रहा है. इसका मंत्र है 'आत्मनो मोक्षार्थम् जगत हिताय च' अर्थात् 'अपनी मुक्ति के लिए तथा विश्वकल्याण के लिए.'

आधुनिक भारत के निर्माण में विवेकानन्द का सबसे अनोखा अवदान लोगों का ध्यान पददलित जनता के प्रति उनके कर्तव्यों के प्रति आकर्षित करना रहा है. वे भारत के पहले धार्मिक नेता थे जिसने जनता के लिए आवाज बुलन्द की, सेवा के लिए एक निश्चित दर्शन विकसित किया तथा बड़े पैमाने पर सामाजिक सेवा आयोजित की.

स्वामी विवेकानन्द ने अपने आदर्शों को सार स्वयम् इन शब्दों में प्रस्तुत किया है, 'मेरे आदर्श बहुत कम शब्दों में प्रस्तुत किए जा सकते हैं, और वे हैं, मनुष्य को उसके देवत्व से परिचित कराना और जीवन की प्रत्येक गतिविधि में इसे अभिव्यक्त करने का उपदेश देना.'

उन्होंने अपने आप में आस्था रखने के लिए हर किसी का आह्वान किया, 'अगर तुम्हें अपने सभी तैंतीस करोड़ पौराणिक देवी देवताओं पर विश्वास है और अपने आप पर विश्वास नहीं है, आपको मोक्ष की उपलब्धि नहीं हो सकती. अपने आप पर आस्था रखो और उस आस्था के बूते खड़े रहो और दृढ़ बनो. यही वह बात है जिसकी हमें आवश्यकता है.'

लेकिन केवल सशक्त व्यक्तियों को ही अपने आप पर विश्वास हो सकता है और उन्होंने ओजस्वी घोषणा की, 'शक्ति ही वह चीज है जिसकी हमें इस जिन्दगी में आवश्यकता है, हम जिसे पाप और दुःख कहते हैं उन सबका एक ही कारण है, और वह है हमारी दुर्बलता. दुर्बलता से अज्ञान उपजता है और अज्ञान दुःख का वाहक होता है. शक्ति जीवन है और दुर्बलता मृत्यु.'

अन्त में पण्डित जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में, 'अतीत पर आधारित, भारत के गौरव के प्रति गर्व से भरे हुए, फिर भी जीवन की समस्याओं के प्रति अपने दृष्टिकोण में विवेकानन्द आधुनिक थे. वे भारत के अतीत एवम् वर्तमान के बीच एक प्रकार की कड़ी थे— पददलित और हतोत्साहित भारतीय मानस के निकट एक टॉनिक की तरह उनका आभिर्भाव हुआ और उन्होंने उसे अतीत से जोड़ा.'■

कौशिक कुमार शाण्डिल्य

एम.एससी. (रसायन), एम.ई. (ए. बायर नमेण्टल इंजी.) डिप्लोमा (कम्प्यूटर एल्लीकेशन), स्टील मेकिंग व रीरो कि पी.एचडी. (सिविल इंजी.) यूनिवर्सिटी ऑफ टोलेडो, लीड जी ए. क्वालिफाइड एन्वायरनमेटल प्रोफेशनल अनुभवी रिसर्च स्कॉलर, इन्वेस्टीमेटर साइंटिफिक ऑफिसर, रिसर्च एण्ड टैक्नॉलोजी में कमर्शियलाइजेशन एक्सपर्ट स्पेशियलाइजेशन ऑफर फाइन पर्टीकुलेट्स, ग्रीन टैक्नॉजी क्लाइमेट चेत्र, व्हीकुलर एमिशन विशेषज्ञ. कई जर्नल्स में पेपर छपे तथा अनेक कॉन्फ्रेंसेज में लेख पढ़े गये.

सम्पर्क - MS 307, The University of Toledo, 2801 W. Bancroft Street, Toledo, OH 43606

Email : kaushandi@gmail.com

मन की बात

क्या से क्या हो गये

हम क्या थे, क्या हो गये और क्या होंगे अब? इस विचार की सारगर्भिता स्वामी विवेकानन्द व गांधीजी के आदर्शों पर आधारित है. देश को तथाकथित पूंजीवादी धनकुबेरों ने किस प्रकार गम्भीर तीरों से आहत किया है, उस घायल पक्षी की मर्मान्तक पीड़ा को उजागर करते हुए आगे आने वाली पीढ़ी को पुनः वैभवशीलता की ओर ले जाने का आह्वान किया जाना चाहिये.

गुजरे समय को याद करके स्वर्ण पक्षी दुःखी होता है क्योंकि आज की परिस्थितियों को देखकर स्वर्ण पक्षी की आत्मा आहत है और सोचता है कि आखिर यह भारत है क्या? विश्व सरिता का वह हिस्सा जहां प्रकृति ने चुनी थी अमूल्य खजाने को संग्रहित करने की गुप्त जगह. क्या आप जानना चाहेंगे? तमाम दुनिया ने इस संग्रहकर्ता को किस नाम से जाना? जी हाँ, स्वर्ण पक्षी, सोने की चिड़िया और भी कई नाम जिनसे मुझे पुकारा जाता है. किन्तु यदि तुम्हीं में इस अखण्ड भारत के बारे में जानने की तमन्ना नहीं है तो मैं अकेला कैसे दिलवा पाऊँगा, स्वर्ण पक्षी को उसका पूर्व गौरव, स्वर्णिम अतीत जो मुझे मेरी शख्सियत का अहसास दिलाये.

भारत! जी हां, यही खंडहरनुमा वर्तमान भारत. मानो सरिता की तमाम उच्छृंखल लहरों ने अपना रुख इस ओर कर अपने गर्भ में छिपे बेशुमार हीरे, जवाहरात, रत्न, मणि, पदम और अनेक बहुमूल्य पत्थर यहां लाकर एकत्र किये थे जो किसी अलौकिक शक्ति के वशीभूत होकर प्रकृति ने इस भूमि को अपने वरदानों से सुसज्जित किया था, हजारों ने मतों और खूबसूरती से नवाजा था जिसे मैं अपलक ही देखता रहा हूँ.

विश्व के इस सबसे खुशहाल हिस्से पर जब आर्यों का आगमन हुआ तब वे इस स्वर्ग को पाकर आल्हादित हो, इसे अपनाकर और भी खुशहाल करने के प्रयत्नों में लग गए. राम, कृष्ण और अन्य आर्य विभूतियों के इस धरा पर जन्म लेने और उनकी लीलाओं को अपनी आंखों से देखकर तो मैं स्वयं को धन्य समझ बैठता हूँ. वह युग इस देश को सही मायनों में स्वर्ण पक्षी बनाने की दिशा में आध्यात्मिक, धार्मिक एवं नैतिक रूप देने में अग्रसर प्रथम कदम थे जिनके द्वारा आर्यों ने मुझे मेरी पहचान दिलाई. महाभारत युद्ध के समय कौरवों, त्रेता युग में रावण और समय-समय पर आने वाले अनेक दानवी शक्तियों को देखकर एकबारगी मैं तो कांप ही

उठता था. किन्तु अन्त में सच्चाई और धार्मिकता की विजय तथा ईश्वर के अस्तित्व को देखकर मैं फिर चिहुंक उठता था. महाकाव्य युग के समय जिसमें चारित्रिक मानदंड एक सुदृढ़ रूप ले रहे थे, मैंने अपनी आत्मा को पुष्ट होते हुए महसूस किया. महात्मा बुद्ध व महावीर के बारे में सोचकर तो मैं अपने ऊपर गौरवान्वित हो उठा था कि मेरे पास इतने कीमती हीरे हैं जो अखिल विश्व को नीति-प्रतीति का पाठ, जाने की कला व ढंग बताकर भारत पर सिकन्दर के आक्रमण होने पर भी मैं भयभीत नहीं था, क्योंकि मुझे मालूम था कि मेरी रक्षा करने के लिए चन्द्रगुप्त और चाणक्य के नेतृत्व में सम्पूर्ण भारत उठ खड़ा होगा. मेरा उत्कर्ष, मौर्यों, गुप्तों, चालुक्यों और चोलों के कालों में होगा. मैं अत्यन्त सुखी था. मैंने उस वक्त सारे संसार को अपनी चमक से चकाचौंध कर दिया था.

अशोक के कार्यकाल में मैंने अपनी सुरभि दुनिया के दूसरे देशों में पहुंचायी. भारत पर अटूट विश्वास का, भारत पर विश्व के मार्गदर्शक बनने के विश्वास का प्रथम चरण तभी से शुरू हुआ और आज के युग का यह उजीर्ण भारत 'स्वर्ण भारत', 'आदर्शशक्ति' कहलाया जाने लगा. और हाँ, किसे

> आंसुओं से लथपथ स्वर्ण पक्षी अभी भी इस उम्मीद से देख रहा है कि कोई तो इन सरिताओं को पुनः मेरे कगार पर ले आये. मगर अफसोस जो खुद इससे स्वर्ण छीनते हैं, वे भला क्यों इसकी मदद करने लगे.

हर्ष नहीं होता, अपने अजीज को बुलंदियों के सर्वोच्च शिखर पर आसीन देखे, सो मैं भी इस अतीत मधुसागर का रसपान अनायास ही करने लगा. आनंद के चर्मोत्कर्ष को, मेरी आभा को, शायद तकदीर ने नामंजूर कर दिया है. वक्त के फेर में और विषम परिस्थितियों ने स्वर्ग के आसन्न, अध्यात्मवाद के दाता को, इस धनाढ्यतम देश को, कंगले देशों की सूची में सातवें स्थान पर ला खड़ा किया है. पूर्व में महमूद गजनवी ने आक्रमण कर मेरे स्वर्ण पंखों को अति क्रूरता से नोंच लिया था, किन्तु मैं अपनी आध्यात्मिक एवं आत्मिक शक्तियों के कारण जीवित रहा. बारहवीं सदी में भास्कराचार्य द्वारा दी गई शून्य की संकल्पना, बीजगणित, गृह गणिताध्याय एवं गोलाध्याय की रचना, चक्रीय प्रेम की अवधारणा, गणित जैसे जटिल एवं महत्त्वपूर्ण विषय में भारत की सर्वोच्चता का अहसास दिलाते हुए मुझे आनन्दित किया. तेरहवीं शताब्दी में हुए मंगोलों के आक्रमण पश्चात् भी भारतीय संस्कृति की उनको अपना लेने वाली महानता को देखकर मैं गद्‌गद हो उठता हूँ. चौदहवीं शताब्दी में विदेशी जातियों ने यहां रहकर साम्प्रदायिक सौहार्द्र को बढ़ाते हुए भारत की सांस्कृतिक विरासत को बढ़ गया. अमीर खुसरो, रहीम, कबीर, रसखान मेरे ही रत्न हैं. अकबर के बारे में सोचकर तो मैं अभिभूत ही हो उठता हूँ जिसने मुगलों का शासन स्थापित करने के अलावा मानवता को बल भी दिया. वह मेरी नजरों में एक महान, धनी और प्रजा को प्यार करने वाला बादशाह था जिसकी सेना में हिन्दू और मुसलमान दोनों ही भाई थे और मातृत्व की भावना में बेइंतहा बढ़ोतरी की.

आज की दशा देखकर तो स्वर्ण पक्षी दुखी हो उठा है. मैं स्वयं को एक जीर्ण-शीर्ण अवस्था में या यूँ कहूँ कि पिछले चौंसठ वर्षों से मृत्यु शैया पर पड़े मेरे देश भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् भी मैं स्वयं को प्रतिपल मौत के आगोश में प्रविष्ट होता हुआ पाता हूँ. स्वर्ण पक्षी अर्थात् मेरी यह दशा तो इतिहास के किसी युग में नहीं हुई थी, ब्रिटिश शासन में भी नहीं, क्योंकि तब भी मेरी मदद को सहस्त्रों, कोटि-कोटि हाथ तत्पर थे. महात्मा गांधी के नेतृत्व में. तब भारतीय जनों के दिलों में उमड़ता अथाह मातृत्व प्रेम ब्रिटिश शासन को सत्ता विमुख करने का मूल कारण बना था.

आज के दौर में जहाँ भ्रष्टाचार, जातिवाद, घटिया राजनीति, सत्तालोलुपता भाई-भतीजावाद, परिवारवाद और स्वयंवाद का आधिपत्य है तब विनाश के इस कगार से देश को लौटाने में मैं स्वयं को असमर्थ पाता हूँ. एक लम्बे अरसे से मैंने एक भी ऐसा शख्स नहीं देखा जिसने इस देश का तनिक भी ख्याल किया हो. मैंने देखा तो कुछ दलों को, जो सत्ता स्वार्थ में लिप्त रह आज भी अपनी तलवार की धार यह सोचकर तेज कर रहे हैं कि कही यह भोंथरी हो गई तो कैसे करूंगा अपनी मां के कलेजे के टुकडे. ऐसी मां जिसकी गोद में उसने वात्सल्यमयी क्रीड़ाएँ की, जो सदियों से न जाने कितने गमों को सह रही है-सतत्-अनवरत और लगातार. फिर भी अपनी पेशानी पर शिकन तक नहीं आने देती, उफ तक नहीं करती, उसे उसका अहसान चुकाने की मेरी अंतिम ख्वाहिश कहीं अधूरी न रह जाये. और अपने अंजाम से बेखबर मैं एक निरीह स्वर्ण पक्षी भारत स्वयं को दर्पण में निहारते समय निश्चय ही यह जानने की चेष्टा कर रहा हूँ कि क्या मेरा नाम 'स्वर्ण पक्षी' कहीं कोई कपोल कल्पना तो नहीं है. अथवा मेरे शरीर के किसी अंश में स्वर्ण अंश की दमक भी है. अगले ही क्षण मेरे चक्षुओं से अविरल अश्रुधार मेरे अक्स को नम कर मुझे मेरे स्वर्ण विहीन होने का अहसास दिला देती है. किसी समय बेशुमार संपदा बहा लाने वाली सरिताओं का रुख भी किसी अन्य जगह की ओर है, शायद वह तलाश रही है संपदा के नवीन धारक को. यूं भी इस विश्व का सम्पूर्ण कायनात का 'भारत पर विश्वास' जैसे जज्बे का क्षरण हो चुका है.

आंसुओं से लथपथ स्वर्ण पक्षी अभी भी इस उम्मीद से देख रहा है कि कोई तो इन सरिताओं को पुनः मेरे कगार पर ले आये. मगर अफसोस जो खुद इससे स्वर्ण छीनते हैं, वे भला क्यों इसकी मदद करने लगे. अब तो स्वर्ण पक्षी भारत माता के सामने अन्तर्वेदना से तड़प-तड़प कर दम तोड़ रहा है. स्वर्ण पक्षी का खौफज़दा अंत और भारत माता लाचार, बेबस, चाहकर भी कुछ नहीं कर पा रही है. वो भी सोचती है कि काश मैं अकेली न होती और सम्पूर्ण भारतीय जन मेरे साथ होते. यही सोच गम को कुछ हद तक कम करने का प्रयास करती है एवं हृदय में किसी गुनाह का अहसास लिये आहिस्ता-आहिस्ता सिसकती रहती है और कहती है कि हे स्वर्ण पक्षी मुझे अभयदान देना और स्वर्ण पक्षी तो अंत तक यही सोचता रहेगा :

तमाम उम्र रहा इस वतन से प्यार मुझे
मैं जा रहा हूँ ऐ जिन्दगी जरा पुकार मुझे
तमाम चोरों को देखो कफ़न बेचते हैं,
अमन चोरो को देखो अमन बेचते है,
पहरूआ बनाया था जिनको वतन का.

किन्तु तब भी मैं सोचता हूँ कि जिस प्रकार सुबह होने से पहले बहुत गहरा अंधेरा हो जाता है ठीक उसी प्रकार मृत्यु शैया पर पडे जीर्ण-शीर्ण जिसे उन्होंने पूर्णतः भुला दिया है, को पुनः अमल में लाना होगा. और स्वर्ण पक्षी की आभा को वापस लौटाने के लिए संकल्पित होना होगा.■

डॉ. ब्रजेश कुमार सिंह 'विशाल'
१५ मई १९७२ को जबलपुर में जन्म. शिक्षा- एम.ए., बी.एड., पी.एच.डी., एम.ए.एजुकेशन. विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं एवं छत्तीसगढ़ से प्रकाशित सप्तक-६ में कविताओं का प्रकाशन. संप्रति-आदित्य बिड़ला पब्लिक स्कूल, ग्रासिम विहार, रावन (छ.ग.) में हिन्दी शिक्षक.
सम्पर्क : brajeshatharva@yahoo.co.in

मन की बात

हिन्दी की असली तस्वीर

गुणैरूत्तमतांय याति नौच्चैरासनसंस्थिताः
प्रासादशिखरस्थाअपि काकः किं गरुडायते
मनुष्य अपने अच्छे गुणों के कारण श्रेष्ठता को प्राप्त होता है. उसे ऊँचे आसन पर बैठने के कारण श्रेष्ठ नहीं माना जाता. राजभवन की सबसे ऊंची चोटी पर बैठने पर भी कौआ, गरुड़ कभी नहीं बन सकते.

हिन्दी भाषा के अस्तित्व के प्रति सशंकित लोगों के मन में चाणक्य नीति के इस श्लोक से कुछ राहत मिलनी चाहिए. चीनी भाषा के बाद हिन्दी बोलचाल की व प्रयोग की भाषा के रूप में कुछ इस तरह से अपने प्रभाव को लोगों पर जमा चुकी है कि उसे मिटाना या दूर हटाना अब असम्भव.

मैंने अध्यापनकाल के दौरान अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी के प्रति सम्मान व जो आत्मीयता का भाव देखा, वह अचंभित कर देने वाला था. दूसरी भाषा के प्रति ये विमोह मैंने न देखा व सुना. लोगों की लड़खड़ाती जुबान से हिन्दी का उच्चारण व आँखों में आत्मीय समर्पण देखा. लोगों के मन में हिन्दी सीखने की एक लगन है और हिन्दी शिक्षकों के प्रति विशेष सम्मान का भाव दिखाई दिया.

अब मैं हिन्दी भाषी क्षेत्र की ओर ले चलता हूँ, जहाँ मेरे अध्यापन का अधिकतम समय बीता है. इन हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी का कुछ ज्यादा अनादर व अवहेलना देखने को मिली. मुझे हर विषय का शिक्षक, हर वर्ग का अभिभावक व छात्र सभी के सभी हिन्दी के ज्ञाता लगे. वे अंग्रेजी वातावरण के मायावी प्रभाव के बीच हिन्दी के कुछ शिष्ट शब्दों का प्रयोग मजाक के तौर पर करते हैं और साथ देने के लिए कुछ और अंग्रेजी आत्माएँ मायावी शक्तियों की तरह हँस देती हैं. ठहाकों के बीच हिन्दी का उच्चारण आज अंग्रेजी वातावरण में सिगरेट के धुएँ की तरह प्रतीत होता है. आज गाँव के हालात में भी आश्चर्यजनक परिवर्तन यह देखने को मिला है कि हर गाँव के आस-पास दो-चार चलताऊ अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय खुल गए हैं, जिनकी जुबां पर लड़खड़ाती अंग्रेजी व हृदय में क्षेत्रीय या हिन्दी भाषा लहर मार रही है, जीविका की इस खोज में कुछ तथाकथित शिक्षा शास्त्रियों ने गाँव को अंग्रेजी के व्याहमोह में फँसा दिया है. अब किसान भी गुड मार्निंग व हैप्पी बड्डे... बोलने में संकोच नहीं करते.

> *उन्होंने अपने आपको अंग्रेजियत में बदल दिया. वे योग को योगा व कृष्ण को कृष्णा कह कर सभी को मूल से काटकर व स्वयं को इस महान संस्कारभूमि से काटकर प्रसन्नता अनुभव करते हैं.*

हिन्दी भाषी क्षेत्रों की तस्वीरें कुछ विस्मय कर देने वाली भले ही हों पर सच्चाई यही नहीं है. हिन्दी आत्मा में बसी है,

अपनी पूरी छवि व गुणों के साथ.

गांधीजी के एक कथन को यहाँ उद्धृत करना पसंद करूँगा, जिसमें हिन्दी भाषा के प्रति उनका अनोखा समर्पण दिखाई देता है. वे कहते हैं : *मैं यदि तानाशाह होता (मेरा बस चलता) तो आज ही विदेशी भाषा में शिक्षा देना बंद कर देता, सारे अध्यापकों को स्वदेशी भाषाएँ अपनाने के पर मजबूर कर देता. जो आनाकानी करते, उन्हें बर्खास्त कर देता. मैं पाठ्य-पुस्तकों की तैयारी का इंतजार नहीं करूँगा, वे तो माध्यम के परिवर्तन के पीछे-पीछे अपने आप चली आएँगी. यह एक ऐसी बुराई है, जिसका तुरंत इलाज होना चाहिए.*

> *जो लोग हिन्दी भाषा को लेकर हाय तौबा मचा रहे हैं, उन्हें हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि हिन्दी राजमाता है, देश की धड़कन है. उसे कोई भला क्या मिटा सकता है, बस परिस्थितियोंवश कुछ बादल सामने आ जाते हैं, चमक फीकी करने के लिए.*

गांधीजी का यह कोई सामान्य कथन नहीं हैं बल्कि उनके समकालीन परिवेश में हिन्दी का जो भी चित्र उभरा उसमें उनको भविष्य की मलिन छवि दिखाई दे रही थी. इसी कारण उनके भाव पीड़ा बनकर उभरे हैं.

आजादी के बाद भी हमने अपने मन को नहीं बदला. अंग्रेजों की अंग्रेजी सीखी इसमें कोई बुराई नहीं है. हम जितनी भाषाएँ सीखेंगे हमारी अभिव्यक्ति का माध्यम भी उतना ही सशक्त होगा, लेकिन यहाँ हमने अपने आपको अंग्रेजियत में बदल दिया. आज रहन-सहन, व्यवहार में भी अद्‌भुत परिवर्तन दिखाई देता है. वे योग को योगा व कृष्ण को कृष्णा कह कर सभी को मूल से काटकर व स्वयं को इस महान संस्कारभूमि से काटकर प्रसन्नता अनुभव करते हैं. हद तो तब हो जाती है जब गंगा व सतलुज आदि नदियों का उच्चारण करते हैं, तो लगता है कि जैसे गैन्जेस या सैटलज कह रहें हों, जिसका हिन्दी में कोई भी अर्थ नहीं निकलता है. हिन्दुस्तानियों ने ही हिन्दी को अंग्रेजी के प्याले में इस तरह से ढाल कर पीना शुरू कर दिया कि उसके शुरूर से अब उनका बलखाना व लड़खड़ाना लाजमी है. एक अंग्रेज की अंग्रेजी शायद आसान हो, परन्तु एक गुलाम की अंग्रेजी कितनी खतरनाक होती है, कि उनके चबाऊ मुँह और उचकाऊ कंधे और खिसकाऊ गर्दन के लोच को देखकर आप भी शर्मिन्दा हो जाएंगे. क्या जरूरत है किसी भी भाषा को बोलने में इतनी मसक्कत की.

वास्तव में ये मसक्कत आज हमारे पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय जीवन का अमिट हिस्सा बन गयी है. रेल्वे स्टेशन की भीड़ में यदि आप भाई साहब या बहिन जी कहते रहें, तो कई पीढ़ी यूं ही इंतजार करते रह जाएँगे पर आगे जाने का मौका नहीं मिलेगा, मगर आप जैसे ही कहेंगे कि एक्सक्यूज मी सर या मैडम प्लीज... बस पीढ़ियों तक कोई पीछे दिखाई नहीं देगा. इसी देखा देखी में इन शब्दों को सीखने व बोलने की होड़ लगी है और इस दौड़ में हिन्दी पिछड़ती प्रतीत हो रही है. पांडुचेरी जाते समय साउथ की एक बस में जब युवाओं ने हमें हिन्दी बोलते देख अपनी सीट खाली कर हमें बैठने दिया तो हमें अपने आप पर बड़ा ही गर्व महसूस हुआ.

आजादी के बाद हिन्दी के विस्तार के लिए विभिन्न स्तर पर उल्लेखनीय प्रयास किए गए. साहित्य के कार्यकर्ता, राजनेता, हिन्दी सिनेमा, चैनल्स की प्रतियोगिताएँ, भारती विद्या भवन, डी.ए.वी. स्कूल, सरस्वती स्कूल जैसी शिक्षण संस्थाएँ इसमें अग्रगण्य हैं. विश्व हिन्दी सम्मेलन का नौंवा अधिवेशन हाल ही में दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सवर्ग में समाप्त हुआ. इसमें २२ देशों के ६०० से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया और लगभग ३०० भारतीय सुधि साहित्यकारों व हिन्दी प्रेमियों ने भाग लिया. याद होगा कि १९७५ से हिन्दी के विश्वस्तरीय उत्थान व संयुक्त राष्ट्र में इसे आधिकारिक भाषा बनाने के लिए इस संस्था ने कई उल्लेखनीय प्रयास किए हैं. १९७५ में राष्ट्रभाषा प्रचार संस्था के सहयोग से नागपुर में पहले सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें हिन्दी को विश्वस्तरीय मान्यता दिलाने की अलग जगाई गई.

विदेश राज्यमंत्री प्रनीत कौर ने नौंवे विश्व हिन्दी सम्मेलन के समापन अवसर पर कहा कि भले ही नौवां विश्व हिंदी सम्मेलन सम्पन्न हो गया लेकिन हमारा काम अभी पूरा नहीं हुआ है. उन्होंने कहा कि यात्रा को एक पड़ाव ही पूरा हुआ है और आगे की यात्रा तो अब शुरू हुई है.

ये कथन इस बात का संकेत है कि हिन्दी के लिए समुद्र मंथन जैसा प्रयास अभी भी जारी है. आजादी के पूर्व के आन्दोलनों व प्रयासों की मशाल आजादी के बाद भी जलती रही. आज़ाद भारत की नई सोच के साथ भारतवर्ष के लिए स्वाभिमान की सोच विकसित हुई कि एक भाषा, एक लिपि आदि जरूरी है. हालाँकि हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने की कवायद को कुछ तथाकथित राजनेताओं, क्षेत्रीय क्षत्रपों व

क्षेत्रीय सोच ने आगे बढ़ने नहीं दिया. संविधान के पन्नों पर अनुच्छेद ३४३ से ३५२ तक राजभाषा हिन्दी की स्थापना के व उसके सुदीर्घ जीवन के लिए कई महत्वपूर्ण प्रयास किए गए. राजभाषा के लिए मार्ग इतना आसान नहीं था, उसे अंग्रेजी की बेड़ियों से बाँधने का प्रयास अनवरत् चलता रहा. बस एक सच्चाई यह है कि गुलामी का यह प्रयास हममें हीन भावना नहीं भर पाया बल्कि एक अद्‌भुत साहस व स्वाभिमान के साथ हिन्दी प्रेमी अपनी मंजिल के लिए जुटे रहे. आचार्य नरेन्द्रदेव, राजर्षि टंडन, का.मा.मुंशी जैसे राजनेताओं के साथ-साथ प्रकाण्ड साहित्यकार अपनी पत्र-पत्रिकाओं व पुस्तकों के माध्यम से लगातार प्रयत्नशील रहे. वहीं सरकार ने हिन्दी के लिए त्रिभाषा सूत्र, विभिन्न अधिनियम व संसोधित अधिनियम, आयोगों का गठन किया व उसकी सोच को विकसित करने के लिए निरन्तर प्रयास किया. राष्ट्रभाषा प्रचार संस्था वर्धा का योगदान भी अनुपम है. वहीं हिन्दी विश्वविद्यालय ने अपने प्रयासों से हिन्दी के दीप को आलोकित किया है.

इस संदर्भ में हिन्दी फिल्मों व टेलीविजन के सहयोग को भी भुलाया नहीं जा सकता, जिसके डायलाग चलते फिरते घर की चहारदीवारी को फाँदकर समाज व राष्ट्र में धूम मचा रहे हैं. क्या उत्तर क्या दक्षिण सारा भेद इन माध्यमों ने समाप्त कर दिया. एक और अद्‌भुत व अनुपमेय सोच यह है कि सम्पूर्ण देश की सोच रखने वाला कभी भी हिन्दी के मोहपाश से मुक्त नहीं हो सकता. और इस प्रयास में सफल होते मैंने पूर्व चुनाव आयुक्त जी.वी.जी. कृष्णमूर्ति के धाराप्रवाह सम्बोधन को शिक्षक दिवस के अवसर पर दिल्ली में सुना तो दंग रह गया. इतना प्रेम व अनुराग बिरले लोगों में ही देखने को मिलता है. उच्चारण की कोई झिझक नहीं बस हिन्दी के प्रति बेवाक प्रेम बरस रहा था. कमोवेश आज हर हिन्दुस्तानी से हिन्दी भाषा व प्रेमियों की यही गुहार है.

आज के परिवेश में जब विश्वस्तर पर हिन्दी की मान्यता बढ़ी है, जब विश्वस्तर पर अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलनों का सफल आयोजन किया जा रहा हो, जब संयुक्त राष्ट्र की पाँच आधिकारिक भाषाओं के बीच हिन्दी को स्थान दिलाने की कवायद की बात चल रही हो, विदेशी राष्ट्राध्यक्षों के मुख से भी हिन्दी शब्द उच्चरित हो रहे हों, जब संसार की दूसरी अधिक बोले जाने वाली भाषा के रूप में शुमार हो, जब यहाँ के कवियों-लेखकों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिल रही, जब प्रेमचन्द, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत, जयशंकर प्रसाद व महादेवी की तुलना संसार के प्रतिष्ठित साहित्यकारों से की जा रही हो, जब हिन्दी गाने, धुन व फिल्में किसी अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता, समारोह की पहचान व ऑस्कर जैसे पुरस्कारों का स्वाद चख रहे हों,

हिन्दी फिल्मों व टेलीविजन के सहयोग को भी भुलाया नहीं जा सकता, जिसके डायलाग चलते फिरते घर की चहारदीवारी को फाँदकर समाज व राष्ट्र में धूम मचा रहे हैं. क्या उत्तर क्या दक्षिण सारा भेद इन माध्यमों ने समाप्त कर दिया.

जब वालीवुड का रुख हिन्दी फिल्मों की तरफ हो रहा है, जब विशेषकर साउथ की फिल्में हिन्दी में रूपान्तरित होकर अपनी अलग पहचान बना रही हैं, जब हिन्दुस्तानी बाला अंतरिक्ष में चहलकदमी कर रही हो, जब हिन्दी पर बलिदान होने के लिए फादर कामिल बुल्के व एनी बेसेन्ट जैसे विदेशी अपनी सरजमीं छोड़ दें, हिन्दी बोलते हुए अमिताभ बच्चन व क्रिकेटर सिद्धू हिन्दुस्तानियों के आदर्श बन जाएँ, जब हिन्दी फिल्मों के डायलाग हर जुबां पर जुंबिश करने लगे, जब हमारे नेता शौक से हिन्दी के साथ-साथ अपनी क्षेत्रीय भाषाओं को उच्चरित करने लगें, जब अंग्रेजी पृष्ठभूमि में पली-बढ़ी अदाकारा हिन्दी फिल्मों की ओर रुख कर दें, जब देशभर के संगीतकार, कलाकार हिन्दी गाने की विभिन्न प्रतियोगिताओं में शामिल होने व जीतने के लिए अपना सर्वस्व दाँव पर लगा दें तो यह सब हिन्दी के चरम उत्कर्ष की ही बात कर रहे हैं, अन्यथा ये सब बातें किसी डूबते सितारे की किस्मत में थोड़े ही होता है. भाषा के सम्बन्ध में हमारे आस-पास कुछ-कुछ अच्छा न दिखाई देने वाली घटनाएँ घट रही हों या फिर राजनीतिक कारणवश क्षेत्रीयता को लेकर हिन्दी का विरोध हो रहा हो, तब भी हमें हिन्दी के अस्तित्व को लेकर विचलित होने की जरूरत नहीं है. इस संदर्भ में निम्न श्लोक प्रासंगिक है :

अथः पश्यसि किं वृद्धे पतितं तव किं भुवि।
रे रे मूर्ख न जानासि गतं तारुण्यंमौक्तिकम।।

अर्थात् - किसी अत्यन्त बूढ़ी स्त्री को, जिसकी कमर बुढ़ापे के कारण झुक गई हो, देखकर कोई युवक उससे व्यंग्य करते हुए पूछता है- हे वृद्धे! नीचे क्या ढूँढ़ रही हो, क्या पृथ्वी पर तेरी कोई चीज खो गई है, तुम्हारा कुछ खो तो नहीं गया? उस व्यंग्य को सुनकर बूढ़ी औरत कहती है कि अरे मूर्ख तू नहीं जानता कि मेरा यौवनरूपी मोती खो गया है, मैं उसी को ढूँढ़ रही हूँ.

इस श्लोक को पढ़कर लगता है कि जो लोग हिन्दी भाषा को लेकर हाय तौबा मचा रहे हैं, उन्हें हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि हिन्दी राजमाता है, देश की धड़कन है. उसे कोई भला क्या मिटा सकता है, बस परिस्थितियोंवश कुछ बादल सामने आ जाते हैं, चमक फीकी करने के लिए. ■

बीनू भटनागर

४ सितम्बर १९४७ को बुलन्दशहर में जन्म. लखनऊ विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में एम.ए. की उपाधि. हिन्दी साहित्य में हमेशा से रुचि रही, लेकिन रचनात्मक लेखन देर से आरंभ किया. नामी पत्र-पत्रिकाओं में कवितायें, आलेख आदि प्रकाशित.

सम्पर्क : ए-१०४, अभियन्त अपार्टमेन्ट, वसुन्धरा एनक्लेव, दिल्ली-११००९६ ईमेल : binu.bhatnagar@gmail.com

तू, तुम, आप, मैं, हम, वह और वे

'तू' 'तुम', 'आप', 'मैं' और 'हम' ये सब सर्वनाम हैं ये तो हम सभी जानते हैं. हिन्दी भाषा मे इनके प्रयोग अलग-अलग तरीके से होते हैं. पहले 'तू', 'तुम' और 'आप' पर चर्चा कर लेते हैं. ये दूसरे पुरुष के सर्वनाम हैं, जो बात सुनने वाले के लिये प्रयुक्त होते हैं या जिनको संबोधित करके बात की जाती है उनके लिये प्रयुक्त होते हैं. अब इंगलिश मे केवल 'यू' (you) होता है, पंजाबी में 'तुसी' और बांग्ला 'तुमि'. 'तू', 'तुम' और 'आप' के प्रयोग का भी बहुत सुनिश्चित आधार नहीं है. 'तू' प्यार से भी कहा जा सकता है और किसी की भर्त्सना या प्रताड़ना के लिये भी. 'तू' में आत्मीयता है, तो आदर नहीं है, यदि आदर कम है या नहीं है तो लोग भगवान को या कभी-कभी माता-पिता तक को 'तू' कहकर क्यों संबोधित करते हैं? संभवतः 'तू' के अपनेपन के कारण. परन्तु अनजान व्यक्ति को 'तू' क्या, 'तुम' का संबोधन भी अनादर लग सकता है. है न कितनी घुमावदार बात!

हर रिश्ते की मर्यादा के अनुसार 'तू', 'तुम' और 'आप' का प्रयोग करना पड़ता है, इसके लिये कोई नियम नहीं है. दोस्त और भाई-बहन 'तुम' या 'तू' भी एक-दूसरे से कहते हैं पर बड़े भाई बहन को 'आप' भी कहा जा सकता है. कुछ पति-पत्नि एक दूसरे से 'आप' कहकर बात करते हैं कुछ 'तुम' कहकर. माता-पिता को भी 'आप' और 'तू' दोनों का संबोधन करने वाले लोग मिलते हैं. कभी-कभी लोग अपने से छोटों को क्या अपने बच्चों से भी 'आप' कह कर बात करते हैं. इस चर्चा का यही निष्कर्ष निकला कि आत्मीय रिश्तों में 'तू', 'तुम' और 'आप' किसी का भी प्रयोग किया जा सकता है जो जिसको अच्छा लगे कहा जा सकता है.

औपचारिक संबंधों में जैसे शिक्षक, डॉक्टर या कोई और व्यक्ति हो चाहे बड़ा हो या छोटा 'आप' ही कहना सही है. अनजान लोगों से भी आप ही कहना चाहिये, बेशक उम्र मे बहुत बड़े लोग छोटो से 'तुम' कह सकते हैं पर 'तू' का प्रयोग वांछनीय नहीं है.

'तू', 'तुम' और 'आप' की बात यहीं समाप्त नहीं हो जाती, क्योंकि इन तीनों सर्वनामों के साथ क्रिया और सहायक क्रिया के रूप भी बदल जाते हैं जैसे **तू जा रहा है, तुम जा रहे हो, आप जा रहे हैं.** अक्सर लोग आप के साथ ग़लत क्रिया लगा देते हैं. **आप जा रहे हो, आप खालो, आप दे दो, आप कब आओगे?** व्याकरण की दृष्टि से सही नहीं हैं ये सारी क्रियायें और सहायक क्रियायें 'तुम' के साथ सही बैठती हैं. आप के साथ **आप जा रहे हैं, आप खा लीजिये, आप दे दीजिये, आप कब आयेंगे?** होना चाहिये. यह ग़लती इतनी आम है, खासकर दिल्ली और आसपास के पंजाबी से प्रभावित इलाकों में कि अब ये दोष दोष न रहकर स्थानीय विशेषता का रूप ले चुका है. जो त्रुटि इतनी अधिक हो कि वह लोगों को त्रुटि लगे ही नहीं तो उसे उस क्षेत्र की विशेषता मान लेने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है, फिर भी हिन्दी के मानक रूप, खड़ी बोली के अनुसार यह त्रुटि तो है.

> *'तू' प्यार से भी कहा जा सकता है और किसी की भर्त्सना या प्रताड़ना के लिये भी. 'तू' में आत्मीयता है, तो आदर नहीं है, यदि आदर कम है या नहीं है तो लोग भगवान को या कभी-कभी माता-पिता तक को 'तू' कहकर क्यों संबोधित करते हैं?*

दूसरे पुरुष के सर्वनामों के बाद अब प्रथम पुरुष के सर्वनाम 'मैं' और 'हम' की बात करते हैं, ये सर्वनाम बात को कहने वाला व्यक्ति स्वयं के लिये प्रयुक्त करता है. 'मैं' एक वचन है और 'हम' बहुवचन. 'मैं' में कहने वाले के साथ कोई नहीं होता, पर 'हम' से लगता है कि जो व्यक्ति बात कर रहा है उसके साथ कुछ और भी लोग हैं, जैसे **मैं कल मुंबई जा रहा हूँ** मतलब कहने वाला ही केवल जा रहा है. **हम कल मुंबई जा रहे हैं** से लगता है कि कहने वाले के अलावा भी उसके साथ कुछ और लोग मुंबई जा रहे हैं.

'मैं' और 'हम' के प्रयोग की बात इतनी साधारण भी नहीं है. कई लोग अकेले ख़ुद यानि एक वचन के लिये भी 'हम' का प्रयोग करते हैं. 'मैं' के लिये 'हम' कहने का प्रचलन लखनऊ, इलाहाबाद और आसपास के इलाकों में अधिक है. वहाँ की स्थानीय बोलियों में भी 'मैं' है ही नहीं 'हमार', 'हमरा', 'हमहुं' प्रचलित सर्वनाम हैं, इसलिये खड़ी बोली बोलते समय भी 'मैं' को 'हम' कहने का प्रचलन है. 'हम' कहने के पीछे एक तर्क ये दिया जाता है कि 'मैं' कहने से अहम् की भावना जुड़ जाती है, संभव है कुछ लोगों को ऐसा लगता हो पर खड़ी बोली के व्याकरण के अनुसार एक वचन के लिये 'मैं' ही सही सर्वनाम है. 'हम' का प्रयोग कई लोग साथ होने का भ्रम पैदा करता है और 'मैं' का वज़न बेवजह बढ़ाता है जैसे कोई राजकुमार हो और उसके पीछे २-४ लोग और चल रहे हों. 'मैं' और 'हम' भी इतने अधिक लोग कहते हैं कि वह भी स्थानीय भाषा की विशेषता बन चुका है, परन्तु बार-बार दोहराने से ग़लत सही नहीं हो जाता, अतः एकवचन के लिये 'मैं' और बहुवचन के लिये 'हम' का प्रयोग ही व्याकरण की दृष्टि से सही है.

मैं के स्थान पर हम कहना व्यंगात्मक शैली को प्रभावशाली अवश्य बनाता है, जबकि व्यंग ख़ुद पर किया गया हो एक उदाहरण : **हमने अपनी आत्मकथा... अरे कैसी आत्मकथा, आत्मकथा तो बड़े बड़े लोग लिखते हैं. यह तो आत्मव्यथा है. हम तो एक मामूली-सी गृहणी हैं, हमारी व्यथा हो या कथा क्या फ़र्क पड़ता है.**

इस व्यंगात्मक शैली में यदि 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग नहीं होता तो व्यंग इतना उभर कर नहीं आ पाता.

तीसरे पुरुष के सर्वनाम अर्थात बोलने और सुनने वाले के अतिरिक्त किसी तीसरे व्यक्ति के लिये प्रयुक्त होते हैं 'वह' और 'वो' का प्रयोग क्रमशः एकवचन और बहुवचन के लिये होता है. यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि एकवचन के स्थान पर आदर देने के लिये सदैव बहुवचन का प्रयोग किया जाता है. जैसे 'वह कल आ रहा है.' किसी अपने से छोटी आयु के व्यक्ति के लिये उचित है परन्तु यदि आने वाला कोई बुज़ुर्ग है और उन्हे आदर देना है तो 'वह आ रहा है.' के स्थान पर 'वो आ रहे हैं.' कहना सही है. यह त्रुटि ज्यादा नहीं होती फिर भी ध्यान रखना ज़रूरी है. इन छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखने से भाषा सभ्य और सुसंसकृत हो जाती है.■

60 MILLION
CHILDREN IN INDIA
have no means to go to school

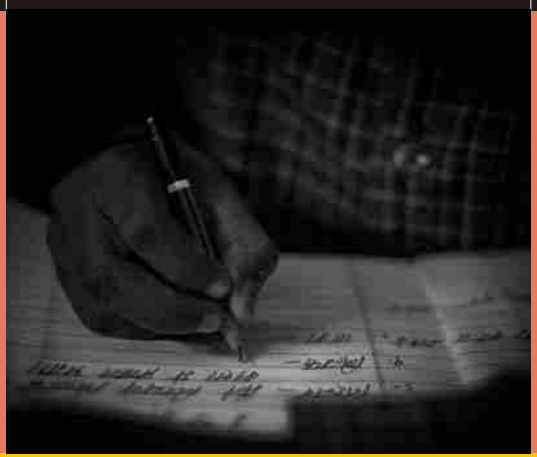

Contribute just Rs. 2750*
and send one child to school
for a whole year

Central & General Query
info@smilefoundationindia.org
http://www.smilefoundationindia.org/contactus.htm

गर्भनाल द्वारा जनहित में जारी

डॉ. मयंक रावत
आगरा में जन्म. सूक्ष्म जीवाणु विज्ञान में पी.एच-डी., विभिन्न वैज्ञानिक पत्रिकाओं में शोध पत्र प्रकाशित. राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर में दस वर्ष तक शिक्षण कार्य. सम्प्रति - भारतीय पशु चिकित्सा विज्ञान संस्थान बरेली में वरिष्ठ वैज्ञानिक.
सम्पर्क : mayankvet9@gmail.com

आगरा से नियाग्रा तक

शब्द उद्गम व साम्य की खोज, वर्ग पहेलियां व सूडोकू हल करने के समान ही मनोरंजक होती हैं. अंग्रेजी भाषा में इस प्रक्रिया को परिभाषित करने के लिये 'एटायमॉलॉजी (Etymology), मेटाथीसिस (Metathesis) तथा फायलोलॉजी (Philology) शब्द हैं. संस्कृत भाषा में इसके लिये निरुक्त शब्द का उपयोग होता है. यहां यह उल्लेख करना रोचक होगा कि 'एटायमॉलॉजी' स्वयं दो संस्कृत शब्दों 'आत्म' व 'लग' का व्युत्पन्न है.

विश्व की लगभग समस्त भाषाओं और बोलियों में ऐसे अनगिनत शब्द मिलते हैं जिनका उद्गम संस्कृत सिद्ध करने के लिये किसी विशेषज्ञता की आवश्यकता नहीं है. हिन्दी का अति सामान्य व संस्कृत का कामचलाऊ ज्ञान रखने वाला भी यह कर सकता है. उदाहरण के लिये शीर्षक में प्रयुक्त दोनों शब्द 'आगरा' व 'नियाग्रा' संस्कृत भाषाई ही हैं, क्यों दोनों एक ही अर्थ व भाव प्रेषित करते हैं एवं दोनों में ध्वन्यात्मक साम्यता है. परन्तु जहां एक ओर आगरा को संस्कृत-हिन्दी शब्द माना जाता है, वहीं नियाग्रा (एक नदी व झरने का नाम जो क्रमशः अमरीका व कनाडा में है) को संस्कृत के बजाय अनेकों भाषाओं और बोलियों से जोड़ा जाता है और शब्द के अनेकों उल्टे-सीधे अर्थ लगाए जाते हैं. एक सामान्य हिन्दी-संस्कृत ज्ञाता भी इन दोनों का सम्बन्ध कैसे सिद्ध कर सकता है, इसकी चर्चा में अन्त में करूंगा.

प्रचलित भाषाओं, विशेष रूप से रोजमर्रा बोले जाने वाले अंग्रेजी शब्दों का सामान्य विश्लेषण भी किया जाए, तो उनका संस्कृत भाषाई उद्गम सरलता से सिद्ध हो जाता है. परन्तु विचारणीय यह है कि ऑक्सफॉर्ड डिक्शनरी (दीक्षान्तरी), जिसके बारे में हमें यह बताया जाता है कि वह विश्व का सबसे विश्वसनीय शब्दकोश है, में उल्लिखित जानकारी इस सत्य को उजागर नहीं करती. वस्तुतः ऐसा प्रतीत होता है कि इस सत्य को बड़े परिश्रम से छुपाया जाता है. कारण, सीमित ज्ञान, आश्चर्य, अपने को मौलिक, विशिष्ट व विलक्षण सिद्ध करने की दुराग्रही प्रवृत्ति से लेकर राजनीतिक मजबूरियों और मिथ्या बौद्धिक दंभ तक कुछ भी और सभी हो सकते हैं. परन्तु जब यह ज्ञात होता है कि

> विश्व की लगभग समस्त भाषाओं और बोलियों में ऐसे अनगिनत शब्द मिलते हैं जिनका उद्गम संस्कृत सिद्ध करने के लिये किसी विशेषज्ञता की आवश्यकता नहीं है.

अंग्रेजों ने सन् १८०० के प्रारंभ में ऑक्सफॉर्ड विश्वविद्यालय में एक प्रोफेसर के पद (बॉडन चेयर) का सृजन मात्र वेदों, हिन्दू धर्म व दर्शन के खण्डन के लिये ही किया था तथा जब मैकॉले जैसे साम्राज्यवादी अहंकारी का वह भाषण (१८३५) याद आता है जिसमें अन्य मिथ्यावादों के अतिरिक्त यह भी कहा था कि 'भारत में प्रचलित बोलियां न तो साहित्यिक हैं और न ही कोई वैज्ञानिक जानकारी देती हैं तथा वे इतनी घटिया व अनगढ़ हैं कि जब तक उन्हें किसी अन्य स्थान की भाषा (अंग्रेजी) से समृद्ध व परिष्कृत नहीं किया जाता, किसी महत्वपूर्ण रचना का अनुवाद इनमें संभव नहीं हैं; तब शब्द

साम्य की खोज मात्र एक स्वाध्यायी मनोरंजन का साधन नहीं रह जाती. उस अवस्था में आवश्यकता महसूस होती है कि विश्व को यह बताया जाय कि भारतीय भाषाओं की चिन्ता करने वाला मैकॉले, जो भाषा स्वयं बोल रहा था, वह तो प्रारंभ से ही अपनी समृद्धि के लिये संस्कृत पर ही निर्भर रही है.

ऐसा नहीं लगता कि अंग्रेजी में संस्कृत शब्दों की भरमार स्वाभाविक रूप से हुई होगी. यह शताब्दियों तक अंग्रेजी भाषाविदों द्वारा जानबूझ कर परिश्रम-पूर्वक की गई हेरा-फेरी का फल है, जिसे हम 'प्लैगियेरिज्म' कहते हैं. एक ओर जहां अपनी इस हेरा-फेरी को छुपाने के उद्देश्य से लगभग सभी अंग्रेजी शब्दों का उद्गम डिक्शनरी में लैटिन, ग्रीक, इटैलियन, स्कैण्डिनेवियन, फ्रेंच, Old English और न जाने कौन-कौन सी स्थानीय बोलियों (Dialects) के जंगल में तिमिराछन्न कर दिया गया है, तो दूसरी ओर अपने आपको ईमानदार व मौलिक सृजनशील दिखाने के उद्देश्य से मात्र कुछ अंग्रेजी शब्दों का उद्गम संस्कृत-हिन्दी घोषित करने की कुटिलता भी की गई है. इस तथ्य को सिद्ध करने के लिये अनेकों संस्कृत-अंग्रेजी शब्दों के उदाहरण लिये जा सकते हैं. परन्तु बात जब कुटिलता की चल रही हो तो आरंभ यहीं से करना रोचक होगा.

'कुटिल' से कुटिलता : चौथी-पांचवी सदी में भारत में एक लिपि का विकास हुआ था जिसमें अक्षरों को तिरछा लिखा जाता था. तिरछेपन के कारण यह सर्वसाधारण द्वारा पढ़ी नहीं जा सकती थी. इसको कुटिल लिपि कहा गया. अंग्रेजी में भी तिरछे अक्षर लिखे जाते हैं. इन तिरछे अक्षरों को Italic (इटैलिक) कहा जाता है. 'कुटिल व Italic' की ध्वन्यात्मक समानता पर ध्यान दें. वास्तव में Italic कुटिल में की गयी वर्णात्मक व ध्वन्यात्मक हेराफेरी (Jumbling) मात्र है, जो मानव बुद्धि द्वारा प्रयत्नपूर्वक की गई है. हमारी विश्वप्रसिद्ध डिक्शनरी Italic को ग्रीक उद्गम का घोषित करती है और बड़े आश्चर्यजनक रूप से इस शब्द का अर्थ Italian बताती है. यह प्रश्न गौण है कि कुटिल का Italian से क्या सम्बन्ध हो सकता है, परन्तु इस तथ्य की पूरी संभावना है कि Italics शब्द का उद्गम संस्कृत शब्द कुटिल है. वैसे, संस्कृत शब्द कूट से एक अन्य अंग्रेजी शब्द Code सीधे भी लिया गया है और उसका उद्गम Codex लैटिन घोषित कर दिया गया है. इस शब्द के अर्थ को निरर्थक ही 'लकड़ी का लट्ठा' मान लिया गया है. Codex का वास्तविक भावार्थ माप अथवा मानक दण्ड होना चाहिए. जैसे एक फुट/गज/मीटर नापने के लिये मानकीकृत (Standard) दण्ड उपलब्ध होते हैं, चाहे वह लकड़ी के लट्ठे से बने हों या लोहे की छड़ से (लोहा/Ferrous के लिए एक संस्कृत शब्द अयन है जिससे

दो संस्कृत शब्दों को जोड़कर अनेक समानार्थी अंग्रेजी शब्द बनाये गये हैं, को भी समझना रोचक होगा. संस्कृत शब्द 'ट्रप्स' व 'गलः' का उदाहरण लें. 'ट्रप्स' का हिन्दी अर्थ टपकना है. अंग्रेजी में इससे सीधे-सीधे एक शब्द Drop बना लिया गया है.

अंग्रेजी शब्द आयरन बना है). वास्तव में अंग्रेजी शब्द Standard में 'दण्ड' समाहित ही है. Codex शब्द के उपयोग का एक उदाहरण British Veterinary Codex है. यह एक राजकीय प्रकाशन है, जिसमें पशु-चिकित्सकीय औषधियों से संबंधित मानक निर्धारित किए गए हैं.

एक अंग्रेजी शब्द Curve है जिसका उद्गम लैटिन शब्द Curvus माना गया है. परन्तु Curve अथवा Curvus को उल्टा कर के बोलिये. शब्दों का वास्तविक उद्गम वक्र तुरन्त स्पष्ट हो जायेगा. Curve से मिलता-जुलता एक शब्द Curvet भी है, जिसका उच्चारण Ker-vet की तरह किया जाता है. डिक्शनरी इसे Italian घोषित करती है तथा इसका अर्थ make an energetic leap मानती है. परन्तु यह स्पष्ट रूप से 'करवट' ही है, जिसका उद्गम संस्कृत शब्द 'कटवृत्ति' है तथा जिसका अर्थ कमर को यत्नपूर्वक घुमाना या करवट लेना ही है. संस्कृत शब्द को यत्नपूर्वक करवट दिलवाकर अंग्रेजी बना लिया गया.

एक अन्य प्रक्रिया, जिसमें दो संस्कृत शब्दों को जोड़कर अनेक समानार्थी अंग्रेजी शब्द बनाये गये हैं, को भी समझना रोचक होगा. संस्कृत शब्द 'ट्रप्स' व 'गलः' का उदाहरण लें. 'ट्रप्स' का हिन्दी अर्थ टपकना है. अंग्रेजी में इससे सीधे-सीधे एक शब्द Drop बना लिया गया है. थोड़ा और ध्यान दें तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि Tropics, Tropical o Tropism तथा उनसे सम्बन्धित अन्य शब्द जैसे Subtropic इत्यादि भी 'ट्रप्स' से ही बने हैं. इसी प्रकार 'गलः' शब्द का भाव चूना, गलना, धीरे-धीरे बहना इत्यादि हैं. 'ट्रप्स' व 'गल' की संधि करवा दीजिये और देखिये नया अंग्रेजी शब्द Trickle, जिसका भाव वही है, परन्तु जिसका उद्गम डिक्शनरी में अज्ञात मान लिया गया है.

इसी क्रम में हम एक अंग्रेजी शब्द Entamoeba (एक प्रकार का एककोशीय जन्तु जो आँतों में अमीबॉयसिस नाम की बीमारी करता है) और भी ले सकते हैं. अंग्रेजी शब्द Entrails. स्पष्ट रूप से संस्कृत शब्द 'ऑत्रल' (ऑत) ही है. (यद्यपि डिक्शनरी में इस लैटिन दर्शाया गया है. मूल लैटिन शब्द का अर्थ internal things माना गया है, परन्तु अंग्रेजी में इसका अर्थ Inestine ही है). 'आम' एक संस्कृत शब्द है

जिसका अर्थ अजीर्णता, ऑव व अन्य पेट के रोगों से है. संस्कृत शब्द ऑत्र (Ent) व 'आम' (Am) को जोड़ लीजिये. अर्थात, जो ऑत्र में आम रोग पैदा करे वह Entamoeba. एक उदाहरण शब्द रेडियो (Radio) का भी है. संस्कृत शब्द 'रव' का अर्थ शोर, कोलाहल, वाणी इत्यादि होता है. एक दूसरा संस्कृत शब्द 'द्यु' है जिसका अर्थ आकाश होता है. इन दोनों की संधि करवा दीजिये. रव तथा द्यु अंग्रेजी शब्द रेडियो के उद्गम हैं. रेडियो-अर्थात आकाशवाणी.

झींगुर और तिलचट्टा (तिलकट्टा अर्थात जो शीशम की लकड़ी को भी काट अथवा चाट ले) के लिये प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों Cricket व Cockroach का भाषाई उद्गम कैसे हो सकता है, यह जानना भी अत्यन्त रुचिकर होगा. झींगुर तथा तिलचटटा दोनों ही 'कुतरने-खाने' वाले जन्तु हैं, जो अपनी तीक्ष्ण तथा 'कर्कश' ध्वनि के कारण भी पहचाने जाते हैं. कुछ अन्य हिन्दी शब्द 'झींकना', चिकचिक करना व झिकझिक करना भी शायद झींगुर से ही संबंधित है. अब तीन संस्कृत शब्दों 'क्रकच' 'क्राकचिक' तथा 'कर्कश' पर ध्यान दें तथा अंग्रेजी शब्दों Cricket तथा Cockroach से इन की तुलना करें. स्थिति तुरन्त स्पष्ट हो जाएगी. क्रकच व क्राकचिक शब्दों के निहितार्थ क्रमशः 'आरा' चलाने वाला' तथा 'आरा' होते हैं. आरे से लकड़ी काटने/कुतरने से होने वाली ध्वनि बड़ी कर्कश होती है. हमारी विश्वसनीय डिक्शनरी Cockroach शब्द का उद्गम स्पैनिश (Curcaracha) घोषित करती है. यदि अंग्रेजी शब्दों Screech, Scream का उद्गम ज्ञात करना हो तो पाठक स्वयं ही इन्हीं संस्कृत शब्दों में ढूँढ सकते हैं. बात जब झींगुर की चल रही हो तो मच्छर-मक्खी भी क्यों छोड़े जायें. एक संस्कृत शब्द 'मशक' है, जिसका भाव उड़ने-भिनभिनाने वाला जन्तु होता है. Mosquito (मस्क्यूटो) इसी संस्कृत शब्द से लिया गया है. इसी प्रकार घरेलू मक्खी का वैज्ञानिक नाम Muska domestica है. यह दोनों शब्द भी संस्कृत उद्गम के हैं-Muska (मशक) तथा Domestica (धाम-घर). वैसे मक्खी के लिये एक अन्य संस्कृत शब्द 'मक्षिका' भी है.

एक अंग्रेजी शब्द है- Bore. इसके अनेक भावार्थ हैं. Bore होना यानि कि मनुष्य के सामान्य मानसिक व्यवहार में कुछ परिवर्तन होना, तथा Bore (जब यह Bear तथा इसके भूतकाल के रूप में प्रयुक्त होता है), का भावार्थ पेड़-पौधों का फल फूलना है. अब एक संस्कृत शब्द 'बौर' पर ध्यान दीजिये. बौराना का एक अर्थ मनुष्य की मानसिक अवस्था में परिवर्तन होता है, तथा दूसरा, आम के पेड़ों पर फूल आना.

ये कुछ उदाहरण हैं, जो संकेत करने के लिये पर्याप्त हैं कि अंग्रेजी भाषा में संस्कृत शब्दों की बहुलता का कारण मानव-बुद्धि का परिश्रम है. परन्तु इसमें मौलिकता अथवा विलक्षणता कुछ भी नहीं है. यह सब बौद्धिक हेरा-फेरी के अतिरिक्त कुछ नहीं कहा जा सकता. मात्र थोड़ी सी विवेचना व विश्लेषण से बहुप्रचारित विश्वसनीय डिक्शनरी मिथ्यावाद (Mythology) की श्रेणी में आ जाती है. जो पश्चिमी सभ्यता भारतीय वैदिक संस्कृति, ऐतिहासिक ग्रंथों, साहित्य, ज्ञान-विज्ञान को मिथ्या घोषित करने के लिये अपने विश्वविद्यालयों में प्रोफेसरों को ईनाम बाँट रही थी, वह उसी के संस्कृत साहित्य से परिष्कृत हुई थी. परन्तु चोरी से. और बुद्धिमान मिथ्यावादियों का चरित्र-व्यवहार (Behavior) शोर मचाना होता है.

चरित्र-Character-किरदार

मातृ (Mother); पितृ (Father); भ्राता (Brother); दुहितर (Daughter); सुनुः (Son); अहम् (I, am); त्वम, युवाम (You); वयम् (We); सः, साः (We, She); तौ, ते (They); भव (Be); उन (One); द्वौ (Two); त्रि (Three); चत्वारि (Four); पंच/पंज (Five, Penta, Punch); षट् (Six, Hexa); सप्तम (Seven, Hepta); अष्टम (Eight, Octa); नवम (Nine); दशम् (Deci, Ten); क्रमेल (Camel); गौ, गऊ (Cow); ऊक्षस (Ox); बलद् (Bull); मूशकः (Mouse); उलूक (Owl); शूकर (Swine); यस्तनदिवस (Yesterday); नियर (Near); दूर्वा/दूर्भ (Truf); राग (Rage); कोहल (चावल की शराब) (Alcohol); ताबूवं (Taboo तौबा); होरा (Hour); नाक्तम् (Night); विष्ठा (Waist); जिह्वा (Lingua); मॉसम्/मॉसल (Muscle); इत्यादि अनेकों ऐसे अंग्रेजी शब्द हैं, जिनका संस्कृत भाषाई उद्गम लगभग सभी जानते हैं. परन्तु इस श्रृंखला का यहीं अन्त नहीं होता. मानवीय जीवन के किसी भी क्षेत्र के लिए प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द अधिकतर संस्कृत शब्दों के विकृतीकरण हैं. आइये कुछ वैज्ञानिक, विशेषरूप से चिकित्सा विज्ञान से सम्बन्धित शब्दों का विश्लेषण और करें.

सर्वप्रथम Heart, जिसके बारे में हमारी विश्वसनीय डिक्शनरी में लिखा है कि इस शब्द का उद्गम पुराने अंग्रेजी शब्द (Old Engish) से है, को लीजिये. शरीर के इस अवयव की प्राचीन परिभाषा पर ध्यान दीजिये :

हरतेर्ददातेरेते इति हृदय : अर्थात, जो आहरण और

"अंग्रेजी भाषा में संस्कृत शब्दों की बहुलता का कारण मानव-बुद्धि का परिश्रम है. परन्तु इसमें मौलिकता अथवा विलक्षणता कुछ भी नहीं है. यह सब बौद्धिक हेरा-फेरी के अतिरिक्त कुछ नहीं कहा जा सकता."

वितरण का कार्य करता है वह हृदय है. यद्यपि हृदय की क्रिया प्रणाली का इतना अधिक स्पष्ट व वैज्ञानिक वर्णन शायद ही कहीं उपलब्ध हो, पश्चिमी विद्वान हमें विश्वास दिलाते हैं कि मानव हृदय व परिसंचरण तंत्र की 'खोज' विलियम हार्वे ने मात्र कोई १००-२०० वर्ष पूर्व की थी. अब हृदय, हार्दिक आदि शब्दों की तुलना प्रचलित अंग्रेजी शब्दों Heart, Hearty इत्यादि से करें. संस्कृत व अंग्रेजी शब्दों के बीच इतनी अधिक ध्वन्यात्मक समानता मात्र संयोग नहीं है. Heart निश्चित रूप से हृत-हृदय का ही विकृत रूप है.

एलोपैथिक चिकित्सा विज्ञान में Heart के अनेक समानार्थी शब्द-Cardiac, Cardiology, Cardiograph, Cardiogram, Cardiologist इत्यादि और भी प्रचलित हैं. ये सभी मूल संस्कृत शब्दों हृदय-हार्दिक आदि में की गयी ध्वन्यात्मक (Phonetic-भावनात्मक) हेरा-फेरी मात्र हैं. थोड़े विश्लेषण से यह हेरा-फेरी कैसे हुयी होगी स्पष्ट हो जायेगा. सर्वविदित है कि अंग्रेजी भाषा में वर्ण C का उच्चारण कई प्रकार से होता है. Cat o Call में यह 'क' (K) की तरह, Cigar व Centre (केन्द्र) में यह 'स' (S) की तरह बोला जाता है. यदि C के साथ H लगा हो (अथवा नहीं भी हो) तो वह 'च' (Chain, Child), 'क' (Character) अथवा श/ष (Chauvinism) की तरह बोला जा सकता है. अतः Character शब्द का उच्चारण 'चरक्तर' भी हो सकता है, जो स्पष्टतया अपने मूल संस्कृत शब्द 'चरित्र' का अशुद्ध रूप होगा. फारसी भाषा में इसका एक और विकृत रूप किरदार बोला जाता है. इसी प्रकार Cardiac शब्द का उच्चारण सार्डिक/सार्दिक भी हो सकता है. यह भी ज्ञातव्य है कि हिन्दी, अंग्रेजी व बहुत सी अन्य बोलियों में 'स' (S) को बहुधा 'ह' (H) भी बोला जाता है. जैसे, सप्तसिंधु को हफ्तहिन्दु, सप्ताह (सात दिन) को हफ्ता तथा असुरमेधा को अहुरमाज्दाह. इसी क्रम में यदि 'सार्दिक' के 'स' को 'ह' से बदल दें तो वह पुनः अपना शुद्ध रूप हार्दिक प्राप्त कर लेता है तथा मूल संस्कृत शब्द की यात्रा Heart/Hearty o Cardiac इत्यादि तक कैसे हुई होगी, यह भी ज्ञात हो जाता है. परन्तु यहाँ पर उल्लेख करना आवश्यक है कि हमारी विश्वप्रसिद्ध डिक्शनरी Cardiac शब्द का उद्गम बड़ी ही निष्पक्ष ईमानदारी का प्रदर्शन करते हुए ग्रीक भाषा के किसी शब्द Kardia को घोषित करती है, मानो कि यह ग्रीक भाषाविदों की मौलिक देन हो.

हृदय व हार्दिक से कुछ और संस्कृत शब्द भी बने हैं. जैसे सौहार्द, सौहार्द्य, सहृदय. अब जरा 'सौहार्द' के 'सौ' को Co (को) से बदल दीजिये, और देखिये अंग्रेजी शब्द Cohort. यद्यपि डिक्शनरी में Heart शब्द का उद्गम तो Old English घोषित किया गया है परन्तु किसी अज्ञात प्रक्रिया से वही डिक्शनरी Cohort शब्द को लैटिन भाषा का बना देती है. अंग्रेजी शब्दावली में सौहार्द/Cohort से मिलते जुलते शब्द और भी हैं- जैसे Coherent, Cohere, Cohesion, Cohesive. यह सभी एक ही भाव प्रकट करते हैं, यद्यपि इनके कुछ विशिष्ट अर्थ और भी हैं.

बात चूंकि 'स' 'क' 'ट' इत्यादि वर्णों की ध्वन्यात्मक हेरा-फेरी की चल रही है अतः कुछ संस्कृत शब्दों में 'स', 'क', 'श', 'ष', तथा 'घ' ध्वनियों व वर्णों की साधारण उलट-फेर से बने शब्दों के उदाहरण और लें, जिनकी की अंग्रेजी व अन्य भाषाओं में भरमार है.

Committee/Commune/Community/Communist के C (क) को 'स' बदल दें. इनका उद्गम 'समिति', 'समूह' व 'समूहनीति', समूहनिष्ठा', आदि संस्कृत शब्दों से स्वयं ही प्रकट हो जायेगा. अंग्रेजी शब्द Cocoon तथा Decimal संस्कृत शब्दों कौशून व 'दशमलव' की विकृतियाँ हैं. संस्कृत शब्द 'शत' से Cent (Century, Centimeter) इत्यादि बने हैं. अंग्रेजी शब्द Cide, Cidal इत्यादि, जिनका अर्थ मारने तथा मृत्यु से होता है (Homicide, Suicide, Patricide, Insecticide), वास्तव में संस्कृत शब्द 'छिद्' हैं (याद कीजिए नयनं छिन्दति शस्त्राणि). संस्कृत में मारने के लिये हत्, हन्ता, हन्तार शब्द भी हैं. (याद कीजिये अश्वत्थामा हतौ). Hurt, Hunter इत्यादि अंग्रेजी शब्द इन्हीं मूल शब्दों की विकृतियाँ हैं. इसी प्रकार मूल शब्द 'मृत्यु' से अनेक अंग्रेजी शब्द और भी बने हैं. Mortuary तथा Morgue समानार्थी हैं, जिनका उद्गम मृत्यु है. परन्तु डिक्शनरी Mortuary को लैटिन Mortyuus (मौर्त्यू) घोषित करती हैं तथा Morgue को फ्रेंच. मौत भी मृत्यु का अपभ्रंश ही है.

इसी प्रकार 'स' (S अथवा C) व 'ह' (त्त) के उलट-फेर से बनाये हुए अनेक शब्द भी अंग्रेजी व अन्य भाषाओं में अनुमान से अधिक संख्या में मिलते हैं. उदाहरण के लिये सर्प/सृप को लीजिए. यदि सर्प अथवा सृप के 'स' को 'ह' से बदल दें तो नया शब्द होगा- हर्प (Herp). लीजिए शुरू हो गई अंग्रेजी शब्दों की नयी श्रंखला. Herpetology (सर्प / लग/सरीसृपों से सम्बन्धित विज्ञान) Herpetic/Herpes (एक विषाणु जो

> *हृदय, हार्दिक आदि शब्दों की तुलना प्रचलित अंग्रेजी शब्दों Heart, Hearty इत्यादि से करें. संस्कृत व अंग्रेजी शब्दों के बीच इतनी अधिक ध्वन्यात्मक समानता मात्र संयोग नहीं है. Heart निश्चित रूप से हृत-हृदय का ही विकृत रूप है.*

> मस्तिष्क में पानी इकट्ठा होने वाले रोग को ऐलोपैथिक चिकित्सा शास्त्रीय शब्दावली में Hydrocephalus कहते हैं. यह स्पष्ट रूप से दो संस्कृत शब्दों का व्युत्पन्न है. आयुर्वेदिक शब्दावली में यह रोग 'आर्द्रकपालस' कहलाता है.

मानवों तथा पशुओं में तंत्रिकाओं के साथ रेंगता हुआ फैलता है), इत्यादि सभी शब्द इसी हेरा-फेरी के तो फल हैं. परन्तु डिक्शनरी में Herpes शब्द का उद्गम ग्रीक भाषा के Shingels शब्द को दर्शाया गया है. आश्चर्य होता है कि 'सर्प' से दो अंग्रेजी शब्द Serpent o Serpentine यथावत ले लिये गये हैं और किसी मायावी (Magical) प्रक्रिया से उन्हें लैटिन शब्द घोषित कर दिया गया है. वैसे तो Snake से 'स' को हटा कर बोला जाय तो वह स्वयं ही 'नाग' हो जाता है तथा अंग्रेजी शब्द Reptile 'स्वयं' ही घोषित कर देता है कि वह रपटने वाले जीवों का एक समूह है.

जब बात चलने-रपटने की हो रही है तो कुछ और शब्दों पर ध्यान दीजिये. गति, धारा, प्रवाह, प्रचालन, सरकने, रेगनें अथवा रपटने का भाव प्रकट करने के लिये संस्कृत में अनेक शब्द हैं. जैसे सरण, सरणशील, सरटि, सरट, सरणा, सरिण, संसार, सरित, सरसरी इत्यादि. इन मूल संस्कृत शब्दों के 'स' को 'क' (C) से बदल दीजिये. Current/Currency/ Cursor, Cursory इत्यादि सभी अंग्रेजी शब्द उसी उलट-फेर से ही तो बने हैं, तथा समभाव हैं. Cursory शब्द का भाव सरसरी दृष्टि से पढ़ना भी होता है. संस्कृत शब्द 'अग्रसर'/ अग्रसारित (अग्र / आगे / सर / चलाना/चलता हुआ) से अंग्रेजी शब्द Aggressor यथावत' ही ले लिया गया है, और लैटिन घोषित कर दिया गया है. आजकल का Car शब्द वैदिक है (महाभारत, उद्योग पर्व १५५/४-१२ तक). कार का अर्थ रथ भी होता है.

प्रासिच्यदत्कविः सिन्धोरूर्माविधिश्रित.
कारं विभ्रत्पुरूस्पृहम् (ऋ.८/१४/१)

नदी या समुद्र तरंग पर स्थित क्रान्तदर्शी जनी शिल्पी स्पृहणीय 'कार' को लहरों पर धारण करता हुआ सब ओर चलता है.

जब कार की बात चली रही हो तो 'ड्राईवर' कैसे अछूता रहा सकता है. गति प्रदान करने, चलाने, भगाने, प्रवाहित करने (बहाने), खदेड़ने, धकेलने आदि का भाव प्रकट करने के लिये संस्कृत शब्द विद्रवणम् एवं द्रावणम् हैं. विद्रवणम् से 'वि' को विलुप्त कर दें. अंग्रेजी शब्द Drive/Driver आदि तुरंत प्रकट हो जायेंगे, जिनका उदगम् हमारी डिक्शनरी Old English का बताती है. एक बड़ा ही सुन्दर शब्द है 'सारथी'. यह एक ही शब्द गतिवान होने, रथ चालक व रथयात्री के बीच संबंध प्रदर्शित करता है. वर्तमान काल में जब 'कार' ज्यादा प्रचलित है, तो सारथी से नया शब्द 'कारथी' क्यों न बनाया जाए?

पशु चिकित्सा विज्ञान में कुछ रोगों का एक लक्षण 'लड़खड़ाती गति' होता है जिसे अंग्रेजी शब्दावली में Staggering gait कहते हैं. इन दोनों शब्दों का उद्गम हमारी डिक्शनरी में पुरानी नॉर्वे (Old Norvey) भाषा को दर्शाया गया है. परन्तु संस्कृत शब्द-कोशों में एक शब्द 'स्खलदगतित्व' मौजूद है जिसका अर्थ डगमागती गति/चाल है. यहाँ 'स्खलद' का साम्य Stagger तथा गति का साम्य Gait से होता है. स्पष्ट रूप से Staggering gait स्खलदगतित्व ही है.

क्या भूलूँ क्या याद करूँ

मस्तिष्क में पानी इकट्ठा होने वाले रोग को ऐलोपैथिक चिकित्सा शास्त्रीय शब्दावली में Hydrocephalus कहते हैं. यह स्पष्ट रूप से दो संस्कृत शब्दों का व्युत्पन्न है. आयुर्वेदिक शब्दावली में यह रोग 'आर्द्रकपालस' कहलाता है. आर्द्र शब्द नमीवली, जलीय, गीली वस्तुओं का द्योतक है, जिसका अंग्रेजी अपभ्रंश Hydro है. डिक्शनरी में Hydro का उद्गम ग्रीक शब्द हुद्र/हद्र बताया गया है जिसका 'आर्द्र' शब्द से अत्याधिक ध्वन्यात्मक साम्य है, तथा जिसका अर्थ जल है. Hydro के व्युत्पनों की एक लम्बी श्रंखला हमें मिलती है. जैसे-Hydrangea, Hudrant, Hydrocephalus, Hydrology, Hydrograph, Hydrometer, Hydrosphere, Hydrotheraphy, Hydrogen (आर्द्रलयन से जनित गैस) Hydroxide, Hydrophobia A Hydrophobia स्पष्ट रूप से दो संस्कृत शब्दों Hydro (आर्द्र) तथा Phobia (भय) का व्युत्पन्न है. यह संस्कृत शब्द आर्द्रभयता है. यह एक भयानक रोग है, जिसको तकनीकी शब्दावली में Rabies कहते हैं. रैबीज स्वयं एक संस्कृत शब्द 'रभस' का अपभ्रंश है. इसके अनेक अर्थ-उग्र, प्रचन्ड, भीषण, गहन, प्रबल, आतुर, क्रोधी, भयाक्रांत होते है. रभस का रोगी जल को देखते ही यह सभी मानसिक प्रतिक्रियाएं प्रदर्शित करता है, जिनको सम्मिलित रूप से पागलपन कहते हैं. यह रोग 'दंशक' के काटने से होता है. Dog इसी दशंक शब्द का टूटा-फूटा रूप है. इसके अतिरिक्त 'ड' (D) के स्थान पर 'ग' (G) बोले जाने पर भी अर्थ जलीय अथवा आर्द्र ही होता है. (याद कीजिए Mortuary तथा Morgue). Hygroscopic, Hygrometer (meter उ मात्रा) के मूल में भी शब्द आर्द्र ही है. डिक्शनरी हमको बताती है कि Hygro भी मूल ग्रीक शब्द ही है. इसी प्रकार, Cephalus 'स' (C) व 'क' (K/C) की हेरा-फेरी मात्र है. मूल शब्द 'कपालस', संस्कृत है, परन्तु

आश्चर्य है कि इसका उद्गम ग्रीक शब्द माना Keppal माना गया है. इसी शब्द के दूसरे व्युत्पन्न Cephalopod (वह जीव जिनके सिर व पद जुड़े रहते हैं- जैसे Octopus) व Cephalic (कापालिक) इत्यादि हैं. यदि शब्द Octupus को भी ध्यान से देखा जाय तो वह अपने संस्कृत भाषाई होने की घोषणा स्वयं कर देगा- Octo (अष्ट), pus (पद). यहाँ यह भी ज्ञात होना रोचक होगा कि अंग्रेजी शब्द Mood के मूल में भी संस्कृत शब्द मूर्ध्य, (मुण्ड, मूड) ही हैं. मस्तिष्क का एक भाग Cerebrum, स्पष्टतया संस्कृत शब्द 'शिरब्रह्म' है.

शल्यजन (Surgeon) चीराफाड़ी करने से पहले रोगी का Anesthesia देकर बेहोश अथवा सुन्न करते हैं. यह अंग्रेजी शब्द पूर्ण रूप से संस्कृत शब्द अनास्थशायी है, जिसका भाव बेहोश होना है. विश्व प्रसिद्व डिक्शनरी इसका उद्गम ग्रीक शब्द Anesthesia घोषित करती है, जिसका मतलब बेहोश होना है. शल्यजन उपचार की एक प्रक्रिया में घाव/सड़न इत्यादि की खुरच कर, छेद कर, खोद कर सफाई इत्यादि करते हैं. अंग्रेजी में इसके लिये शब्द है Curate. यह स्पष्ट रूप से हिन्दी शब्द कुरेद ही है, जिसका मूल संस्कृत शब्द रदः है. डिक्शनरी इसे लैटिन शब्द Curatus घोषित करती है. वह उपकरण जिससे यह उपचार किये जाते हैं (कुरेदनी), उसे भी न जाने क्यों Curate ही कहा जाता है. शल्यजन उपचार के पश्चात घाव की सिलाई भी करते हैं. यह Suture/Suturing कहलाती है. जिस धागे से suturing की जाती है उसे भी suture ही कहते हैं. सिलाई करने के लिये एक अंग्रेजी शब्द Sew भी है. इसका उच्चारण 'सो' किया जाता है (अज्ञात कारणों से) तथा डिक्शनरी इसे किसी Old English भाषा का घोषित करती है. इन सभी अंग्रेजी शब्दों के उद्गम संस्कृत शब्द 'स्यूतः' तथा 'सूत्र' हैं.

एक मानसिक रोग जिसमें व्यक्ति भूलने लगता है, को तकनीकी अंग्रेजी शब्दावली में Amnesia कहा जाता है. Amnesia तथा Amnesiak (उच्चारण-am-nee a-uh) ग्रीक भाषा के घोषित कर दिये गये हैं, तथा उनका अर्थ भुल्लकड़पन बताया गया है. यह दोनों संस्कृत शब्द अन्यमनस्क/अन्यमनस्कता' के विकृत रूप हैं. Amnesia से एक मिलता-जुलता शब्द Amnesty है जिसे भी डिक्शनरी ग्रीक Amnetia घोषित करती है तथा अर्थ 'भुल्लकड़पन'/भूलना बताती है. इसका भाव, राज्यादेश द्वारा दिया गया क्षमादान, अथवा ऐसा काल हैं जिसमें किये गये अपराध पर राज्य दण्डित न हीं करता (अन्यमनस्क हो जाता है) है. Amnesty का उद्गम भी संस्कृत शब्द अन्यमनस्कता' ही है.

Touch: त्वचा, Derm: चर्म

एक अंग्रेजी शब्द है-Touch. विवेचना करने पर बड़े ही अनपेक्षित रूप से इसका उद्गम संस्कृत शब्द 'त्वच' ज्ञात होता है, जिसका एक अर्थ स्पर्शानुभूति भी होता है. 'त्वच' से ही दूसरा शब्द 'त्वचा' बना है-यानि कि वह अवयव जिससे स्पर्शानुभूति होती है. त्वचा के लिये अंग्रेजी में एक शब्द Derm और भी है. यह भी संस्कृत शब्द 'चर्म' में की गई अक्षरों की हेरा-फेरी मात्र है.

भारतीय परम्परा के अनुसार न्याय वह है जो सब कुछ देखने-भालने के पश्चात ही किया जाए. फिर पता नहीं क्यों फिल्मों में न्याय की देवी की आँखों पर पट्टी बांध दी जाती है और कहा जाता है कि कानून अंधा होता है.

अंग्रेजी शब्द Mouth, संस्कृत शब्द मुख से लिया गया है. हिन्दी संस्कृत वर्णक्रम की बात करें, तो यह 'थ' व 'ख' की हेराफेरी है. ठीक वैसे ही जैसे 'शुष्क' विकृत हो कर 'खुश्क' हो जाता है. यदि अंग्रेजी Alphabets (अलिफ, बे, पे, ते) की बात करें तो यह मात्र t व k की हेराफेरी है-th के स्थान पर kh. वैसे Mouth का t छीन लिया जाए तो वह अपना सा मुँह लेकर रह जाता है. डिक्शनरी में इस शब्द को Old English का बताया गया है. नासिका, नासा व Nose की चर्चा करना व्यर्थ ही है. हाँ, 'अक्ष', इयाक्षी (अक्षि) आदि संस्कृत शब्दों से Eye बना है. एक संस्कृत शब्द 'न्याय' है. इसमें भी Eye समाहित है. भारतीय परम्परा के अनुसार न्याय वह है जो सब कुछ देखने-भालने के पश्चात ही किया जाए. फिर पता नहीं क्यों फिल्मों में न्याय की देवी की आँखों पर पट्टी बांध दी जाती है और कहा जाता है कि कानून अंधा होता है. शायद पश्चिमी परम्परा में ऐसा होता हो. आँख के दृष्टिपटल को संस्कृत में कनीनिका कहते हैं और अंग्रेजी में Cornea. यहाँ यह उल्लेख करना उचित होगा कि 'अक्ष','अक्षांश' इत्यादि संस्कृत शब्दों से ही, Axis भी लिया गया है.

Sweat तो स्पष्टतया संस्कृत शब्द स्वेद ही है, यद्यपि डिक्शनरी हमें बताती है कि इसका उद्गम Old English है. Sweatband, (कपड़े का एक बंध जो पसीना सोखता है) इसी मूल शब्द से बना है. योग शास्त्र व आयुर्वेद में विभिन्न स्वेदन क्रियाओं का वर्णन है जिनसे कुछ रोगों का उपचार किया जाता है. संस्कृत शब्द वमन को यथावत ही अंग्रेजी में Vomition इत्यादि कहा जाता है, परन्तु हमारी डिक्शनरी इसका लैटिन शब्द Vomere घोषित करती है. अंग्रेजी शब्द Udder तथा Uterus भी स्पष्टतया संस्कृत मूल के हैं. Udder का उद्गम डिक्शनरी में Old English लिख दिया गया है, परन्तु इसका वास्तविक उद्गम संस्कृत शब्द 'ऊधस' है. इसी प्रकार Uterus जो कि डिक्शनरी में लैटिन शब्द से निकला हुआ मान लिया गया है, का मूल 'उदर' प्रतीत है. संस्कृत में सगे भाई-बहन सोदर या सहोदर भी कहे जाते हैं.

यह कल्पना करना कि अंग्रेजी शब्द Duodenum का मूल संस्कृत है, आश्यर्चजनक होगा. परन्तु सत्य यही है, यद्यपि हमारी डिक्शनरी

इसके लैटिन होने की घोषणा करती है. ड्यूडेनम छोटी आँत से पहले का वह भाग होता है जो आमाशय के तुरंत बाद शुरू हो जाता है तथा जिसकी लम्बाई 'बारह' अंगुल होती है. ड्यूडेनम शब्द का उद्गम भी 'बारह' अंगुल' से सम्बन्धित है. संस्कृत में बारह द्वादशम् कहा जाता है. Dwadasham तथा Duodemum के मध्य ध्वन्यात्मक साम्य अति स्पष्ट है. ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में इससे मिलता-जुलता एक शब्द Duodecimal भी है जिसका अर्थ गणना की ऐसी पद्धति से है जिसका आधार बारह होता है. इस शब्द के उच्चारण के लिये जो संकेत डिक्शनरी ने दिया है, वह dyoo-ohdess-mal है. यह स्पष्ट रूप से द्वा दशमलव ही है. यहाँ यदि संस्कृत शब्द 'दशम' (दस) के लिये अंग्रेजी में उपयोग में लाये जाने वाले शब्द Deci पर ध्यान दें तो पता लगेगा की Decimal (दशमलव) December (दशम्-अम्बर, हजारों वर्षों से प्रचलित वैदिक वर्ष-गणना प्रणाली के अनुसार आज का दिसम्बर १२वें के बजाय १०वाँ मास यानि कि X-mas होता था. वैसे महीनों के अंग्रेजी नाम September, सप्ताम्बर; October, अष्टाम्बर; तथा Noverber, नवम अंबर हैं.) Decimate (दश-मेघा, अर्थात दसवें भाग को लेना अथवा समाप्त करना) और अन्य कई अंग्रेजी शब्दों के मूल में संस्कृत शब्द दशम ही है.

पद व Pod का संबंध हमें पहले ही ज्ञात हो चुका है, अब 'कर व हस्त' लेते हैं. Chiral, Chiropody तथा Chair, शब्दों का उद्गम डिक्शनरी ग्रीक शब्द Kheir, घोषित करती है. परन्तु यह सभी कर के अपभ्रंश हैं. इसी प्रकार 'हस्त' हिन्दी का हाथ व अंग्रेजी का Hand हो जाता है. जब 'हाथ' की बात हो, तो 'दाहिना', 'बायाँ' शब्द भी क्यों छोड़े जायें. जब हम पूर्व की तरफ मुँह करके खड़े होते हैं तो दाहिना (Right) हाथ दक्षिण दिशा को इंगित करता है. इसी 'दक्षिण' से अंग्रेजी शब्द Dextro, Dextrose इत्यादि बने हैं. वैज्ञानिक शब्दावली में Dextro का अर्थ दाहिनी तरफ घूमने वाला होता है. Dextrose उस ग्लूकोज शर्करा (Saccharide) को कहते हैं, जिसका विलयन एक विशेष प्रकार के प्रकार की किरण (रश्मि-Ray/शमा) को दाहिनी तरफ घुमा देता है. इस शब्द को हमारी डिक्शनरी लैटिन घोषित करती है. अंग्रेजी में वाम अथवा बायाँ (Left) शब्दों के लिये शब्द Levo है. इस शब्द का संस्कृत भाषाई उद्गम मुझे ज्ञात नहीं हो पाया है. यद्यपि निश्चित रूप से यह कोई संस्कृत शब्द ही होगा. वैसे अंग्रेजी शब्द Candy संस्कृत शब्द खॉड ही है.

> *कास/खाँसी आदि को अंग्रेजी में Cough कहते हैं. संस्कृत शब्द 'मरमर' अंग्रेजी शब्द Murmur यथावत ही ले लिया गया है, जिसका एक अर्थ 'धीमा शोर' होता है.*

अंग्रेजी शब्द Osteo का उद्गम डिक्शनरी ग्रीक भाषा का शब्द Osteon मानती है, जबकि यह स्पष्ट रूप से मूल संस्कृत शब्द अस्थियाँ का अपभ्रंश हैं. हडिडयों से संबंधित सभी अंग्रेजी शब्द जैसे Osseous (लैटिन) तथा Ossify/Ossification, मूल शब्द अस्थि में हुई हेरा-फेरी मात्र हैं. इसके अतिरिक्त एक रोग जिसमें हड्डियाँ गलकर व्यर्थ/नरम होने लगती हैं, तकनीकी शब्दावली में Osteomalasia कहलाती है. यह शब्द दो संस्कृत शब्दों अस्थि व मल का व्युत्पन्न है. मल के लिए विष्ठा तथा व्यर्थ जैसे समानार्थी शब्द और भी है. Waist इन्हीं का विकृतीकरण है. मल शब्द के उपयोग से Encephalomalasia भी बना है. अंग्रेजी में Mal का उपयोग मलिन, अनुचित, गंदा, भ्रष्ट इत्यादि का बोध कराने वाले शब्दों में भी होता है. जैसे Mal-administration (भ्रष्ट प्रशासन), Mal practice (अनुचित तरीका).

कास/खाँसी आदि को अंग्रेजी में Cough कहते हैं. संस्कृत शब्द 'मरमर' अंग्रेजी शब्द Murmur यथावत ही ले लिया गया है, जिसका एक अर्थ 'धीमा शोर' होता है. जैसे Cardiac murmur; पाठकों को यह समझने में कोई कठिनाई नहीं होगी कि दोनों अंग्रेजी शब्द संस्कृत के हैं. डिक्शनरी murmur को लैटिन घोषित करती है. अंग्रेजी शब्द Asthma व हिन्दी उर्दू का दमा वास्तव में मूल संस्कृत 'यक्ष्मा' का अपभ्रंश है. Fever में F के स्थान पर J लगा दीजिए. ज्वर स्वयं स्पष्ट हो जायेगा. उन चिकित्सकीय तकनीकी शब्दों की सूची जो संस्कृत भाषाई उद्गम के हैं बहुत लंबी है. कुछ शब्द उदाहरण के लिए और लिए जा सकते हैं. आधुनिक ऐलोपैथिक चिकित्सा विज्ञान की एक शाखा है, Xerntology जिसके अन्तर्गत वृद्धावस्था के रोगों का अध्ययन, इलाज आदि होता है. यह स्पष्टतया तीन संस्कृत शब्दों से बना है-जरान्त' (वृद्धावस्था), अन्त (मृत्यु का द्योतक) तथा 'लग'. ऐसा ही एक शब्द Progeria (प्रोजेरिया) है. यह एक बीमारी है जिसमें बच्चा भी वृद्ध के समान नजर आना शुरू हो जाता है. प्रो-जोरिया व Xerntology दोनों ग्रीक दर्शाया जाता है.

लग्-Logy : लुगाई-Luggage

बहुधा उपयोग में लाये जाने वाले प्रत्यय Logy, Stry, Graphy, Gram, संस्कृत मूल के हैं. Stry स्पष्टतया शास्त्र/शास्त्रीय (Dentistry-दंत-शास्त्र) है. Graphy, Gram संस्कृत शब्द ग्रंथ है, जिसका निहितार्थ अभिलेख करना या अंकित करना है. यही कारण है कि संस्कृत में पुस्तक अथवा खण्ड के लिये ग्रंथ शब्द का प्रयोग होता है. (Geography-'ज्या': पृथ्वी ; ग्रंथ) Cardiogram हृदय-ग्रंथ. अंग्रेजी शब्द Ink संस्कृत अंकन से बना है.

Logy का मूल, संस्कृत शब्द लग्/लग्न है, जिसके विभिन्न अर्थ सम्बन्धित, सम्पर्क में आना, पीछे लग जाना, अनुसरण करना इत्यादि हैं. जैसे Zoology में Zoo शब्द का उद्गम 'जीव' है, तथा Logy सम्बन्ध बोधक है, यानि जीवों से सम्बन्धित (ज्ञान/विज्ञान) विषय हुआ ZoologyA Geology (ज्या-लग्); Physiology (Physio-पश्य,अर्थात दिखने वाला, लग), आदि इस प्रत्यय के अंग्रेजी शब्दों में उपयोग के अन्य उदाहरण हैं. ऐसा नहीं है कि 'लग' का उपयोग मात्र प्रत्यय के रूप में होता है. लग्न, लगुन/लगन और शायद लगान इससे बनाये गये अन्य हिन्दी-संस्कृत शब्द हैं. मारवाड़ी भाषा में पत्नी को 'लुगाई' कहा जाता है. यहाँ एक रोचक तथ्य भी उजागर होता है कि अंग्रेजी भाषा का शब्द Luggage जिसको हमारी विश्वप्रसिद्व डिक्शनरी Scandinavian (स्कंधनावीय) भाषा से मानती है, वास्तव में संस्कृत शब्द 'लग' से ही बना है. जो जीवन रूपी यात्रा में आपके साथ रहे वह है, 'लुगाई' और जो भौगोलिक यात्राओं मे आपके साथ लगा रहे वह LuggageA

आगरा से नियाग्रा

जिस प्रकार 'ज्या' "Geo' में परिवर्तित हो जाता है और Geology तथा Geography जैसे अंग्रेजी शब्दों का निर्माण होता है जिनको डिक्शनरी ग्रीक उद्गम का मानती है, उसी प्रकार संस्कृत शब्द 'धरा' Terra हो जाता है और उससे बनती है अंग्रेजी शब्दों की एक पूरी श्रंखला. Terrain जिसका उद्गम जो डिक्शनरी फ्रेंच घोषित करती है, वही, Terrestrial तथा Territory (धरातलीय) को लैटिन शब्द Terrestris मानना शुरू कर देती है, परन्तु Terretorial शब्द के लिये वह कोई दावा नही करती. इनके अतिरिक्त Mediterrenian (मध्य-धरा), Terrace तथा Terrafirma कुछ अन्य अंग्रेजी शब्द और भी हैं जो अन्य भाषाओं के माने गए हैं. वैसे, राजस्थानी (धरती धोरॉरी) में 'धोरा' शब्द का अर्थ बालू की टीला (Sand dune) होता है.

हमें यह विश्वास करने में तनिक भी हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिये कि विश्व के जिस किसी देश के नाम के साथ 'स्तान' अन्त्यपद लगा है वह संस्कृत शब्द स्थान का विकृतीकरण है. उल्लेखनीय है कि जर्मन भाषा में स्थान का विकृत रूप Stag. जर्मन संसद, जहाँ से देश का राज-काज चलाया जाता है, Reichstag कहलाती है. यह दोनों शब्द संस्कृत ही हैं. 'राज्य' का विकृतीकरण राइच/राइख हो गया तथा स्थान का Stag. वैसे राज्य का अंग्रेजी विकृतीकरण Reign है, जिसका उद्गम डिक्शनरी फ्रेच शब्द Reignier मानती है. अंग्रेजी शब्द Soverign तथा Soverignity पूर्ण रूप से संस्कृत शब्द 'स्वराज्य' के अपभ्रंश हैं. अंग्रेजी वर्ण G का उपयोग 'ग' व 'ज' ध्वनियों के लिए किया जाता है. अज्ञात

भारत का ऐतिहासिक नगर आगरा यमुना के तट पर स्थित है. यमुना के एक सहस्त्र नामों में से एक है 'आगरी', जिसका अर्थ अमावस्या की रात की तरह काली होता है.

कारणों से कभी-कभी व अंग्रेजी शब्दों का भाग होने पर भी बोला नही जाता. हिन्दी बोलचाल में भी कभी-कभी 'ग' को 'ज' या उसका उलट बोल दिया जाता हैं. जैसे भीग गया, भीज गया. गम, जाना, जाओ, आदि के लिए प्रयुक्त अंग्रेजी शब्द Come और Go इसी हेरा-फेरी का परिणाम हैं.

स्व/स्वयं का भी बहुत से अंग्रेजी शब्दों में यथावत ही उपयोग हुआ है, जैसे Suo-motto (स्वमत), Suicide, (स्वयं छिद्) Suigeneris, (स्व-जनन), Spontaneous, (स्व-अस्ति/ स्वास्तिक, स्वयंस्फूर्त).

इसी क्रम में, विश्व के जिस किसी स्थान/नगर के नाम के साथ 'बोरा/बुरी' अन्त्यपद के रूप में हो (सेलिसबुरी) वह संस्कृत शब्द पुर/पुरी (शैलेशपुर) का; घम/हम हो (बर्मिघम) तो वह ग्राम/गाँव (ब्राहमणग्राम) का; डॉम हो (नाटरडॉम/एम्स्टरडम) तो वह धाम (नाट्रे-नाक्तम-रात्रिः धाम-धाम-रैन बंसेरा); 'टन/प्टन' हो (नार्थेम्पटन/वाशिंगटन) तो वह स्थान/पट्टण (श्रीरंगपटटनम्) का; शायर (लंकाशायर) तो वह ईश्वर (मुक्तेश्वर) का विकृतीकरण है.

भारत का ऐतिहासिक नगर आगरा यमुना के तट पर स्थित है. यमुना के एक सहस्त्र नामों में से एक है 'आगरी', जिसका अर्थ अमावस्या की रात की तरह काली होता है. विश्व की अनेक नदियों के नाम विभिन्न रंगों की छटाओं पर हैं. जैसे-तमसा (Thames) नील (Nile). आगरी के तट पर बसा आगरा. अब यदि नील-कृष्ण/श्यामल छटा, जोकि भारतीय परम्परा में सौंदर्य का प्रतीक मानी जाती है को कोई नये शब्द देने हों तो नील तथा आगरा/आगरी की संधि करवा दीजिये और देखिये एक पूरी श्रंखला-नीग्रो (Negro), नीग्रेस (Negress) नाइजर/ (Niger)नाइजीरिया (Nigeria), नाइग्रोसीन (Nigrosine) (एक अभिरंजक जिसकी छटा नीली काली होती है) Negri bodies, और नियाग्रा (Niagra). डिक्शनरी Negro का उद्गम लैटिन शब्द मानती है तथा उसका अर्थ काला घोषित करती है.

बिना किसी उपसंहार के मैं यहां विश्लेषण समाप्त करता हूँ और पाठकों पर छोड़ता हूँ कि इसकी उपयोगिता का निर्धारण वह स्वयं करें. जहां तक संस्कृत भाषा का प्रश्न है मुझे दो पंक्तियां याद आ रही हैं :

वो एक बूँद जो फैलाव में समन्दर थी,
उलझ के रह गई है मिट्टी के चन्द जर्रों में. ■

विनय मोघे
इंदौर में जन्म. वाणिज्य स्नातक. विभिन्न पत्र-पत्रिकामें आलेख, लघुकथा एवं व्यंग्य रचनाओं का प्रकाशन.
सम्पर्क : टी-३, श्रीराम हाइटस, ६२२ ए/ई, वार्ड शाहुपुरी गली नंबर एक, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
ईमेल - moghev@ymail.com

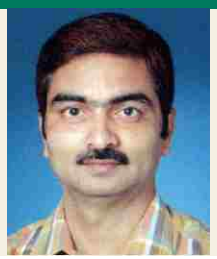

क्या आप हैं धनी नंबर वन!

आजकल लगभग सभी को लगता है कि जीवन में ढेर सारा पैसा होना जरूरी है. पैसा है तो सबकुछ है - पैसा नहीं तो कुछ नहीं. आज हमारे जीवन का लक्ष्य पैसा ही हो गया है. जिसे देखो वह पैसे के पीछे दौड़ रहा है. जिसके पास नहीं है वह थोड़ा पाने की कोशिश में है. जिसके पास थोड़ा है वह अधिक पाने की कोशिश में है. जिसके पास अधिक है वह और अधिक पाने की जुगाड़ में है. सभी का एक ही ध्येय दिखाई देता है वह है धनी बनना. पर जरा सोचें क्या हम उन्हें ही धनी मानें जिनके पास बहुत पैसा है यदि इसका उत्तर 'हां' में मिलता है तो हम गलत हैं. धनी हम उन्हें भी मानें जिनके पास अपनी-अपनी ज़रूरतों के मुताबिक धन के साथ नीचे दी गई संपदा भी है.

१. अच्छा स्वास्थ्य : आज के प्रदूषित वातावरण में व्यक्ति को अपना स्वास्थ्य अच्छा बनाए रखना ही मुश्किल होता जा रहा है. लगभग हर व्यक्ति किसी न किसी छोटी या बड़ी बीमारी से ग्रस्त है या मानसिक स्तर पर तनाव से पीड़ित है. ऐसी स्थिति में उन लोगों को धनी माना जाना चाहिए जो पूरी तरह स्वस्थ्य हैं. जो किसी रोग से ग्रस्त नहीं हैं या जो तनावरहित रहते हैं. निश्चित ही ऐसे लोग स्वास्थ्य के धनी हैं.

२. भोजन : भोजन के महत्व को हम सभी जानते हैं. शरीर को चलाने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है. पर आज की भाग दौड़ भरी जिन्दगी में इंसान भोजन के महत्व को कम आंकने लगा है. कई लोग हैं जो अपनी व्यस्त दिनचर्या में भोजन तक के लिए समय नही निकाल पाते हैं. ऐसे लोग कुछ भी खा लेने को ही भोजन का नाम दे देते हैं. जिस भोजन के लिए हम दिन-रात दौड़भाग करते हैं उसी को ग्रहण करने के लिए हमारे पास समय नहीं है. इस स्थिति में क्या आप उन लोगों को धनी नही कहेंगे जो दो वक्त का भोजन समय पर शांति से ग्रहण कर पाते हैं.

३. नींद : इस दुनिया में कई चीजें ऐसी हैं जिन्हें पैसा देकर भी नहीं खरीदा जा सकता. गहरी नींद भी उन्हीं में से एक है. कितने ही लोग ऐसे हैं जो रात में गहरी नींद नहीं सो पाते. मानसिक श्रम, तनाव, कल की चिंता और भी ऐसे कई कारण हैं जिनकी वजह से व्यक्ति गहरी नींद से वंचित होता जा रहा है पर ऐसे लोग भी हैं जिनको बिस्तर पर पड़ते ही नींद लग जाती है. जो सुबह तक गहरी नींद सोते हैं. क्या ऐसे लोग संपन्न नहीं हैं. ज़रूर हैं.

४. परिवार : इन दिनों परिवार बिखराव के दौर से गुजर रहे हैं. पहले के भरे-पूरे परिवार का स्थान अब पति-पत्नी तथा बच्चे ने ले लिया है. कहीं-कहीं तो किसी कारण से पति-पत्नी और बच्चे भी अलग-अलग रहने को मजबूर हैं. बहुत कम लोग हैं जो ऐसे पारिवारिक सुख से संपन्न हैं जिस परिवार में सभी आयु वर्ग के सदस्य शामिल हैं. अर्थात जहां बच्चों की शैतानियां, युवाओं का उत्साह तथा बुजुर्गों का अनुशासन एकसाथ दिखाई दे. क्या हम उन लोगों को धनी नहीं कह सकते जो ऐसे किसी भरे-पूरे परिवार का सदस्य हैं.

५. अच्छी संतानें : हर व्यक्ति अपनी कमाई का एक मोटा हिस्सा अपने बच्चों की परवरिश तथा उनका भविष्य बनाने में लगा देता है. कई परिजनों को हमने यह कहते सुना होगा कि हमने अपना पेट काटकर अपने बच्चे की परवरिश की है. हर माता-पिता का सपना होता है कि उनकी संतान अच्छा इंसान बने तथा उनका और परिवार का नाम रोशन करे. अतः धनी हैं वे माता-पिता जिनके सपने साकार होते हैं. जरा उन माता-पिता से उनका हाल पूछिए जो सबकुछ होते हुए भी अपने आपको कंगाल मानते हैं. कारण कि उनकी संतान पथ से भटक गई है.

यदि हम इस हिसाब से सोचें तो पायेंगे कि धनी होने का अर्थ केवल पैसा होना नहीं है. कई लोग ऐसे होंगे जिनके पास बहुत पैसा नहीं होगा पर यदि वे ऊपर लिखे मामलों में संपन्न हैं तो वे भी किसी धनी व्यक्ति से कम नहीं हैं. यदि आप भी इनमें से एक हैं तो आप भी हैं धनी नंबर वन.■

आत्माराम शर्मा

२६ फरवरी १९६८ को ग्राम खरगापुर, टीकमगढ़, मध्यप्रदेश में जन्म. हिन्दी साहित्य में एम.ए. और एम.सी.ए. की उपाधि. नईदुनिया समाचार-पत्र में कला-समीक्षक के तौर पर लेखन. विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कहानियाँ और कविताओं का प्रकाशन. 'गर्भनाल पत्रिका' के संस्थापक सदस्य एवं पूर्व-सम्पादक. सम्प्रति : जनसम्पर्क विभाग, मध्यप्रदेश के सृजनात्मक उपक्रम 'मध्यप्रदेश माध्यम' में उप प्रबन्धक.

सम्पर्क : डीएक्सई-२३, मिनाल रेसीडेंसी, जे.के. रोड, भोपाल-४६२०२३ (म.प्र.). ईमेल : atmaram.sharma@gmail.com

बातचीत

प्रख्यात हिन्दी-प्रेमी डॉ. रुपर्ट स्नेल से आत्माराम शर्मा की बातचीत

भारत में हिन्दी का भविष्य क्या है?

आत्माराम शर्मा : बचपन, परिवार, दोस्त और गांव-देहात की स्मृतियों को पाठकों के साथ साझा करना चाहेंगे.

रुपर्ट स्नेल : मेरे पिताजी खेतीबाड़ी करते थे; फ़ार्मर थे. गाँव या शहर कोई था नहीं, देहात में ही था हमारा घर. मेरी तीन बहनें मुझसे बड़ी थीं और अक्सर अपने कामों या खेलों में तल्लीन रहतीं इसलिए मेरा काफ़ी समय अकेले में बीतता. ज़मीनी स्तर पर रहने से जब ऊब महसूस होने लगती तो मैं ऊँचे-ऊँचे पेड़ों पर चढ़ता था या मकानों की छतों पर. वहाँ एकान्त में बादलों और कबूतरों से बातें करता और कल्पना की दुनिया में भ्रमण करता था. छतों के उस हिस्से में जहाँ 'गटरिंग' होती, वहाँ से सीसे धातु (lead) के छोटे-छोटे टुकड़े काटकर नीचे धरती पर आकर उन टुकड़ों को भारी पतीले में आग पर चढ़ाकर गलाता और गले हुए सीसे को पहले तैयार किए हुए ढाँचे या साँचे में बड़ी सावधानी से उड़ेलकर अपनी पसंद की चीज़ें बना लेता था. हमारे गैराज में पारे (mercury) का एक पुराना शीशा भी था. मेरे हाथों में वह पारा एक अनोखा खिलौना बना. पारे को एक हथेली से दूसरी में उड़ेलकर कितना मज़ा आता था – पारा ही एक ऐसा द्रव्य है जो न पूरी तरह से ठोस है न तरल, न सूखा न गीला! कितनी जादुई चीज़ है, जिसमें अलग-अलग गुण एक साथ देखने को मिलते हैं! एक रसहीन रस, जो नीरस कभी न था! बाद में, यानी तीन-चार दशक बाद, मुझे इन विषैले पदार्थों को हाथ से बार-बार छूने की कुछ क़ीमत भी चुकानी पड़ी, लेकिन मेरे बचपन के दिनों में स्वास्थ्य के इस ख़तरे के बारे में डॉक्टरों को भी किसी तरह की सूझ ही नहीं थी शायद. वैसे लकड़ी से भी मैं बहुत सारी चीज़ें बना लेता था - बंदूक़, तलवार, चूहों को ज़िन्दा ही पकड़ने के अपने डिज़ाइन के पिंजरे, धनुष-बान. उस ज़माने में मेरे मन या दिल में (जहाँ भी गहरी भावनाएँ निवास करती हों) इसका आभास ही नहीं था कि किसी प्राणी को मारने से उसे कैसा महसूस होता होगा; फिर एक दिन खेतों में सैर करते हुए मैंने एक चिड़िया को बान से मारा. उसके छोटे-से शव को अपने काँपते हुए हाथों में लेकर मुझे इतना पछतावा हुआ कि पूछिए मत. मैंने एक पेड़ के नीचे चिड़िया को दफ़ना दिया; लेकिन मेरा रंज और पश्चाताप बना रहा.

पाप का दंड भरना ही पड़ता है, और ग्यारह साल की छोटी उम्र में मुझे क़ैद में रखा गया. यानी मेरी भरती हुई एक 'पब्लिक स्कूल' में. पब्लिक स्कूल उर्फ़ प्राइवेट स्कूल! ख़ैर. स्कूल में मैंने वही चीज़ें कीं जो स्कूलों में की जाती हैं. दिन और

डॉ. रुपर्ट स्नेल

१९५१ में ऑक्सफ़ोर्ड शहर के पास के एक छोटे-से गाँव में जन्म. लन्दन विश्वविद्यालय से बी.ए. तथा पी.एच.डी. उपाधि. प्रकाशित कृतियाँ - हिन्दी एवं ब्रजभाषा विषय पर लेख एवं कुछ पुस्तकें. हित हरिवंश गोस्वामी के ब्रजभाषा काव्य (वाणी) का संपादन एवं अनुवाद. हरिवंश राय बच्चन की आत्मकथा का अनुवाद. वेबसाइट पर हिन्दी की सामग्री. कई किताबों पर काम कर रहे हैं जिनमें प्रमुख हैं - बिहारी सतसई का अनुवाद, रामचरितमानस रीडर, हिन्दी आत्मकथाओं का रीडर, एवं बिहारीलाल की कल्पित ज़िन्दगी पर आधारित एक उपन्यास (अँग्रेज़ी में). संप्रति - युनिवर्सिटी ऑव टेक्सस, ऑस्टिन में प्रोफ़ेसर, हिन्दी-उर्दू फ़्लैगशिप के निदेशक.

> हरेक देश का नज़रिया सीमित होता है. केवल भारत ही नहीं, अमेरिका और इंग्लैंड और प्रत्येक दूसरे देश के बारे में अजीब-ओ-ग़रीब विचार हर जगह सुनने को मिलते हैं.

हफ़्ते बेहद लंबे लगते थे; लंबे सत्रों का कोई अन्त नहीं दिखता. न घर का-सा आराम, न फ़ार्म के काम का-सा जी-तोड़ आनन्द! अध्यापक लोग बच्चों की रोज़ाना शैतानी सह लेते थे, बच्चे अध्यापकों की अन्तहीन बेवकूफ़ी झेल लेते थे; पर दोनों पक्ष मन ही मन दूसरे को दंड देने की कल्पना बराबर किया करते थे.

कभी-कभार रविवार के दिन जब स्कूल के काम से छुट्टी होती थी मैं अपने एक सहपाठी के साथ चुपके से क़ैदख़ाने से भागकर खेतों के बीच छोटे-छोटे रास्तों और पगडंडियों से होकर एक पासवाले पब पर जाता. हम खुली सड़क से दूर रहते थे - कहीं दुश्मन की नज़र हमारी इस छोटी-सी पलटन पर न पड़े. कहने की ज़रूरत नहीं कि इस पलायन का एक ही मक़सद था - दो-एक गिलास बियर पीना. मज़े की बात यह थी कि स्कूल और पब के बीच एक छोटी-सी नदी बहती थी (या उसको नाला कहें तो ग़लत नहीं होगा; यह वह देश नहीं था जिसमें गंगा बहती है) और उसे पार करने के लिए कोई पुल नहीं था. इसलिए हमें मंज़िल तक पहुँचने के लिए ऐसी कला का प्रयोग करना पड़ता था जो कि स्कूल के पाठ्यक्रम में शामिल नहीं थी. अँग्रेज़ी में कहावत है, 'द स्टोलन फ़्रूट्स टेस्ट स्वीटेस्ट' यानि चोरी का फल सबसे मीठा होता है; वैसे हम बियर का 'शिलिंग' ज़रूर देते, चोरी कैसे करते; लेकिन स्कूल से भागकर दरिया को पार करके बियर पीने में जो रोमांच होता था, वह तो पूरी तरह से अविस्मरणीय था.

यूं मुझे स्कूल के सभी अध्यापकों की बदनामी नहीं करनी चाहिए – दो-एक ऐसे थे जिन्हें बेवकूफ़ कहना सरासर ग़लत होगा. एक थे मि. पैरी, जो हमें फ़्रांसीसी पढ़ाते थे. फ़्रांस में जिन लोगों का फ़्रांसीसी का ज्ञान कमज़ोर है उनके बारे में कहा जाता है कि 'वह तो एक स्पैनिश गाय की तरह फ़्रांसीसी बोलता है.' मैं था वह स्पैनिश गाय (या शायद उसका भाई). फिर भी सीखने में बहुत आनन्द आता था. मेरा फ़्रांसीसी का ज्ञान भले ही कमज़ोर रहा हो पर मि. पैरी की कक्षाओं में मैंने एक बहुत बड़ी बात सीखी थी कि 'साहित्य' नाम की एक चीज़ भी है दुनिया में. लगभग उसी समय मैं अँग्रेज़ी की कविता भी पढ़ने लगा. साहित्य! कविता! एक नया रस, एक ऐसा पदार्थ जो न ठोस है न तरल.

वह कौन-सा वाकया था जिसने हिन्दी प्रेम या भारत के बारे में उत्सुकता पैदा कर दी.

स्कूल के दिनों में ही मुझे पहली बार हिन्दुस्तानी संगीत सुनने का मौक़ा मिला. मैं शायद किसी 'म्यूज़िक क्लब' का सदस्य था, जिसके माध्यम से हम किसी पासवाले शहर के एक कार्यक्रम में गए जिसमें Indo-Jazz Fusions नाम की एक मंडली शामिल थी. पश्चिमी और हिन्दुस्तानी वाद्यों का सम्मिश्रण मुझे बहुत ही अच्छा लगा; तबला-वादक श्री केशव साठे से बातचीत करने का आनंद भी प्राप्त हुआ. उसी दिन से एक तरह का जनून मेरे मन में चढ़ गया. स्कूल की छुट्टियों में मैं लन्दन जाता बड़े-बड़े संगीतकारों के कार्यक्रमों में. दो-तीन साल में मुझे पं. रविशंकर, उस्ताद विलायत ख़ान साहब, उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान साहब जैसी बड़ी हस्तियों को देखने और सुनने का मौक़ा मिला और उनसे बात करने का मौक़ा भी. मैं स्वर्ग में बैठा था - और बिना पेड़ पर चढ़े! धीरे-धीरे इन चीज़ों में मेरी रुचि बढ़ने लगी तो हिन्दुस्तान की संस्कृति के बारे में जो भी लेख या किताब हाथ आती उसको पढ़ डालता. संगीत भी सुना करता था, रिकार्डिंग्ज़ ख़रीदने लगा – पं. रविशंकर का खमाज और ललित; उस्ताद अली अकबर ख़ान और निखिल बैनर्जी के बहुत सारे राग. बिहार राग को सुनकर मैं महसूस करने लगा कि हाँ, मेरी ज़िन्दगी में वाक़ई एक नया बसन्त आ गया है. तब वह दिन आया जब मैंने पहली बार पं. राम नारायण का सारंगी वादन सुना. सारंगी की मीठी पीड़ा मेरे दिल को छू गई. ख़ैर, उन जादुई दिनों की यादें बहुत मीठी हैं. मिठास के रसास्वदन को स्थायी रखने के लिए मैंने निश्चय किया कि मैं विश्वविद्यालय जाकर एक भारतीय भाषा सीखूँगा. मैंने सन् १९७० में लन्दन विश्वविद्यालय के 'स्कूल ऑव ओरिएंटल ऐंड आफ़्रिकन स्टदीज़' में हिन्दी पढ़ना शुरू किया, यह सोचकर कि चलो, चार साल तक तो हिन्दस्तान से मेरा संबंध बना रहेगा. क़िस्सा-कोताह, मेरे चार साल नहीं बल्कि पूरे पैंतीस साल वहीं पर हिन्दी के पठन-पाठन करते हुए बीत गए.

योरप एवं अमेरिका में भारतीय संस्कृति एवं भारतीय भाषाओं को लेकर किस तक नज़रिया व्याप्त है.

जहाँ तक दूसरे देशों की बात है, हरेक देश का नज़रिया सीमित होता है. केवल भारत ही नहीं, अमेरिका और इंग्लैंड और प्रत्येक दूसरे देश के बारे में अजीब-ओ-ग़रीब विचार हर जगह सुनने को मिलते हैं. अमेरिका की जो छवि भारतीय विचार-धारा में अंकित होती है, अमेरिका में रहते हुए उसको पहचानना आसान नहीं है. इंग्लैंड में भी बहुत सारी चीज़ें और जगहें हैं जो अन्यत्र अनदेखी और अनसुनी रहती हैं. हम सभी यह दावा करते हैं (या मन ही मन सोचते हैं) कि हम शिक्षित और संवेदनशील हैं मगर असलियत यह है कि हम सभी कुएँ के मेढक हैं.

टेक्सास विश्वविद्यालय के भाषा विभाग के बारे में बतायें. वहां एशियाई भाषाओं में हिन्दी आदि की क्या दशा है.

टेक्सास विश्वविद्यालय में कई अलग-अलग विभाग हैं जिनमें

दुनिया की प्रमुख भाषाएँ पढ़ाई जाती हैं. डिपार्टमेंट ऑव एशियन स्टदीज़ में संस्कृत, पाली, प्राकृत, हिन्दी, उर्दू, बांगला, तमिल, मलयालम और तेलुगु में पढ़ाई होती है. हिन्दी में पूर्वस्नातक तथा स्नातक दोनों स्तरों पर पढ़ाई होती है. सारे देश में यह विभाग हिन्दी का एक गढ़, अड्डा या प्रमुख केन्द्र समझा जाता है (निज कबित्त केहि लागि न नीका, सरस होऊ अथवा अति फीका!) हिन्दी उर्दू फ़्लैगशिप के नाम से एक विशेष पूर्वस्नातक प्रोग्राम भी है; यह चार या पाँच वर्ष का 'इंटेंसिव' प्रोग्राम है जिसके तहत विद्यार्थियों को हिन्दी और उर्दू में ऊँचे स्तर की क्षमता प्राप्त करने का अवसर दिया जाता है. डिपार्टमेंट ऑव एशियन स्टदीज़ एवं हिन्दी उर्दू फ़्लैगशिप के अलग-अलग वेबसाइटस हैं जिनमें यथेष्ट सूचना दी गई है - hhttp://www.utexas.edu/cola/depts/asianstudies/ hhttp://hindiurduflagship.org/

हिन्दी साहित्य में उपन्यास, कहानी, कविता आदि में कौन-सी विधा आपको सबसे ज्यादा अपने करीब लगती है.

साहित्य में हर विधा का अपना स्थान है. संतरे का अपना स्वाद होता है, अमरूद का भी. जब मैं विनोद कुमार शुक्ल का उपन्यास 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' पढ़ता हूँ तो मुझे लगता है कि उपन्यास ही सबसे महान विधा है; जब मैं अज्ञेय की कविता 'असाध्य वीणा' पढ़ता हूँ तो मन ही मन पूरे विश्वास के साथ यह कहता हूँ कि कविता है विधाओं की (असाध्य) मलिका है. विनोद कुमार जी का गद्य इतना कवितात्मक है कि पूछिए मत; अज्ञेय की कविता इतनी औपन्यासिक होती है कि क्या बताऊँ.

साहित्य में आप क्या देखना चाहते हैं.

वही, जो संगीत में सुना जाता है.

क्या साहित्य समय से पीछे हो गया है.

साहित्य समय से परे है. आगे-पीछे होने का सवाल नहीं उठता.

विदेशों में लिखे जा रहे हिन्दी साहित्य के बारे में एक राय यह बनती है कि यह नॉस्टेल्जिया का साहित्य है.

इस प्रश्न का उत्तर एक दूसरे प्रश्न से ही दिया जा सकता है : क्या देश-विदेश में – दुनिया के किसी भी देश में – कोई ऐसा साहित्य या साहित्य की विधा है जिसमें नॉस्टेल्जिया का पुट नहीं है?

विदेश में रहने वाली पहली पीढ़ी ने भारत में हिन्दी सीखी, पढ़ी और वहाँ जाकर खुद को अभिव्यक्त करने लगे. इसके बाद जो दूसरी पीढ़ी वहां पर है, हिन्दी को लेकर और हिन्दी साहित्य को लेकर उनका क्या रवैया है.

वैसे इसका सटीक जवाब देना मेरे लिए मुश्किल होगा क्योंकि इस क्षेत्र में मेरा अनुभव बहुत ही सीमित है. मुझे लगता है कि 'दूसरी पीढ़ी' के लोग किसी भी साहित्य में रुचि नहीं रखते.

> *तुलसीदास के ज़माने की आबादी में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या बड़ी नहीं थी, लेकिन हम उस युग के लोगों को 'अशिक्षित' कदापि नहीं कहेंगे.*

आपकी निगाह में लेखक एक आम आदमी से किस प्रकार भिन्न होता है.

कभी-कभी जब मैं लेखकों के साक्षात्कार इत्यादि पढ़ता हूँ तो मुझे लगता है कि 'लेखक' की सही परिभाषा यह होगी – एक आम आदमी जो अपने को बहुत समझता है! असल में हमें यह भी पूछना चाहिए कि 'लेखक' किस चिड़िया का नाम है? कब किसको एक विशेष उपाधि दी जाती है? अगर मैं किसी की हत्या करूँ तो मुझे हत्यारा कहा जाएगा; मैं यह वाक्य टाइप कर रहा हूँ लेकिन टाइपिस्ट होने या कहलाने का दावा नहीं करता; अधिकतर लेखक दूसरे काम भी करते हैं (पढ़ाते हैं, अख़बारों का सम्पादन करते हैं). इसलिए परिभाषाओं का मामला थोड़ा टेढ़ा है. मैंने आधा उपन्यास लिखा है (जो 'आधा लिखा' हुआ पड़ा हुआ है). क्या मैं अपने को आधा-उपन्यासकार (अर्धोपन्यासकार?) कह लूँ?

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी के भविष्य को आप किस नज़र से देखते हैं.

क्षमा चाहता हूँ - मैं इस प्रश्न का उत्तर तभी देने की कोशिश करूँगा जब यह भी पूछा जाएगा कि भारत में हिन्दी का भविष्य क्या है?

आज का युवा साहित्य से दूर होता जा रहा है, इसके लिये कौन दोषी है.

दोष देने या मानने की बात नहीं है. दुनिया का फेर है. 'गहिली गरबु न कीजिये, समय सुहागहिं पाइ. जिय की जीवन जेठ सो, माह न छाँह सुहाइ.' हाँ, यह कह सकते हैं कि जिन लोगों ने आधुनिक मीडिया का आविष्कार किया, दोष उन्हीं का है. पर मानव जीवन के इतिहास की ओर ध्यान देते हुए हम देखते हैं कि लिखित साहित्य से संस्कृति का अनिवार्य संबंध आधुनिक युग में ही उत्पन्न हुआ है. तुलसीदास के ज़माने की आबादी में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या बड़ी नहीं थी, लेकिन हम उस युग के लोगों को 'अशिक्षित' कदापि नहीं कहेंगे. जैसे-जैसे साहित्य का महत्त्व घटेगा, दूसरी विधाओं में विकास देखने को मिलेगा – शायद. अस्थिरता ही इस दुनिया का प्रमुख लक्षण है. कुछ भी स्थिर नहीं होता - अस्थिरता को छोड़कर.

हिन्दी में प्रायोजित पुरस्कारों, सम्मानों और विदेश यात्राओं की भरमार है, क्या इससे साहित्य लेखन के स्तर में इजाफा हुआ है या फिर लेखन के स्तर में गिरावट आई है.

मेले लग जाएँ, पुरस्कार दिए और लिए जाएँ, इसमें कोई बुराई नहीं है; परंतु लेखन का काम तो घर बैठे अकेले में ही किया जाता है.■

राजकिशोर

राजनीति में रुचि थी, लेकिन पत्रकारिता और साहित्य में आ गये. अब फिर राजनीति में लौटना चाहते हैं, लेकिन परंपरागत राजनीति में नहीं. सोचते हैं कि क्या मार्क्स की राजनीति गांधी की शैली में नहीं की जा सकती. एक व्यापक आंदोलन छेड़ने का पक्का इरादा रखते हैं. उसके लिए साथियों की तलाश है. आजकल इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, नई दिल्ली में वरिष्ठ फ़ेलो हैं. साथ-साथ लेखन और पत्रकारिता भी जारी है. रविवार, परिवर्तन और नवभारत टाइम्स में वरिष्ठ सहायक सम्पादक के तौर पर काम किया. कई चर्चित पुस्तकों के लेखक. ताजा कृति : उपन्यास 'तुम्हारा सुख'.

सम्पर्क : ५३, एक्सप्रेस अपार्टमेंटस, मयूर कुंज, दिल्ली-११००९६ ईमेल : truthonly@gmail.com

ईश्वर और मार्क्स का द्वंद्व

क्या ईश्वर का रास्ता मार्क्स से होते हुए जाता है? या मार्क्स के रास्ते में ईश्वर आड़े नहीं आता? इस गुत्थी को प. बंगाल के सीपीएम विधायक अब्दुर्रजाक मुल्ला ने अपने स्तर पर सुलझा लिया है. उनका कहना है : मैं कम्युनिस्ट हूँ, सीपीएम का सदस्य हूँ, इसका मतलब यह नहीं है कि मैं अपनी मुस्लिम पहचान को भुला दूँ. मेरे लिए अल्लाह मार्क्स से ऊपर है. मैं मार्क्स के लिए अल्लाह को त्याग नहीं सकता. और अब तो मार्क्सवादियों के लिए आस्तिक होना सामान्य बात हो गई है. ईश्वर और मार्क्स के बीच द्वंद्व अब कोई मुद्दा नहीं है. इसके अलावा हम एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में रहते हैं. लोकतंत्र में हर व्यक्ति को आजादी होती है कि वह किसे माने और किसे न माने. किसी को उसके विश्वास के लिए दंडित नहीं किया जा सकता.

मुल्ला की ये स्थापनाएँ विचारणीय हैं. कम्युनिस्टों का नास्तिक होना स्वाभाविक माना जाता है. बल्कि यह प्रश्न भी किया जा सकता है कि अगर आप नास्तिक नहीं हैं, तो कम्युनिस्ट कैसे हैं? दुनिया और जिंदगी की व्याख्या आस्तिक यानी धार्मिक लोग एक तरह से करते हैं और कम्युनिस्ट दूसरी तरह से. दोनों का दृष्टिकोण एक-दूसरे से बिलकुल उल्टा है. आस्तिकों के अनुसार, यह सृष्टि ईश्वर की बनाई हुई है और वही इसका पालनकर्ता तथा नियंत्रक है. उसकी इच्छा के बिना पत्ता तक नहीं हिल सकता. इसके विपरीत, कम्युनिस्ट ईश्वर की सत्ता से ही इनकार करते हैं. उनका मानना है कि किसी ने इस सृष्टि का निर्माण नहीं किया है और न ही कोई सत्ता इसका नियंत्रण कर रही है. धर्म का आधार मिथ्यात्व है, अतः तार्किक ढंग से सोचने वाला कोई आदमी धार्मिक हो ही नहीं सकता. धार्मिक होने और कम्युनिस्ट होने में गहरा अंतर्विरोध है. आप दोनों में से किसी एक को ही चुन सकते हैं. अगर आप दोनों को एक साथ चुनते हैं, तो इसका मतलब है कि आप न तो सच्चे धार्मिक हैं और न सच्चे कम्युनिस्ट.

इसीलिए जब यह खबर फैली कि अब्दुर्रजाक मुल्ला हज करने के लिए मक्का जा रहे हैं, तो सीपीएम के भीतर झनझनाहट होने लगी. कम्युनिस्ट नेता हज करने नहीं जाते. पार्टी ने एतराज किया. मुल्ला अड़ गए कि मैं तो हज करने जाऊँगा ही. पार्टी मेंबर

> "दुनिया और जिंदगी की व्याख्या आस्तिक यानी धार्मिक लोग एक तरह से करते हैं और कम्युनिस्ट दूसरी तरह से. दोनों का दृष्टिकोण एक-दूसरे से बिलकुल उल्टा है."

होकर मैंने अपनी आत्मा नहीं बेच दी है. अब सीपीएम ऐसी पार्टी नहीं है जो सिद्धांत के चलते अपना कोई बड़ा नुकसान करने को तैयार हो जाए. अब्दुर्रजाक मुल्ला कोई मामूली आदमी नहीं हैं. वे कैनिंग पूर्व विधान सभा सीट से १९७७ से अभी तक हर चुनाव में निर्वाचित होते रहे हैं. पिछले साल प. बंगाल में मार्क्सवादियों की गंभीर पराजय हुई, लेकिन मुल्ला चुनाव नहीं हारे. वाम मोर्चा की सरकार में वे दो बार मंत्री रह चुके हैं. ऐसे लोग किसी भी पार्टी के लिए 'एसेट' यानी

> *जो आस्तिकता आदमी को विवेकहीन और कमजोर बनाती है, वह बेकार है. इसी तरह जो नास्तिकता आदमी को क्रूर और अनैतिक बनाती है, वह भी त्याज्य है.*

संपत्ति माने जाते हैं. इतनी मूल्यवान संपत्ति को कोई भी पार्टी आस्तिकता-नास्तिकता जैसे मामूली मुद्दे पर कैसे धता बता सकती है? जो अनुशासन-शासन के मार्ग में बाधक है, उसे त्याग देना ही बेहतर है. शासन ही नहीं मिलेगा, तब हम सूखा-सूखा अनुशासन लेकर क्या करेंगे? इसलिए पार्टी ने फैसला किया कि हम सिद्धांत और राजनीतिक जरूरत, दोनों पर समान रूप से ध्यान देंगे.

इस आधार पर जो बीच का रास्ता निकाला गया, वह बेजोड़ है. पार्टी ने मुल्ला से कहा कि वे प्रार्थना पत्र दें कि उन्हें मक्का जाने की इजाजत दी जाए. हज करने के लिए मक्का जाना पड़ता है. सो मुल्ला ने इस आशय का अनुरोध किया, जिसे पार्टी ने तुरंत स्वीकार कर लिया. अनुभवी राजनेता ने यह नहीं लिखा था कि वे हज करने के लिए मक्का जाना चाहते हैं. बात सिर्फ मक्का जाने की थी. मक्का एक शहर भी तो है, जहाँ हज के अलावा अन्य प्रयोजनों से भी लोग आते-जाते हैं. अतः अपने मेंबर को मक्का जाने से पार्टी कैसे रोक सकती? इस तरीके से मुल्ला को मक्का जाने की इजाजत मिल गई. अब मक्का पहुँच कर मुल्ला साहब क्या करते हैं, यह उनका व्यक्तिगत मामला है. कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया को उससे कोई मतलब नहीं है. अल्लाह और मार्क्स के बीच समझौता करने का कितना आसान फार्मूला है.

मैं यह नहीं कहता कि आस्तिकता बुरी चीज है. बहुत-से आस्तिक लोग अच्छे मनुष्य भी हैं. महात्मा गांधी को मानवता का शिखर कहा जा सकता है और वे आस्तिक थे. जाकिर हुसेन भी आस्तिक थे. मदर टेरेसा भी आस्तिक थीं. इसके विपरीत, बहुत-से नास्तिकों को शैतानी काम करते हुए देखा जाता है. ईश्वर को खोकर वे मानो नैतिकता से भी हाथ धो बैठते हैं. शायद आस्तिकता बनाम नास्तिकता असली मुद्दा है ही नहीं. मुद्दा यह है कि आस्तिकता या नास्तिकता से निकलता क्या है. हिटलर आस्तिक था और स्टालिन नास्तिक. लेकिन दोनों ने लगभग एक जैसे कर्म किए. जो आस्तिकता आदमी को विवेकहीन और कमजोर बनाती है, वह बेकार है. इसी तरह जो नास्तिकता आदमी को क्रूर और अनैतिक बनाती है, वह भी त्याज्य है.

लेकिन किसी संगठन या राजनीतिक दल के विचारों में कुछ संगति होनी चाहिए या नहीं? अंतर्विरोधों से ग्रस्त संगठन या व्यक्ति किस दिशा में आगे बढ़ सकता है. मार्क्सवादियों के लिए यह प्रश्न ज्यादा महत्व है, क्योंकि उनका समस्त राजनीतिक और आर्थिक दर्शन नास्तिकता पर टिका हुआ है. जैसे ही वे ईश्वर की सत्ता स्वीकार करना शुरू करते हैं, उनका मार्क्सवाद भहराने लगता है. एक जमाने में मार्क्सवादी लोग नास्तिकता का धुआँधार प्रचार किया करते थे. लेकिन जब वे वोट की राजनीति में उतरे, तब उन्हें धर्म और ईश्वर से समझौता करना पड़ा. मामला सिर्फ इस्लाम का नहीं है, हिंदू या ईसाई होने का भी है. जब सीपीएम बढ़ने लगी और सत्ता में भी आ गई तब केरल, प. बंगाल तथा अन्य राज्यों में ऐसे लोग भी पार्टी में शामिल होने लगे जिन्हें न मार्क्सवाद का ज्ञान था न उससे कोई मतलब था. वे तो सिर्फ राजनीति करने और सत्ता की संस्कृति में शामिल होने आए थे. पार्टी ने भी किसी कड़ी कसौटी का पालन नहीं किया. इसी का नतीजा है कि विचारधारा की दृष्टि से सीपीएम खिचड़ी पार्टी बन चुकी है. उसमें आस्तिक और नास्तिक, सब के लिए जगह है. उनके लिए भी जगह है, जिनकी आस्था किसी भी प्रकार की विचारधारा या नैतिकता में नहीं हैं.■

मनोज कुमार श्रीवास्तव

विचारशील लेखक के तौर पर ख्याति. गद्य एवं पद्य पर समान अधिकार. कविता के संसार से अलग, उनका गद्य विचार जगत की गहराईयों में जाता है. अपनी परम्परा से निरंतर संवाद करता इनका लेखन आधुनिकता के प्रचलित मुहावरों से भी बाहर जाता है. प्रकाशित कृतियां : कविता संग्रह - 'मेरी डायरी से', 'यादों के संदर्भ', 'पशुपति', 'स्वरांकित' और 'कुरान कविताएँ'. 'शिक्षा के संदर्भ और मूल्य', 'पंचशील वंदेमातरम्', 'यथाकाल' और 'पहाड़ी कोरबा' पर पुस्तकें प्रकाशित. 'सुन्दरकांड' के पुनर्पाठ पर छह खण्ड प्रकाशित. दुर्गा सप्तशती पर 'शक्ति प्रसंग' पुस्तक प्रकाशित. सम्प्रति : १९८७ संवर्ग के भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी.

सम्पर्क : shrivastava_manoj@hotmail.com

व्याख्या

ब्रह्माशंभु फणीन्द्रसेव्यमनिशं

तुलसी राम को ब्रह्मा, शंभु और शेषजी से निरन्तर सेवित कहते हैं. ब्रह्मा, विष्णु और शंभु की त्रिमूर्ति GOD के तीन अक्षरों जेनेरेटर, ऑपरेटर और डिस्ट्रायर की व्याख्या करती है. विष्णु के अवतार राम ब्रह्मा, शंभु और शेष की लगातार सेवा के योग्य हैं. जाम्बवान के रूप में ब्रह्मा, हनुमान के रूप में शंभु और लक्ष्मण के रूप में शेष राम अवतार की सेवा में आए हैं. ब्रह्मा से ऊपर के ब्रह्मलोक, शंभु से मर्त्यलोक और फणीन्द्र से पाताल या नागलोक, इस प्रकार तीनों लोकों से सेव्य बताया गया है. 'हम सब सेवक अति बड़भागी/संतत चरन ब्रह्म अनुरागी.'

तुलसी उस राम को प्रणाम करते हैं जो ब्रह्मा, शंभु और शेष जी से निरन्तर सेवित हैं. राम की माधुर्य रूप से सेवा में ब्रह्मा जाम्बवान बनकर आए हैं. सीता की खोज की अवधि निकल जाने पर जब अंगद मृत्युभय से ग्रस्त हो जाते हैं तब जाम्बवान ही उन्हें ब्रह्मा वाला ज्ञान देते हैं. तात राम कहुँ नर जनि मानहु/निर्गुन ब्रह्म अजित अज जानहु/हम सब सेवक अति बड़भागी/संतत सगुन ब्रह्म अनुरागी. जाम्बवान यहाँ सेवा के वचन पक्ष का प्रतिनिधित्व करते हैं. लेकिन ये सत्य वचन हैं, यह लिप सर्विस नहीं है. उनके वचन प्रबोधते हैं, उद्‌बोध करते हैं. वे न केवल राम की वास्तविकता से अवगत कराते हैं बल्कि स्वयं वानरों को भी उनके जीवनार्थ बताते हैं कि 'सगुन उपासक संग तहँ रहहिं मोच्छ सब त्यागि', यानी सालोक्य, सामीप्य, सारुप्य, सार्ष्टि और सायुज्य सब प्रकार के मोक्षों को त्यागकर राम की सेवा में साथ रहने वाले सगुणोपासक हैं वानर. वे हनुमान को भी उनके जीवन-सत्य और उनके अस्तित्व-अभिप्राय का ज्ञान कराते हैं. 'कहइ रीछपति सुनु हनुमाना/का चुप साधि रहेहु बलवाना/पवन तनय बल पवन समाना/बुधि बिबेक बिग्यान निधाना.' ब्रह्मा को ऊर्ध्वलोक का प्रतीक माना गया है. मायूस और अवसाद ग्रस्त बैठे वानरों का, अंगद और हनुमान का उत्साह बढ़ाने में, उनके मनोत्थान में मदद कर जाम्बवान इसे सार्थक करते भी हैं. इसलिए सुन्दरकांड में कथाक्रम का प्रारंभ ब्रह्मा से यानी जामवंत से ही होता है. लंकाकांड में भी शुरू-शुरू में ही 'सुनहु भानुकुल केतु जामवंत कर जोरि कह/नाथ नाम तव सेतु नर चढ़ि भवसागर तरहिं' कहकर सेतुबंधन के रूपक की पूरी व्याख्या कर देते हैं. वे ही नल, नील और वानरों के समूह को निर्देशित करते हैं. रावण को राम का रहस्य तो क्या, जामवंत का रहस्य भी समझ में नहीं आता. वह अंगद को कहता है : जामवंत मंत्री अति बूढ़ा/सो कि होइ अब समरारूढ़ा. लेकिन वही जामवंत युद्ध में महाप्रतापी मेघनाद की क्या हालत करते हैं : 'अस कहि तरल त्रिसूल चलायो/जामवंत कर गहि सोइ धायो/मारिसि मेघनाद कै छाती/परा भूमि घुर्मित सुरघाती/पुनि रिसान गहि चरन फिरायो/महि पछारि निज बल देखरायो/बर प्रसाद सो मरइ न मारा/तब गहि पद लंक पर डारा. जामवंत की बूढ़ी हड्डियों में इतना बल था कि वे रावण के युवा पुत्र की यह हालत कर देते हैं. राम का वृद्ध सेवक रावण के युवा युवराज से अधिक शक्तिशाली है. यह शक्ति सेवा का फल है. जामवंत राम की सत्य वचन से सेवा करते हैं. वे वक्तृता के धनी हैं लेकिन कोरी वक्तृता के नहीं.'

> राम की माधुर्य रूप से सेवा में ब्रह्मा जाम्बवान बनकर आए हैं. सीता की खोज की अवधि निकल जाने पर जब अंगद मृत्युभय से ग्रस्त हो जाते हैं तब जाम्बवान ही उन्हें ब्रह्मा वाला ज्ञान देते हैं.

जामवंत रीछ हैं और ब्रह्मा सृजन करने वाले. अंग्रेजी का शब्द बीअर इसकी व्याख्या करता है. बीअर का अर्थ रीछ तो होता है, बीअर का एक अर्थ बच्चों को संसार में लाना भी होता है. बीअर का शीतनिद्रित होकर पुनः सक्रिय होना दुनिया भर की पौराणिकियों में पुनरुन्मेष व पुनर्जीवन का प्रतीक माना गया. जामवंत भी बार-बार वानर यूथ में उत्साह का संचार करते हैं. उत्तरी जापान में एक आदिम जनजाति है आइनू, जिसका विश्वास है कि रीछ लोगों को फ़ायदा पहुंचाने के लिए अवतरित होता है और जब मरता है तो आत्माओं/देवों के लोक में चला जाता है. अमेरिका में प्रशान्त उत्तर-पश्चिमी तट की आदिम जनजातियों हैदा, त्लिनगिट और क्वाकिअत्ल में रीछ की दिव्य आत्मा के टोटेम चलते हैं. साइबेरिया की कुछ भाषाओं में एम का अर्थ रीछ होता है और अन्य भाषाओं में वही शब्द पितृदेव (Ancestral spirit) का अर्थ है. पश्चिमी क्री या ओजिबवे जनजाति में रीछ वंश के लोग आज भी जड़ों, छालों, पौधों आदि के ज्ञान व ज़मीन के प्रहरी कार्य के लिए जाने जाते हैं. अमेरिका की विन्नेबागो आदिम जनजाति में रीछ वंश के लोग गांव की पेट्रोलिंग करते हैं और अपराधों व अन्य अव्यवस्थाओं को रोकते हैं. गाते-गाते वे गाँव का चक्कर लगाते हैं. वे अपने नाम भी रीछ के नाम पर या उसकी विशेषताओं के नाम पर रखते हैं. एक नाम होगा 'तीखे पंजे'. एक होगा 'बड़ी भुजा/आलिंगन वाला'. एक होगा 'पेड़ छीलने वाला'. इनकी जो विश्व-निर्माण मिथकें हैं उनमें कहा गया है कि रीछ और 'युद्ध की आत्मा' दोनों अत्यन्त गहरे मित्र हो गए. एक अन्य कथा यह कहती है कि शुरू में आदमी नहीं थे. अर्थमेकर (पृथ्वी निर्माता) ने सिर्फ़ जानवर बनाए थे. जानवरों के साथ हुई एक बड़ी सभा में पृथ्वी निर्माता ने तय किया कि उनमें से कुछ मनुष्य बनने के लिए चुने जाएँगे. सैनिक की भूमिका के लिए रीछ को चुना गया. जामवंत की कथा इन कथाओं से कहीं न कहीं आलोकित होती है. बोधिसत्व अपने एक जन्म में रीछ थे. जामवंत समरारूढ़ा तो हैं वे बहुत भले भी हैं. रीछ के भलेपन की यही मान्यता, जामवंत की सी आश्वस्ति और दिलासा देने की प्रवृत्ति टेडी बीअर के आधुनिक अति लोकप्रिय खिलौनों में दिख पड़ती है.

शंभु भी माधुर्य-भाव से राम की सेवा में अहर्निश प्रस्तुत हैं- हनुमान रूप में. इसे यों नहीं समझना चाहिए कि इस बहाने से तुलसी ने अपने आराध्य की तुलना में सभी को उनका सेवक बता दिया है. इनमें महत्वपूर्ण शब्द है 'सेव्य' और 'अनिशं' जिन पर हम बाद में चर्चा करेंगे. फिलहाल यहाँ हम शिव तत्व की पहचान कर लें. ब्रह्मा अपर और फणीन्द्र पाताललोक के आयामों की ओर इंगित करते हैं तो शिव मध्य में हैं : मृत्युलोक या मर्त्यलोक में. शिव मध्य में हैं क्योंकि वे हैं ही विषमताओं का समाहार. शिव हैं तो योगी, ध्यानस्थ. लेकिन वे घरबार वाले हैं. यदि सम्पूर्ण परिवार किसी एक का है तो शिव का. विष्णु के अवतारों के परिवार हैं लेकिन स्वयं विष्णु ऐश्वर्य रूप में सिर्फ़ लक्ष्मीपति हैं. शिव की पत्नी पार्वती बराबर की भूमिका निभाती हैं. वे हमेशा शिव के बराबर और साथ दिखाई पड़ती हैं जबकि लक्ष्मी विष्णु के चरणकमलों की ओर. एक तो इसका कारण यह रहा होगा कि पार्वती और लक्ष्मी दोनों अपने अपने रूपक का भी निर्वाह करती हैं. शिव के साथ शक्ति को होना, पुरुष के साथ प्रकृति को होना, एक्स के साथ वाय क्रोमोसोम को होना है तो बराबर में होना है. अर्धनारीश्वर की संकल्पना तो यह है कि उन्हें न केवल बराबर होना है बल्कि संयुक्त भी होना है. भृंगी की कथा यही स्थापित करने के लिए है कि शिव और शक्ति में भेद पैदा करना मूर्खता है. उनके लिंग स्वरूप में योनि का सान्निध्य है. विष्णु की लक्ष्मी उनके चरणों में है, इसका मतलब यह नहीं कि नारी का स्थान नर के चरणों में है. रूपक यह है कि विष्णु जीवन हैं और लक्ष्मी के स्वामी. पतन तब होता है कि जब लक्ष्मी आपकी स्वामिनी हो जाए. Money is a good servant but a bad master. धन को भृत्य-स्वामी के उपयोगितावादी सम्बन्ध में न देखकर पति-पत्नी के आत्मीय सम्बन्ध में तो देखा गया लेकिन रूपक यह भी कहता था कि सम्पदा को सिर नहीं चढ़ाना है. लक्ष्मी के सर पर न चढ़ने का यह एक वैयक्तिक अर्थ होगा, लेकिन इसका एक सामाजिक अर्थ भी है. लक्ष्मी टॉप-हेवी नहीं होनी चाहिए. वह जीवन और समाज विकृत है जहाँ लक्ष्मी शीर्ष के कुछ चुनिंदा लोगों तक सुरक्षित है. फेडरल रिज़र्व एवं इंटरनल रेवेन्यू सर्विस के कुछ शोधकर्ताओं ने पाया कि संयुक्त राज्य अमेरिका के शीर्ष १ प्र.श. की नेट वर्थ निचले ९० प्र.श. से ज़्यादा है. न्यूयार्क विश्वविद्यालय के प्राध्यापक एड वोल्फ ने पाया कि १९८३ से १९८९ के बीच राष्ट्रीय नेट वर्थ ५ ट्रिलियन डॉलर बढ़ी, लेकिन उसका ५४ शीर्ष आधे प्रतिशत के पास गया यानी पूर्व से ही धनी लोगों के पास औसतन ५.४ मिलियन डॉलर का लाभ पहुँचा. प्रतिघंटे ९० डॉलर की रफ़्तार से. विश्व के मूर्धन्य धनिक (अल्ट्रा-रिच) ७०,००० लोगों के पास २.८ ट्रिलियन डॉलर की संपत्ति है. इस श्रेणी में वे लोग आते हैं जिनके पास ३० मिलियन डॉलर से ज़्यादा की संपत्ति है.

और यूएनडीपी की सन् २००३ की रिपोर्ट बताती है कि विश्व के ५४ देश आज १९९० की तुलना में ज़्यादा ग़रीब हो गए हैं, १९९० की तुलना में २१ देशों में भूख (ाद्यद्धद्धद्धद्यद्न्द) ज़्यादा बढ़ी है, १४ देशों में अब ५ वर्ष से कम उम्र के बच्चे ज़्यादा मर रहे हैं, १२ देशों में प्राथमिक शिक्षा में नामांकन १९९० की तुलना में कम हो गए हैं. ३१ निर्धनतम देशों में सहस्राब्दी के विकास लक्ष्यों की ओर बढ़ना या तो रुक गया है या पीछे जाना शुरू हो गया है. २१ देशों में मानव विकास सूचकांक गिर गया है. १९९७ से १९९८ के बीच उस संसार में जहाँ १.३ खरब लोग प्रति दिन एक अमेरिकी डॉलर से भी कम पर ज़िन्दा रहते हैं, विश्व के २०० सबसे धनी लोगों की नेट वर्थ दुगुनी होकर एक ट्रिलियन डॉलर से ज़्यादा हो गई. विश्व के तीन शीर्ष खरबपतियों की परिसंपत्तियाँ विश्व के सभी LDCs (Least developed countries) (और ६०० मिलियन जनसंख्या) के GNP (सकल राष्ट्रीय उत्पाद) से ज़्यादा है. विश्व के ८८० मिलियन लोगों तक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच नहीं है. २.६ बिलियन लोगों के पास सैनिटेशन की सुविधा नहीं है. १९६० में धनी देशों की जनसंख्या के पाँचवें हिस्से और विश्व जनसंख्या के निर्धनतम पाँचवें हिस्से में ३०:१ का अनुपात था, १९९० में ६०:१ का और १९९७ में ७४:१ का. उच्चतम आय वाले देशों के निवासी विश्व के ८६ प्र.श. सकल घरेलू उत्पाद, ८२ प्र.श. विश्व निर्यात बाज़ार, ६८ प्र.श. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और ७४ प्र.श. टेलीफ़ोन लाइनों का उपयोग करते हैं. सबसे नीचे के

> शिव हैं तो योगी, ध्यानस्थ. लेकिन वे घरबार वाले हैं. यदि सम्पूर्ण परिवार किसी एक का है तो शिव का. विष्णु के अवतारों के परिवार हैं लेकिन स्वयं विष्णु ऐश्वर्य रूप में सिर्फ़ लक्ष्मीपति हैं.

देशों में रहने वालों के पास कुल मिलाकर इनमें से किसी का १ प्र.श. से अधिक नहीं है. १९९८ के विश्व के ३१ बिलियन डॉलर के कीटनाशक बाज़ार का ८५ प्र.श. विश्व की १० शीर्ष बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के पास था. दूरसंचार के विश्व के २६२ बिलियन डॉलर के बाज़ार का ८६ प्र.श. १० बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के पास था, कम्प्यूटर में उन १० शीर्ष के पास ७० प्र.श. था, पशु औषधि में ६५ प्र.श. मैं बार-बार दस शीर्ष का उदाहरण जान-बूझकर दे रहा हूँ. दस शीर्ष और दशानन में क्या फ़र्क़ है? दशानन होना सम्पत्ति का टॉप हेवी होना है और यह विष्णु लक्ष्मी के द्वारा प्रस्तुत आदर्श के सर्वथा विपरीत है जहाँ लक्ष्मी को नीचे के अंगों की सेवा करनी है, हमारे समाज के निचले स्तरों तक लक्ष्मी को पहुंचना होगा. रावण और राम इसलिए दो सर्वथा भिन्न आदर्श हैं. शिव के भभूत, गज चर्म, नंगे बदन, फक्कड़ जीवन की तुलना में विष्णु का पूरा परिवेश वैभवशाली है लेकिन वैभव निचले स्तरों तक पहुंचता है तो विष्णुत्व है, यदि टॉप हेवी रह जाता है तो रावणत्व है. विष्णु का लक्ष्मी को सिर के पास रखकर ट्रिकल डाउन थ्योरी चलाने का कोई इरादा नहीं है. वे तो लक्ष्मी को उन्हीं की सेवा करने को कहेंगे जिन्हें पुरुष सूक्त में पुरुष का पैर कहा गया था. सभी को पवित्र करने वाली गंगा विष्णु के इसी पद से निकली है. सुन्दरकांड में विभीषण जब रावण की लात खाता है तो उसे राम के ये पैर ही अपनी शरण लगते हैं. वहीं वह उन पदों के महात्म्य का बखान करता है. इसलिए 'अलंकारप्रियो विष्णुः अभिषेकप्रियः शिवः' के शैव सिद्धांत का इशारा विष्णु के वैभव और शिव की विभूति का अवश्य है, लेकिन है इसी परिप्रेक्ष्य में. बहरहाल शिव योगी होते हुए भी एक अच्छा-ख़ासा पारिवारिक जीवन व्यतीत करते हैं और उसका अर्थ यह भी है कि यदि पत्नी हमारी शक्ति है तो परिवार भवसागर की बाधा नहीं है. शिव में मुझे बहुत से धर्म झाँकते हुए से लगते हैं. उनके चाँद में इस्लाम है, उनके त्रिशूल के शूल को सीधा कर दें तो क्रॉस बन जाता है, उनकी जटाओं में सिक्खी है, उनकी ध्यानावस्थित मुद्रा में जैनत्व है, उनकी अभय और वर मुद्रा में बुद्धत्व. विषमताओं के समाहार में यह भी कि हैं वो गौर वर्ण लेकिन उनकी नीलवर्णी मूर्तियाँ ही अधिक दिख पड़ती हैं, नीलकंठ तो खैर वे हुए ही. वे सरूप भी हैं और लिंग रूप में अरूप भी. उनके महायोग में स्थैर्य का चरम है और वे स्थाणु की तरह पूजे भी जाते हैं. लेकिन उनके नटराजत्व में गति का चरम भी है. कहते हैं कि उनसे १०८ नृत्य निःसृत हुए. वे आशुतोष भी हैं और रुद्र भी. वे भोलेनाथ भी हैं और अघोर भी. शिव के डमरू को नादब्रह्म का रूपक माना जाता है. ॐ का उद्गम, देवभाषा का भी, भाषा मात्र का भी. कैसे अन्त का यह अधिदेव शुरुआतें करता है नृत्य की, शब्द की. आश्चर्य नहीं कि तुलसी ने अपने रचनारंभ में ही उन्हें याद किया. इसी डमरू से स्ट्रिंग थ्योरी या एम. थ्योरी के वाइब्रेशंस हुए हैं, इसी नृत्य से. अणु-अणु में वह कृत्य है, इतना ही जितना सितारों में है. समुद्र की तरंगों में वह नर्तन है, मस्तिष्क के दोलन में वह है, ज्वालामुखी स्फोट के कंप में वह है और तूफ़ानों में भी, बिजली की कड़क में वह है और इन्द्रियों व प्राण की आवाज़ में भी. नदियों के बहने से लेकर पर्वतों के ढहने में. परीक्षा के पहले हृदय की बढ़ गई धड़कन में वह है, प्रलय के वक़्त तत्वों के मिश्रण में वह है. शिव के त्रिशूल के तीन निशानों पर कौन है? तीन अपवित्रताएँ : अनव (अहं), कर्म (फलप्रत्याशा वाला) और माया (भ्रम)? या तीन एषणाएँ : भूमि, स्त्री और स्वर्ण? या तीन वासनाएँ : लोकवासना, देहवासना और शास्त्रवासना? कि तीन पुर; इच्छा, क्रिया और ज्ञान के. या स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर के? या इड, ईगो या सुपर ईगो के? कि संचित, आगमि और प्रारब्ध जनित कर्म के? शिव के माथे पर यह त्रिपुण्ड भी क्या है? वे सत, रजस और तम की तीन रेखाएँ हैं या प्रमाता, प्रमाण और प्रमेय के तीन रूप, कि वे उदात्त, अनुदात्त और स्वरित्र के तीन स्वर हैं. महाभारत के कर्ण पर्व में त्रिपुरारि के त्रिपुर स्वर्ग में स्वर्ण के, वायु में चाँदी के और पृथ्वी पर लोहे के बने बताए गए हैं.

> *समुद्र की तरंगों में वह नर्तन है, मस्तिष्क के दोलन में वह है, ज्वालामुखी स्फोट के कंप में वह है और तूफ़ानों में भी, बिजली की कड़क में वह है और इन्द्रियों व प्राण की आवाज़ में भी. नदियों के बहने से लेकर पर्वतों के ढहने में.*

शिव को लेकर औपनिवेशिक व्याख्याकारों की कल्पनाएँ इस बात की ओर संकेत करती हैं कि कैसे उन्हें वैदिक और सनातन भारतीय सभ्यता से हटाने की कोशिश की जाती रही. उन्हें एक अनार्य देवता बताया गया, उन्हें एक पूर्व वैदिक देवता बताया और लिंग-योनि को शुद्धतः प्रजनन क्रिया का द्योतक बताकर तपस्या की एक पूरी परम्परा का अवमूल्यन कर दिया गया. तुलसी ने शिव की पहचान पार्वती के मार्फत यों कराई थी : तुम्हरे जान काम अब जारा. अब लगि शंभु रहे अविकारा. हमरे जान सदा शिव जोगी. अज अनवद्य अनादि अभोगी. लिंग शिव की अंग/रूप से पार की स्थिति थी, वह अंग हो गया. वह जो फार्मलेसनेस के लिए प्रतीकायित होता था वह अब एक फार्म का स्थापत्य बन गया. वह जो तेजस का और चैतन्य का प्रतीक था, वह रेतस और काम का प्रतीक बन गया. इनके लिए अंड लिंग, सदाशिव लिंग, आत्मलिंग, ज्ञान लिंग और शिव लिंग का भेद बेकार की माथापच्ची है. आत्म लिंग को तो इनका बस चले तो हस्तमैथुन का पर्याय बना दें. लिंग लय-विलय का रूप नहीं रहा वह कारण (casuation) की तरह देखा जाने लगा. अंड ब्रह्मांड का और पिंड मनुष्य का प्रतीक नहीं हैं इसके लिए. वह स्थाणु था लेकिन फिक्सेटेड ये हो गए. बिना यह जाने कि ओऽम को ध्वनि लिंग क्यों कहा जाता है और यंत्र को बिन्दुलिंग क्यों, कि शिव लिंग पर बिल्वपत्र क्यों चढ़ता है, इसके बारे मे अधकचरे फ्रायडियन निष्कर्ष निकाल दिए गए. शिव की तपश्चर्या उन्हें योग की सूत्रधार नहीं दिखी, अनार्य और पूर्व वैदिक दिखी. तमिलनाडु के विरुनेल्वेली जिले में शंकरनारायण कोइल नाम का मन्दिर उन्हें नहीं दिखा जहां शिव और विष्णु एक ही मूर्ति के दो अर्द्धांश की तरह मौजूद हैं. शंकराचार्य ने शिव और विष्णु को इसलिए एक ही सर्वव्यापी आत्म का रूप कहा था. शिवस्य हृदयं विष्णु . सेवक स्वामी सखा सिय पिय के ऐसा तुलसी कहते हैं. औपनिवेशिक व्याख्याकारों ने पहले तो शिव को वेदों में अनुपस्थित बताया जबकि गंधर्व पुष्पदंत के शिवमहिम्न स्तोत्र में एक छंद इसी बात पर है कि श्रुति उनकी महिमा अनेक रूपों में गाती है. बाद में जब वेदों में शिव शब्द की उपस्थिति बताई गई तो कहा गया कि वह तो क्वालिटी की ओर संकेत मात्र है. मज़े की बात है कि आर्य शब्द क्वालिटी की तरह आया था तो उसे इन्हीं इतिहासकारों ने जातिवाचक संज्ञा बना दिया, शिव शब्द को क्वालिटी भी उन्होंने ही बनाया. इस सब ऊठापटक का उद्देश्य भारत में वर्गों के बीच एलियनेशन पैदा करना और भारतीयों के भीतर आत्मविश्वास को खत्म करना था. शिव को तुलसी ने 'विश्वासरूपिणौ' यों ही नहीं

> आम भारतीय को उसकी साधनहीनता में भी मस्त रहने का विश्वास देने वाले शिव जो विरोधों को सम पर लाते हैं, आर्यों के विरुद्ध एक हथियार की तरह खड़े कर दिए गए.

कहा था. आम भारतीय को उसकी साधनहीनता में भी मस्त रहने का विश्वास देने वाले शिव जो विरोधों को सम पर लाते हैं, आर्यों के विरुद्ध एक हथियार की तरह खड़े कर दिए गए. प्रोफ़ेसर शेषगिरि शास्त्रिअर ने कहा- 'जबकि हिन्दूधर्म का शुरुआती भाग वेद, स्मृति और आगम पर आधारित है, इसका परवर्ती भाग दक्षिण भारत के धर्मों, तौर-तरीकों और रूढ़ियों व तमिल साहित्य पर आधारित है.' प्रो. शास्त्रिअर का कथन अनुमान भी हो सकता है लेकिन इसी कथन के आधार पर टी.आर. शेषआयंगार शिव की 'द्रविड़ियन उत्पत्ति' की कल्पना करने लगे. अब यदि शिव पूर्व-वैदिक हैं तो वे परवर्ती भाग की रचना कैसे हो सकते थे? आयंगार आर्यों के रुद्र को द्रविड़ जनजातियों का भगवान इस आधार पर बताते हैं कि वह एक पर्वतीय देवता हैं जिसकी कल्पना विंध्य के 'वाइल्ड पर्वतारोहियों' द्वारा ही हो सकती थी, मैदानों के निवासियों द्वारा नहीं. कमाल है. विंध्य द्रविड़ क्षेत्र तो कभी रहा नहीं और विंध्य में बर्फ़ीला पर्वत कब रहा? तथाकथित आर्यों के लिए मैदान ही उपलब्ध नहीं था, हिमालय भी था. दूसरा कारण वे ये देते हैं कि रुद्र का अर्थ 'लाल वर्ण वाला' होता है जो द्रविड़ नाम शिव का अनुवाद प्रतीत होता है. देखिए ये दो छोटे तर्क ही काफ़ी हो गए. डॉक्टर स्लेटर को आयंगार उद्धृत करते हैं जो भारतीय धर्म को उत्तर के आक्रामकों द्वारा लाए आर्य धर्म की संतति कहते हैं जिसका द्रविड़ सभ्यता से सुधार हुआ. यह सब जानकारियाँ दलितों की एक वेबसाइट पर हैं. दलित क्रिश्चियन की एक दूसरी वेबसाइट भी ऐसे ही प्रवाद फैलाती है. फर्गुसन की पुस्तक ट्री एंड सर्पेंट शैववाद को निश्चित तौर पर एक स्थानीय, न कि आर्यन श्रद्धा का प्रकार बताती है जो दक्षिण से मूलतः सम्बद्ध है, उत्तर की अपेक्षा. डॉ. स्टीवेन्सन शिव को एक तमिलियन देवता बताते हैं. डॉ. आपेर्ट का तर्क है कि अगस्त्य ने तमिल शिव से सीखी थी, इससे भी यह अनुमान लगाया जा सकता है कि शिव द्रविड़ देवता थे.

अब इसका क्या किया जाए कि शिव गौरवर्णी हैं, कि शिव शब्द तमिल के सिव धातुमूल से नहीं आया कि जिसका अर्थ लाल होना या क्रुद्ध होना होता है बल्कि संस्कृत की 'सि' धातु से आया जिसका अर्थ शुभ, पवित्र, उदार, सहायक होता है, कि शंभु शब्द तमिल सेंबु से नहीं आया जिसका अर्थ ताम्बा या लाल धातु होता है बल्कि संस्कृत के शम से आया कि जिसका अर्थ दूसरों की प्रसन्नता, शान्ति या कल्याण के लिए अस्तित्ववान होना होता है. गोरे अँग्रेज़ों की सारी व्याख्याएँ वर्णवादी तरह से करने की आदत हो गई थी. वरना शिव अधिकाधिक नीलकंठी हैं, लाल वर्ण के तो कभी नहीं थे. काशी और कैलाश, अमरनाथ और मानसरोवर दक्षिण भारत में नहीं हैं. हड़प्पा सभ्यता के जिन मृदापात्रों को शिवलिंग बताया गया था वे एक ग्राम, पाँच ग्राम, दस ग्राम के 'परफेक्ट इंटीग्रल रेशो' में हैं. इन मूर्ख व्याख्याओं का अंत ही नहीं है. कृष्ण काले हैं तो द्रविड़ियन हैं? द्रविड़ को रंग के कारण वैदिक के मुक़ाबले में खड़ा कर देने की जुगतें चलाई गईं लेकिन क्या ऋषि वेदव्यास काले नहीं थे. वैदिक ऋषि श्याम आत्रेय और कृष्ण अंगिरा कैसे थे? क्या बाद में चाणक्य जैसे काले ब्राह्मण उत्तर भारतीय सत्ता के सूत्रधार नहीं बने? यदि शैवधर्म दक्षिण भारत का था और वैदिक धर्म उत्तर भारत का, तो वेदांत के महान प्रचारक शंकराचार्य दक्षिण से कैसे आए, 'भक्ति द्राविड़ ऊपजी' कैसे? शिव के डमरू से तो संस्कृत भी निकली थी. वे तो नादब्रह्म हैं. सभी भाषाओं के उद्गम. अगस्त्य को तमिल सिखा देने मात्र से वे तमिल हो गए? इस तर्क से तो सातवीं शती के चीनी विद्वान सी जिंग ने जावा द्वीप के श्रीविजय शहर में संस्कृत सीखी तो क्या संस्कृत का उद्गम जावा से मानेंगे? प्रश्न यह भी है कि कॉस्मिक शिव की उत्तर दक्षिण के विवाद में भर्ती करने के प्रयत्नों के उद्देश्य क्या हैं, एक आदि पुरुष को वैदिक द्रविड़ के विवाद में घेरने की मानसिकता के अभिप्रेत क्या हैं? बात यह नहीं कि शिव दलितों के नहीं हैं, कोई भी भगवान दलितों का होगा. कुंठा में दूसरों की बिछाई शतरंज पर प्यादे की तरह इस्तेमाल होने वाले दलितों का नहीं, सब कुछ सही होने के बावजूद भी अपमानित और अनादृत, शोषित और पीड़ित दलितों का. हनुमान के रूप में शिव उन्हीं जातियों के बीच माधुर्य भाव से आते हैं और बाथम कितना ही कैसा ही उसे प्रस्तुत करें, ये हनुमान वेद विशारद हैं और इनके कान में पिघला हुआ सीसा किसी ने नहीं डाला.

राम फणीन्द्र के द्वारा भी सेवित हैं. फणीन्द्र के अवतार लक्ष्मण हैं जो ऐश्वर्य रूप से विष्णु की निरंतर सेवा शेषनागजी के रूप में करते हैं लेकिन माधुर्य स्वरूप में रामावतार के वक़्त उनकी सेवा का अवसर नहीं छोड़ना चाहते हैं और लक्ष्मण बनकर मैदान में उतर आते हैं. जो चीज़ मुझे चौंकाती है वह यह तथ्य कि अफ्रीका के ऊष्ण जंगलों से उत्तरी यूरोप के बर्फ़ीले क्षेत्रों में, ऊर्वर पूर्वेशिया से लेकर बंजर ऑस्ट्रेलिया तक हर जगह नागश्रेष्ठ पूजा के पात्र रहे हैं. स्विस मनोवैज्ञानिक जुंग नाग को अवचेतन का प्रतीक कहते हैं. हमारे भीतर का पाताललोक तो वहीं है. जुंग को नाग हमारी अत्यन्त गहरी अवचेतन संक्रिया का मनोगत प्रतिनिधि (Psychic representation) लगता है. नाग हमारी लिबिडो का प्रतीक है. शुरुआती ईसाइयत में उसे हमारी मेरु रज्जु (Spinal Cord) और मेड्युला का प्रतीक माना जाता था. लिबिडो हमारे यहां की कुंडलिनी का विकार है, हमारी सुषुम्ना और इड़ा-पिंगला नाड़ियाँ भी इसी भीतर के लोक की नागशक्तियाँ हैं. आदिमयुगीन मृदभांडों तक में नाग चित्रित हैं. विशालकाय नाग जो कहीं सूर्य, चन्द्र, तारों आदि को आक्रान्त कर समस्त भुवन को व्याप्त किए हुए हैं, तो कहीं वे गर्भिणी स्त्री के उदर पर कुंडलिनी डाले दिखाए गए हैं. वे किसी रचनात्मक ऊर्जा के प्रतीक लगते हैं. उनमें जो केंचुल उतारकर स्वयं को दाग़ों (Scars), चर्म समस्याओं (Dermatoser) और जंतुओं (ticks) से सावधिक मुक्त करने की जो नैसर्गिक क्षमता है, वह उन्हें स्वास्थ्य लाभ (Healing) से भी जोड़ती है. लंका कांड में रावण ब्रह्मदत्त प्रचंड शक्ति चलाता है जो लक्ष्मण जी की ठीक छाती में लगती है : अनंत उर लागी सही. हनुमान जी लक्ष्मण को उठाकर राम के पास ले आते हैं. तब राम लक्ष्मण को उनके स्वरूप की याद दिलाते हैं : कह रघुबीर समुझु जियँ भ्राता/तुम्ह कृतान्त भच्छक सुर त्राता. कि हे भाई, हृदय में समझो, तुम काल के भी भक्षक और देवताओं के रक्षक हो. ऐसा कहते ही 'सुनत बचन उठि बैठ कृपाला' कहा गया. अपने स्वरूप की स्मृति से उपचारित (Healed) हो जाने की कल्पना यहाँ उसी उत्स्रोत से निकली प्रतीत होती है. दुनिया भर की सारी पौराणिकियों में नाग अमरता के प्रतीक हैं. यहाँ भी उन्हें अनंत कहा गया है. नागश्रेष्ठ अपना सतत पुनर्नवन करते रहते हैं. बाइबिल में उन्हें प्रज्ञा और सूक्ष्मता का प्रतीक माना गया है. (मैथ्यू १०:१६ Be ye

therefore wise as serpents, जेन- ३:१ Now the serpent was more subtle than a beast of the field) प्लूटार्क उन्हें देवता मानता था. अपने मुख में पूँछ दबाकर वृत्त बनाना शाश्वतता का प्रतीक था, केंचुल छोड़ना पुनरोन्मेष और पुनर्जीवन का. ग्रीक और रोमन मन्दिरों की वेदियों पर वे रक्षक की तरह मौजूद हैं, जैसे वनवास में वे भगवान राम और सीता के प्रहरी की तरह रहे. जागन लगे बैठ वीरासन. उनकी कुंडली (Spiral) कुंडलिनी का ही नहीं, जगत की गत्यात्मकता का एक विराट रूपक है. मिस्र के पुराने नृत्य सर्प गति के ट्रेक का अनुसरण करते हैं. सुमेर के प्राचीनतम महाकाव्य में गिलगमेश जब झील से अमरता का पौधा निकालकर लाता है तो उसे नाग खा जाता है और अमर हो जाता है. शेषनाग भी अमर है. सुमेरियन और अक्केडियन कलारूपों में एक वृक्ष या स्तंभ भी दिखाया गया है जिसे 'विश्व धुरी' कहा गया और जिसकी नाग या नागयुग्म रक्षा कर रहा है. बाद में बाइबिल में इसी की नकल आई. २३५० ई. पूर्व की एक अक्काडियन मुद्रा में मानव आकृति के नागदेव जू या निंगिझिडा की कथा थी जो अतल जल के स्वामी हैं. शेषनाग भी क्षीरसागर में हैं. सेल्ट लोगों में सुषिलौस नाग अंतर्लोक का नाग है. बाद में यही तिआमत या पापोहिस नामक महान नाग की कथा आई जो बाइबिल के लेविआथन में रूपांतरित हुई. पश्चिमी अफ्रीका की दाहोमी पौराणिकी में दान नामक महासर्प की अनेक कुंडलियों पर सब कुछ टिका हुआ है जैसे हमारे यहाँ शेषनाग के फन पर सारे लोक. योरूबा पौराणिकी में ओशुनमारे नामक एक नवजन्म देने वाला महासर्प है. अब्जू और तिआमत प्रथम बेबीलेनियन देवताओं लाहमू और लहामू के माता-पिता हैं जो अनु और इआ नाम के महादेवों के दादा-दादी हुए. तिआमत को आधा काटकर उसके आधे-आधे हिस्से से आकाश और पृथ्वी बनाए गए. ईरान में अजीदाहक नामक महान आकाशीय सर्प की कथा है जिसने सारे ग्रहों को बनाया. कनानाइट के पूर्व फोनिशियनों में बासीलिस्क नाामक नागदेव की कथा है. इसी से लिंग देव के मन्दिर का नाम रखा गया और बाद में बेसीलिका चर्च इसी नाम से प्रेरित हुआ. मिस्री फराहों का आठवाँ वंश कई भारतीय देवताओं और देवियों की पूजा करता है और वहाँ इन्द्र एक नागदेव के रूप में है. जावा में तो आज तक नागदेव शेष कहलाते हैं. मलय मिथकों में नाग बहु शीर्ष ड्रेगन है. थाईलैंड में नाग पाताललोक (नीदरवर्ल्ड) के शासक हैं. मैक्सिको में नागल शब्द का प्रयोग रक्षक सर्प आत्माओं के लिए होता है. अंगकोरवाट मन्दिर-समूह के मुख्य मन्दिर के पथ पर सप्तशीर्ष नाग पंक्ति है. चीन में नाग कृत नामक एक भाषा है जो सर्प देवताओं की भाषा कही जाती है. प्रसिद्ध चीनी ऑपेरा वंशसुआन का अनुवाद है : श्वेत सर्प का वृत्तांत. यह ऑपेरा दो नागों के बारे में है जो आकाश के अपने स्वर्गिक आवास से नश्वर मनुष्यों की धरती पर चले आए हैं. तिब्बत में आज भी नाग शब्द को लू नाम से याद रखते हैं और नागार्जुन को वहाँ लू द्रब कहते हैं. मलय प्रायद्वीप में राजनाग हैं जो सभी समुद्री सर्पों के राजा हैं. मिस्र के इतिहास में काफ़ी लंबे समय तक सेत नामक एक शक्तिशाली नाग देवता की पूजा चली है. २५ अभिलिखित वंशों (३२००-७०० ई.पू.) तक. फराहों के मुकुट पर सेत चित्रित होता था. यहाँ एक नेहेबेकौ नामक महान सर्प है जिस पर यह विश्व टिका बताया जाता है. तुलसी ने शेष का परिचय लंका कांड में ऐसे ही दिया है : 'ब्रह्मांड भवन विराज जाके एक सिर जिमि रज कनी' जिनके एक ही सिर पर ब्रह्मांड रूपी भवन धूल के एक कण के समान विराजता है. मिस्र के अलावा प्राचीन अफ्रीका में सबसे प्रभावशाली स्थापत्य नाइजीरिया के बेनिन शहर में देखने को मिलता है. वहां स्थापत्य की सर्वप्रधान विशेषता है एक विशाल सर्प का मूर्त्तन. बाइबिल में सर्प के लिए बहुत से हिब्रू नाम आए हैं जो शेष या सर्प या फणीन्द्र के निकट हैं : सेराफ, शेफीफन, शेफा, सिफोनी. ग्रीक में सर्पेंट बदलकर हर्पेटन हो गया. जुडाइज्म में कहा गया कि सभी स्वर्गिक प्राणियों में सबसे शक्तिशाली सेराफ़ीम का अर्थ है आग उगलने वाला सर्प. संत जॉन ने प्रभु यीशु के सलीब पर होने और मूसा के नाग के स्तंभ पर होने की तुलना करते हुए दोनों को मोक्ष का प्रतीक माना है. ईसाई परम्परा में एलेक्ज़ेन्ड्रिया के फिलो की कथा भी है जिसमें नाग को 'प्राणियों में सबसे आध्यात्मिक' कहा गया. फणीन्द्र के फण की ध्वनि ग्रीक टाइटन ओफिअन में भी आती है और टाइफन भी जो कॉस्मिक समुद्र का नाग है. एथेंस और सम्पूर्ण ग्रीक सभ्यता का संस्थापक केक्रोप्स अर्द्ध नाग था. ग्रीक पौराणिकी में ड्रको और हाइड्रा नामक दो आकाशीय नाग हैं जो तारक समूह के रूप में आज भी चीन्हे जाते हैं. थाईलैंड के नोंगखई में पयनाग के मुंह से आग निकलने की घटना का वार्षिकोत्सव होता है जिसे देखने दुनिया भर से चार लाख लोग इकट्ठा होते हैं. बताते हैं कि मेकांग नदी के भीतर एक मुआंगबदन नामक शहर है जहाँ नागों के पिता रहते हैं : पयनाग. वे दिखाई नहीं देते लेकिन प्रतिवर्ष मेकांग नदी से आग की लपट निकलने का यह प्राकृतिक और अव्याख्यायित दृश्य होता ज़रूर है. कभी १०० आग के गोले निकलते हैं, कभी एक हज़ार भी. स्कॉटलैंड का नेसी भले ही आज तक नहीं देखा गया हो लेकिन पयनाग और वैसे ही विशाल नागों के दर्शन का दावा करने वाले और उसे कैमरे या वीडियो पर क़ैद करने वाले थाईलैंड में बहुतेरे हैं. तटीय कर्नाटक के उडुपी ज़िले (ध्यान रखें उलूपी नामक महाभारतकालीन प्रसिद्ध नागकन्या को) में नागमंडल के नाम से रात भर चलने वाला बहुत महँगा उत्सव होता है. आजकल यह दक्षिण कनारा के अन्य जिलों में भी चलता है. इसी तर्ज़ पर केरल में सर्पम तुल्लाल, सर्पम कालि नामक उत्सव हैं. म्यानमार का नाट नामक सर्पिल देवता और बाल्टिक का नाक नामक जल सर्प देवता नाग के ही भाषाई स्थानान्तर हैं. सोरोर औरेनिलया ने लिखा है : Naga is one of a handful of rare words surviving the loss of the first universal language सोलोमन द्वीप में अगुण नामक एक नागदेवी की कथा चलती है जो सभी देवताओं की अधिराज्ञी है. हर पेड़ का पहला नारियल उसे ही अर्पित होता है. फीजी में देगी नामक नागदेवता हैं. गिल्बर्ट द्वीप में विशालकाय नाग है तुना (जिसका अर्थ है लिंग) जिसकी पत्नी है हिना. न्यूगिनी में दारिबी जनजाति के वृत्तांत नागों को मनुष्यों से श्रेष्ठतर बताते हैं. फिलीपीन में उड़ने वाले सर्पों की कथा है, वहाँ की आदिम परम्परा यह कहती है. त्याना के अपोलोनिअस को जादू की शिक्षा कश्मीर के नागों ने दी थी. कौडिन्य ऋषि ने कंपूचिया में नागराज की पुत्री सोमा से विवाह किया था. मय सभ्यता में

> सुमेर के प्राचीनतम महाकाव्य में गिलगमेश जब झील से अमरता का पौधा निकालकर लाता है तो उसे नाग खा जाता है और अमर हो जाता है. शेषनाग भी अमर है.

गुकुमत्ज पंखों वाला नाग देवता था. उसका अज्तेक नाम कुएत्जालकोअरल है. हिब्रू बाइबिल में नागश नामक बोलने वाला साँप है जो ईडन के बगीचे में निषिद्ध ज्ञान के साथ मौजूद है. यहाँ बुक ऑफ़ जिनेसिस कहीं भी उसे शैतान नहीं बताती बल्कि विवरण से पता लगता है कि सर्प ने जो बोला, वह सच बोला. उसकी सूचना वर्ज्य हो सकती है लेकिन झूठ नहीं. भारत में जैन धर्म मे भगवान पार्श्वनाथ के ऊपर भी नाग उसी प्रकार अपने फणों की छाया किए हुए है जैसे विष्णु के ऊपर. बस पार्श्व खड़े हैं, विष्णु लेटे हैं. जल में नाग राजा और नागरानी उनकी पूजा करते हुए बताए गए हैं. बुद्ध की रक्षा में भी नाग इसी तरह फण ऊपर किए बताए गए हैं. थेरावेद सूत्र में बुद्ध के द्वारा उनके अपने पुत्र राहुल को दी गई शिक्षा का अध्याय उरवग्ग (सर्प का अध्याय) कहा गया है. इसका प्रथम खंड उरग सुत्त (सर्प सूत्र) है जो साँप की केंचुल की तरह ही सारी मानवीय वासनाओं को उतारकर रख देने वाले भिक्षुक के बारे में बताता है. मैंने ये सारे विवरण विस्तार से इसलिए दिए हैं कि सनातन धर्म के शेषनाग की सनातनता और सर्वव्यापकता स्पष्ट हो जाए. ये सारे विवरण तब के हैं जब नाग का देवत्व स्वीकार्य था. लेकिन धीरे-धीरे पृथक पहचान बनाने के चक्कर में नाग को खलनायक की तरह चित्रित करना भी शुरू किया गया. मैथ्यू २३:३३ में यीशु ने कहा Ye serpents, ye generation of vipers, how can ye escape the danmnation of hell. मूसा के समय तक साँप का आदरपूर्वक चित्रांकन था लेकिन ८वीं शती के अंत में जूडा के सिंहासन पर बैठे बादशाह हेजकिआ ने उन सभी उच्च स्थानों को हटा दिया, मूर्तियाँ तोड़ डालीं, बगीचे काट दिए और वे बर्तन हटा दिए जिसमें मूसा ने साँप बनाए थे क्योंकि तब तक भी इसरायल के बच्चे उनके सामने अगरबत्ती जलाते थे. ये नकारात्मक विवरण तब भी पृथ्वी पर मनुष्य के विकास में नाग की शक्तिशाली भूमिका का स्वीकार हैं. शेषनाग के रूप में अस्तित्व के जल आयाम का समादर है, ठीक वैसे ही जैसे ब्रह्मा आकाश और शिव कैलाश या पृथ्वी का, कि जल जीव भी राम की सेवा में निरन्तर निरत है. इस कारण उनकी भी उतनी रक्षा होनी चाहिए जितनी अन्य जीवों की. कश्मीर में पानी के स्रोत को 'नाग' कहते हैं. कश्मीर की शुभ और पवित्र नदी वितस्ता (झेलम) वेरिनाग के पास एक स्रोत से निकलती है. शेषनाग झील भी यहीं है. कश्मीर में छोटे स्रोत को नेगिन बोलते हैं. सत्रहवीं शती में तिब्बत के पाँचवें दलाई लामा ने झील के किनारे एक छोटा सा मन्दिर बनाया तो लू (नाग) को समर्पित किया. नेपाल में नागराज या नागाधवास नाम की झील है जिसमें बहुत से कॉस्मिक नागों का वास बताया गया है. नाग जैसा कि ऊपर हमने देखा जल के साथ अधःस्तल के भी प्रतीक रहे हैं. ल्हासा में दलाई लामा का अभूतपूर्व महल पोताला कहलाता है. पोताला परिसर में ८४ महासिद्धों की नाग रूप में छवियाँ अंकित हैं जो सम्भवतः तांत्रिक या यौगिक प्रथाओं और उपलब्धियों की प्रतीक हैं. महाभारत में नागों को पाताल में रहता बताया गया है इसलिए जे.ई. सिरलॉट (अ डिक्शनरी ऑफ़ सिंबल्स) ने साँप को 'Wisdom of the deeps' का प्रतीक बताया है.

लक्ष्मण शेषनाग के अवतार हैं और उन्हें हमेशा अपनी आंतरिक शक्ति पर भरोसा रहा है. सुन्दरकांड में वे 'देव' या भाग्य को एक बाहरी शक्ति मानकर कहते हैं : नाथ दैव कर कवन भरोसा/सोषिअ सिन्धु करिअ मन रोसा. मन की इस शक्ति पर विश्वास उन्हें इसीलिए है क्योंकि उनकी कुंडलिनी जागृत है. वे शेषनाग साइको फिज़िकल एनर्जी का रूपक हैं. वे एक पोटेंशियल ऊर्जा हैं और उन्हें राम से, विष्णु से, जीवन से अलग नहीं माना जा सकता. कुंडलिनी ऊर्जा हमारी चेतना का आधार है. उन शेषनाग की अनेक कुंडलियों (coils) को कश्मीरी शैववादियों ने परा कुंडलिनी, प्राण कुंडलिनी और शक्ति कुंडलिनी नाम दिए हैं. ऊर्जा का सतत् प्रवाह हमारे भीतर की ग्रंथियों (Knots) से प्रभावित होता है. तीन गाँठें ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र की हैं. क्रमशः मेरुदंड के नीचे, हृदय केन्द्र पर और दोनों भ्रूओं के बीच. हठयोग प्रदीपिका में आरंभ, घात, परिचय एवं निष्पत्ति की चार अवस्थाओं से गाँठे खुलती हुई बताई गई हैं और तब कुंडलिनी का ऊर्ध्वारोहण पूर्ण होता है. नाग के मुँह से आग निकलने का रूपक कुंडलिनी के संदर्भ में सच होता है क्योंकि यह आग्नेय ऊर्जा (fiery energy) मानी जाती है. नाथ परम्परा में इसकी ऊष्णता के कारण इसे सूर्य कहा गया है. तांत्रिक बुद्धत्व में किसी देवता को कोई बाहरी शक्ति नहीं माना जाता बल्कि मनुष्य के अपने रूपांतरित मन की एक अवस्था के रूप में देखा जाता है. इसी रूप में कुंडलिनी एक सर्प शक्ति है. भारत में नागा साधुओं का एक बड़ा संप्रदाय है. ये साधु बाहर का सब कुछ त्यागकर अपनी आंतरिक शक्ति के स्फुरण में लगे रहते हैं. इसलिए फ्रायड की लिबिडो से कुंडलिनी की तुलना बहुत सतही है. उस लिबिडो लॉस के लिए तो एंटीडिप्रेसेंट आते हैं, वियाग्रा और न जाने क्या-क्या? लेकिन वह लिबिडो नीचे की ओर ले जाती है और यह कुंडलिनी ऊपर की ओर. वह लिबिडो फ्रायड के अनुसार इंस्टिंक्चुअल एनर्जी है जो सभ्यतागत व्यवहार की रिवायतों से टकराती है और मनुष्य के मन में तनाव पैदा होता है. यह तनाव फ्रायड के शब्दों में न्यूरोसिस है. लेकिन भारत में कुंडलिनी प्रवृत्ति नहीं है, वह योग से जागृत होती है जो 'चित्तवृत्ति का निरोध' है. उसका परिणाम मानसिक व आत्मिक शान्ति है, मनस्ताप नहीं. यह elan vital है. लिबिडो की तरह यह भी जीवन-रचना करती है. लेकिन यह लक्ष्मण के अनुतत्व को पहचानने के लिए काफ़ी नहीं. लक्ष्मण को पहचानने के लिए कुछ सूत्र स्वयं तुलसी ने दिए हैं : लच्छन धाम राम प्रिय सकल जगत आधार. लक्ष्मण शेष की तरह फुफकार भी करते हैं. माखे लखनु कुटिल भइँ भौंहें/रदपट फरकत नयन रिसौंहें. वह फुफकार उनका स्वभाव है. भरत के चतुरंगिणी सेना समेत आने की खबर सुनने पर 'अति सरोष माखे लखनु' के रूप में पुनः वे तमतमाते हैं. जनक की सभा में वे भगवान (राम) से कहते हैं : 'जौं तुम्हारि अनुसासन पावौं/कंदुक इव ब्रह्माण्ड उठावौं'. यहाँ लक्ष्मण शेषावतार होने से यह सब स्वभाव से बोल रहे हैं, अभिमान से नहीं : 'कहउँ सुभाउ न कछु अभिमानू'. उनके क्रोध ('डगमगानि महि दिग्गज डोले') में उनके उसी कॉस्मिक स्वरूप का वर्णन है. इसलिए धनुष भंग के समय 'चरन चापि ब्रह्माण्डु' की बात कही गई है. वे शेष हैं तो कड़वा सत्य बोलते हैं. परशुराम को वे 'कटुवादी' लगते भी हैं. 'सुनि कटु वचन'. परशुराम उन्हें जाने बिना 'विष रस भरा कनक

> लिबिडो फ्रायड के अनुसार इंस्टिंक्चुअल एनर्जी है जो सभ्यतागत व्यवहार की रिवायतों से टकराती है और मनुष्य के मन में तनाव पैदा होता है. यह तनाव फ्रायड के शब्दों में न्यूरोसिस है. लेकिन भारत में कुंडलिनी प्रवृत्ति नहीं है, वह योग से जागृत होती है जो 'चित्तवृत्ति का निरोध' है.

> अनन्त नाम विष्णु के भी हैं जो जीवन का प्रतीक हैं, कि अरबी भाषा में नाग के लिए प्रचलित शब्द है अल हय्या और जीवन के लिए प्रचलित शब्द है अल हयात और भगवान के लिए प्रचलित संज्ञा है अल-हे. इसलिए शेषनाग जीवन की रक्षा करने वाले नाग हैं.

घटु जैसे' कह देते हैं. लक्ष्मण इसी बात पर हँसते हैं 'सुनि लछिमन बिहसे बहुरि'. लक्ष्मण इसलिए हँसते हैं क्योंकि परशुराम उनके वास्तविक स्वरूप को जाने बिना निन्दा में ही सहज सत्य कह गए हैं. शेष विष रस भरे तो होंगे लेकिन यह वह विष नहीं है जो अहितकारी हो. वहीं शेष जो विष्णु के आश्रय हैं, अयोध्या कांड के आरंभ में शिवजी के वक्षः स्थल पर तुलसी ने सुशोभित बताए हैं, 'यस्योरसि व्यालराट्.' इससे तुलसी एक बार फिर शैव वैष्णव एकता के संकेत देते हैं. जब राम वन गमन के लिए तैयार होते हैं तो लक्ष्मण कहते हैं : मोरे सबइ एक तुम्ह स्वामी/दीनबंधु उर अन्तरजामी. वे यह बात सिर्फ़ माधुर्य के लिए नहीं कह रहे बल्कि ऐश्वर्य रूप की ओर इशारा करने के लिए भी बोल रहे होंगे. लक्ष्मण निषाद के साथ जब बातें करते हैं तो उनके इस शेष वाले रूप का अर्थ और समझ में आता है. 'सपने होइ भिखारि नृपु रंकु नाकपति होइ/जागें लाभु न हानि कछु तिमि प्रपंच जियँ जोइ. विष्णु के सदा साथ रहने वाले शेष उनके प्रपंच तंत्र या माया को भी सबसे ज्यादा समझते होंगे. इस वैराग्य के साथ ही शेषनाग में लोक हितकारी फुफकार कम नहीं है. सुग्रीव के मद में डूबने की बात हो या रावण को 'आवा कालु तुम्हार' की चेतावनी हो, लक्ष्मण हर जगह अपनी इस फुफकार को दिखाते हैं. उन्हें उन सर्पों की तरह नहीं समझना चाहिए जिनको लेकर ब्लावट्स्की ने सर्प को 'Seduction of strength by matter' का प्रतीक कहा. वे जैनस मेडिया, हरक्यूलीज़ ओम्केल और एडम-ईव की दुनिया के नाग नहीं हैं, वे इनकी तरह बुराई के सिद्धांत (principle of evil) का प्रतिनिधित्व नहीं करते. उन्होंने राम से भक्तियोग पाया है, उनमें वैराग्य है. वासना (temptation) के प्रतीक यूरोपीय नागों से ठीक उल्टे. ग्रीक आर्टेमिस, हेकेट, पर्सीफोन आदि देवता अपने दोनों हाथों में साँप लपेटे हैं, मेड्युसा द गार्गन या एरिनयस के तो बाल ही साँपों के हैं. लेकिन वहाँ सर्प सेक्सुअल लिबिडो के प्रतीक होंगे, यहाँ शेषनाग के मधुर रूप लक्ष्मण निषाद को कहते हैं जानिअ तबहिं जीव जग जागा/जब सब विषय विलास बिरागा. वे 'ग्रेट सर्पेन्ट ऑफ गुड' अगाथडेमन से तुल्य हैं, न कि 'ग्रेट सर्पेन्ट आफ ईविल' काकोडेमन से. यदि वे भावुक हैं तो इससे नाग के आदिम (primordial) प्रतीक होने वाली-most primitive and basic strata of life- मनोविश्लेषणवादी बात ज़रूर सिद्ध होती है. वैसे कुंडलिनी भी रिफ्लेक्स साइकी की विशेषता रखती है. नाग की क्षिप्रता (swiftness) शूर्पणखा के नाक-कान काटने वाले प्रसंग में दिखती है : लछिमन अति लाघवँ सो नाक-कान बिनु कीन्हि. लक्ष्मण Lax-man नहीं हैं. वे फुर्तीले हैं. द्रुत और तत्पर. शेषनाग के श या सर्पेन्ट के S में वह गति है. दक्षिणी कैमरून में पिग्मी साँप को एक रेखा के रूप में चित्रित करते हैं और विश्व के कई गुहा रेखांकनों में उन्हें वैसे ही चित्रित किया गया है. वे एक रेखा हैं, मगर जीवंत रेखा जिसे आन्द्रे वीरेल 'an abstraction in flesh and blood' कहता है, मांस और ख़ून के साथ अमूर्तन और एक अन्य विश्लेषक जिसकी व्याख्या यों करता है : The serpent is a vertebrate creature embodying the lower psyche, hidden psychosis and what is unusual incomprehensible and mysterious, an incisible infinity. इन्फिनिटी तो वे हैं ही और इसीलिए उनका एक पर्याय अनंत रह ही गया है. उनका रहस्य न मेघनाद को समझ में आता है न रावण को. दोनों शक्ति लगने के बाद उनके मूर्छित शरीर को उठाने का प्रयत्न करते हैं और दोनों ही से नहीं उठता किंतु हनुमान दोनों बार उनके सामने से उन्हें सहज ही उठाकर ले जाते हैं और इस जगदाधार पर मेघनाद/रावण विस्मय करते रह जाते हैं. ज्यां चेवेलीयर और अलैन घीरब्रांट अधिक नज़दीक हैं शेषनाग की भारतीय अवधारणा के जब वे नाग को 'manifestation of the holiness of nature का प्रतीक कहते हैं. उनके शब्द हैं : It makes its appearance in the sunlit world like a ghost which one can touch but which slips through one's fingers. So, the serpent evades time which can be clocked, space which can be measured and logic which can be rationalized, to the lower reaches from which it came and in which it can be imagined timeless, changeless and motionless in the fullness of its life. ध्यान रखें कि अनन्त नाम विष्णु के भी हैं जो जीवन का प्रतीक हैं, कि अरबी भाषा में नाग के लिए प्रचलित शब्द है अल हय्या और जीवन के लिए प्रचलित शब्द है अल हयात और भगवान के लिए प्रचलित संज्ञा है अल-हे. इसलिए शेषनाग जीवन की रक्षा करने वाले नाग हैं. बुद्ध हों या पार्श्वनाथ जहाँ भी जीवन की श्रेष्ठता है वहाँ वे हैं. रेने गुएनॉन ने उचित ही कहा है कि Serpent symbolism is in fact, linked to the notion of life itselfh. शेषनाग जी जीवनाश्रय हैं और श्रुति कहती है कि वे प्रत्येक कल्प के अंत में सृष्टि को स्वयं में अंतर्भूत ही कर लेते हैं. यह मान्यता औरोबोरास या एम्फिस्ब्रयना सर्पदेवों के मिथकों से भी पुष्ट होती है जहाँ वे स्वयं अपनी ही पूँछ को मुख में लिए हुए हैं और इस तरह वे ऑल इन ऑल होने का, जीवन के वृत्त का, जीवन के चक्र के प्रतीक बन जाते हैं. लक्ष्मण इसी जीवन रूप राम की सेवा के लिए अवतरित हुए हैं. यह सेवा कोई आर्थिक गतिविधि नहीं है. ब्रह्मा, शंभु और फणीन्द्र किसी सर्विस सेक्टर में नहीं लगे हुए हैं. राम से उनके रिश्ते मुवक्किल के नहीं हैं और वे राम की अर्थव्यवस्था का तृतीयक क्षेत्र भी नहीं हैं. न उनकी सेवाओं का विपणन सम्भव है. यह तो ऐसी सेवा है जिसमें न प्रत्याशा है, न कोई शर्त. इनके रिश्ते तो हज़ारों अदृश्य तागों से बँधे हुए हैं. यह सेवा नित्यप्रति की है. यह कोई स्पेअर टाइम में की जाने वाली सेवा नहीं है. यह तो अहर्निश सेवा है. दूसरे 'ब्रह्माशंभुफणीन्द्रसेव्यमनिशं' की टीका जितनी ब्रह्मा, शिव या शेषनाग पर है, उतनी राम पर भी. 'सेवित' न कहकर 'सेव्य' कहना राम की योग्यता पर टीप दर्ज़ करना है कि मूल प्रश्न अर्हता का प्रश्न है. कि राम यह डिज़र्व करते हैं, क्योंकि वे अपने अस्तित्व की संकीर्ण परिधियों को अतिक्रांत कर 'गीर्वाण शान्तिप्रदं' के लिए कृतसंकल्प और कटिबद्ध हैं, इसलिए इन तीनों की अक्षय शक्तियों का सतत सिंचन राम को ऊर्जस्वित किए रहता है.■

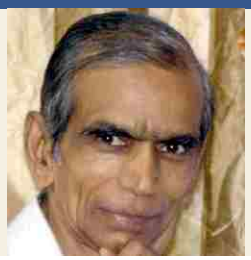

बृजेन्द्र श्रीवास्तव

लेखक-समीक्षक, साहित्य एवं कला, विज्ञान एवं अध्यात्म, ज्योतिष एवं वास्तु, ब्रह्मविद्या एवं ब्रह्माण्ड विज्ञान जैसे विविध विषयों पर निरंतर लेखन. ५० से अधिक शोध-पत्र विश्वविद्यालयों व राष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्रस्तुत. जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर में ज्योतिर्विज्ञान अध्ययनशाला के अतिथि अध्यापक.

सम्पर्क : अपरा ज्योतिषम, २६९, जीवाजी नगर, ठाठीपुर, ग्वालियर-४७४०११

ईमेल - brijshrivastava@rediffmail.com मोबाइल - ९४२५३६०२४३

चिन्तन

अपरिग्रह

जीवन चलाने के लिए आवश्यक वस्तुओं का संग्रह करना प्रत्येक अच्छे गृहस्थ का कर्तव्य है. ऐसी स्थिति में अपरिग्रह का क्या अर्थ और क्या आवश्यकता है? क्योंकि परिग्रह का अर्थ है ग्रहण करना, इकट्ठा करना इसमें 'अ'-लगाने से अ-परिग्रह शब्द बना जिसका अर्थ हुआ संग्रह नहीं करना. तो क्या गृहस्थ को जीवन चलाने की वस्तुएं अनाज आदि मासिक, वार्षिक स्तर पर इकट्ठा नहीं करना चाहिए? वस्तुतः अपरिग्रह का जोर भोग विलास की वस्तुएं बहुत अधिक मात्रा में इकट्ठा नहीं करने पर है क्योंकि ऐसी वस्तुएं मानसिक स्तर पर हमें पड़ौसी के प्रति ईर्ष्या और प्रतिस्पर्द्धा की ओर ले जाती हैं, झूठे विज्ञापनों के फेरे में पड़ने से इन्हें हम अपनी प्रतिष्ठा की निशानी मानने लगते हैं. आजकल तो अमेरिकी लाइफ स्टाइल की नकल का चलन बढ़ने से १० रुपए की आमदनी होने पर भी १५ रुपए का खर्च किश्तों में करके केवल देखादेखी में हम अनावश्यक भोग विलास की वस्तुएँ इकट्ठा करते जा रहे हैं ऐसे में अपरिग्रह को ठीक से समझने की और भी जरूरत है.

वैसे हमारे शरीर की आवश्यकताएं कम हैं, वस्तुएं श्रेष्ठ डिजाइन की हों, ब्राण्ड की हों, महंगी हों ताकि हमारी अलग पहचान दिखे यह मांग हमारे मन की होती है. फिर इनकी भी क्या कोई सीमा है? यहां भी मन की आसक्ति, लालच दूसरों से ऊंचा दिखने का अहंकार आगे रहता है. रोज-रोज बदलने वाले फैशन के कारण हमारे पास कितनी कमीजें, जूते, साड़ियां, मोबाईल व गाड़ियां इकट्ठा होती जाती हैं. हमारी इस मनोवृत्ति का दूरगामी बुरा प्रभाव पड़ता है यह हम नहीं जानते. इसके कारण मँहगी वस्तुएं और मँहगी होती हैं, सस्ती वस्तुएं, मांग कम होने से मिलती ही नहीं. मँहगी वस्तुओं की इसी लालसा के कारण ऊंचे वर्ग में भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है जिसकी देखा देखी मध्य व निम्न वर्ग में भी भ्रष्टाचार बढ़ रहा है. इस प्रकार अपरिग्रह का पालन नहीं करने से गरीब और अमीर के बीच अन्तर बढ़ता जाता है. धर्मशास्त्र में इसीलिए मनु ने अपरिग्रह को मनुष्य के समाज के प्रति आचरणों में प्रमुख स्थान दिया और घोषित किया कि 'आचारः प्रथमो धर्मः' आचरण ही सबसे पहला धर्म है. यदि कोई कहे कि यह कैसे हो सकता है. भगवान की सेवा पूजा ही असली धर्म है तो वह गलती पर है. धर्मशास्त्र में समाज के प्रति आचार की पांच बातों को शामिल करते हुए जो आचरण संहिता बनाई गई है उसे 'यम' कहा गया है. अपरिग्रह सहित ये यम पांच हैं- अहिंसा, सत्य, अस्तेय अर्थात चोरी न करना, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह.

मनु की यों तो हम कई बातों में आलोचना करते हैं पर इन्हीं मनु ने सामाजिक आचरण के इन पांच नियमों वाले यमों को, ईश्वर की निजी पूजा आराधना और स्वाध्याय आदि जिन्हें 'नियम' कहा गया है, से उपर रखा है तथा यमों को धर्म की कसौटी माना है, निजी पूजा पाठ को धर्म नहीं माना-

यमान सेवेत सततं, न नियमान केवलान बुधः।
यमान पतत्य कुर्वाणो, नियमान केवलान भजन।।

बुद्धिमान को चाहिए कि वह केवल निजी पूजा-पाठ रूपी नियम का ही पालन नहीं करे, यमों का भी नियमित पालन करे. जो केवल नियम का तो पालन करता है और यम का नहीं, वह धर्म से गिर जाता है. सामाजिक समता और सामाजिक न्याय को स्थापित करने में सहायक होने के कारण इन यमों को सभी देश, सभी काल में आचरण योग्य कहा गया है.

> *बदलने वाले फैशन के कारण हमारे पास कितनी कमीजें, जूते, साड़ियां, मोबाईल व गाड़ियां इकट्ठा होती जाती हैं. हमारी इस मनोवृत्ति का दूरगामी बुरा प्रभाव पड़ता है.*

अपरिग्रह सहित इन पांचों यमों का महत्व दुनिया को खुशहाल, शोषण मुक्त बनाने में तो है ही, हमारा आत्म उत्थान भी इनके बिना नहीं हो सकता. क्योंकि हम अध्यात्म में विराट विश्व की आत्मा से जुड़ने की बात करते हैं तो पहले समाज से जुड़ना होगा. इसीलिए पतंजलि ने योग सूत्र में ईश्वर रूपी छत पर पहुँचने की जो ८ सीढ़ियां बनाई हैं उनमें यम पहली सीढ़ी है, नियम दूसरी और आसन-प्राणायाम, प्रत्याहार, धारण, ध्यान, समाधि यह क्रम है.

महावीर स्वामी ने तो जैन धर्म में अपरिग्रह सहित पांचों यमों को धर्म की आधार शिला ही कहा है.

इसलिए व्यक्तिगत स्तर पर अपरिग्रह की छोटी-सी पहल की बड़ी महिमा है, यह समाज में विषमता को कम करती है और आत्म कल्याण भी. ■

प्रभुदयाल मिश्र

ग्राम बर्माडांग, जिला टीकमगढ़ मध्यप्रदेश में जन्म. सागर विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. महर्षि महेश योगी के साथ आध्यात्मिक पुनरुत्थान आन्दोलन के सिलसिले में संपूर्ण भारत यात्रा. मध्य एशिया के तजाकिस्तान और उजवेगिस्तान गणराज्यों में गीता और भारतीय योग पर व्याख्यान. विभिन्न आध्यात्मिक एवं साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध. प्रकाशित कृतियां : सौंदर्यलहरी काव्यानुवाद, सबके लिए गीता, उत्तर पथ, मैत्रेयी, वेद की कविता (वैदिक सूक्तों का काव्यान्तर), वेद की कहानियाँ, तंत्र दृष्टि और सौन्दर्य सृष्टि, योग के सात आध्यात्मिक नियम, ईश्वर का घर है संसार. सम्मान : मध्यप्रदेश संस्कृत अकादेमी द्वारा 'व्यास सम्मान', मध्यप्रदेश लेखक संघ द्वारा 'पुष्कर सम्मान', पेंग्वुन पब्लिशिंग हाउस द्वारा 'भारत एक्सीलेन्सी एवार्ड', वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद् द्वारा 'महाकवि केशव सम्मान'. सम्प्रति : अध्यक्ष, महर्षि अगस्त्य वैदिक संस्थानम्, भोपाल.

सम्पर्क : ३५, ईडन गार्डन, राजा भोज मार्ग, भोपाल म.प्र. ४६२०१६ ईमेलः prabhu.d.mishra@gmail.com, www.vishwatm.com

माता भूमि और पृथिवी-पुत्र

(काव्यान्तर पृथिवी सूक्त)

(अथर्ववेद- कांड १२, सूक्त १, ऋषि-अथर्वा और देवता पृथिवी)

यां द्विपादः पक्षिणः संपतंति हंसाः
सुपर्णाः शकुना वयांसि
यस्यां वातो मातरिश्चेयते रजान्सि
कृंवन्श्च्यावर्यश्च वृक्षान्
वातस्य प्रवामुपवामनु वात्यर्चिः।५१।

हंस, शकुन, सुपर्ण,
पक्षी द्विपद उड़ते जिस धरा पर
वृक्ष, रज ले साथ अपने
गगन गामी वायु वहती
अनुसरण उसका कभी
वन-वन बड़ी ही तीव्रता से
अग्नि करता है.

यस्याम् कृष्णमरुणम् च संहिते
अहोरात्रे विहिते भूम्यामधि
वर्षेण भूमिः पृथिवी वृतावृता
सा नो दधातु भद्रया प्रिये धामनिधामनि।५२।

रात दिन जिसमें गुंथे हैं कृष्ण, उज्ज्वल
मेघ के जल से नहाई विमल धरती
हो हमें हितकर, हमें वह दे धाम
रहने के लिए उत्तम.

द्यौश्च म इदं पृथिवी चान्तरिक्षम् च मे व्यचः
अग्निः सूर्य आपो मेधाम् विश्वे देवाश्च सं ददुः।५३।

भूमि-द्यौ, आकाश, पावक, सूर्य, जल
दें हमें सब देवता शुभ बुद्धि, मेधा
अति कृपा पूर्वक.

अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम
भूम्याम् अभीषाडस्मि
विश्वशाडाशामाशाम्
विषासहिः।५४।

है मुझे सब सह्य
ऊष्मा, शीत, सुख, दुख
भूमि प्रिय प्रियतर
अधिक सबसे मुझे
शत्रु हो कैसा
कहीं भी
दिशा कोई हो
पराजित कर सकूँ
उसको सदा निज शौर्य से.

अदो यद् देवि प्रथमाना पुरस्ताद्
देवैरुक्ता व्यसर्पो महित्वम्
आ त्वा सुभूतमविशत्
तदानीमकल्पयथाः प्रदिशश्चतस्रः।५५।

अपरिमित महिमा
तुम्हारी देवि
तुम बहुधा
प्रशंसित सुरगणों से
कीर्ति फैली चतुर्दिक
हो प्रतिष्ठित
अब सदृशः.

क्रमशः...

गीता के ये श्लोक **प्रो. अनिल विद्यालंकार** (sandhaan@airtelmail.in) द्वारा रचित गीता-सार से लिए जा रहे हैं, जिसमें गीता के मुख्य विषयों पर कुल १५० श्लोक संगृहीत हैं.

विषय : पुरुष और प्रकृति

अनुबंधं क्षयं हिंसाम् अनवेक्ष्य च पौरुषम्.
मोहादारभ्यते कर्म यत् तत् तामसमुच्यते..

गीता १८-२५

किसी कर्म के परिणाम या हानि को या उस कर्म में होने वाली हिंसा को और अपनी सामर्थ्य को ध्यान में रखे बिना अज्ञान के कारण जो कर्म किया जाता है उसे तामसिक कर्म कहते हैं.

तमोगुण की अवस्था में रहनेवाला व्यक्ति विवेकपूर्वक कर्म नहीं करता. उसके कर्मों में अज्ञान, आलस्य और मोह की प्रधानता रहती है. वह अपने कर्म का परिणाम सोचे बिना ही कर्म आरम्भ कर देता है. न वह यह देखता है कि उसके कर्म से कितनी हानि होगी. क्योंकि उसे अपनी सामर्थ्य का ज्ञान नहीं होता इसलिए वह ऐसे कर्म भी करने की कोशिश करता है जो उसके बूते के बाहर होते हैं. तामसिक कर्ता अविवेक से कर्म करते हुए स्वयं अपने हित का भी ध्यान नहीं रख सकता. राजसिक कर्ता केवल अपने स्वार्थ से ही कर्म करने में संलग्न रहता है, इसलिए प्रायः उसकी औरों से टकराहट रहती है. केवल निष्काम भाव से कर्म करनेवाला सात्त्विक कर्ता ही शांति और प्रसन्नता का जीवन जीता है.

अनुबन्धं : परिणाम, **क्षयं :** हानि, **हिंसा :** हिंसा, **च :** और, **पौरुषम् :** अपने सामर्थ्य को, **अनवेक्ष्य :** न देखकर, **यत् कर्म :** जो कर्म, मोहात् **आरभ्यते :** मोह से आरम्भ किया जाता है, **तत् तामसम् उच्यते :** उसे तामसिक कर्म कहा जाता है.

दातव्यमिति यद् दानं दीयतेऽनुपकारिणे.
देशे काले च पात्रे च तद् दानं सात्त्विकं स्मृतम्..

गीता १७-२०

देश, काल और पात्र को देखकर जो दान ऐसे व्यक्ति को दिया जाता है जिससे बदले में कुछ भी उपकार की आशा न हो, उस दान को सात्त्विक दान कहते हैं.

मनुष्यों का सामाजिक संसार परस्पर आदान-प्रदान से ही चलता है, पर यह आदान-प्रदान प्रायः स्वार्थ की भावना पर आधारित होता है. हम उसी की सहायता या भलाई करते हैं जिससे हमें बदले में सहायता या भलाई की आशा हो. यह एक संकुचित दृष्टि है. सात्त्विक भाव में रहनेवाला व्यक्ति दान देते हुए या किसी की सहायता करते हुए यह नहीं देखता कि उसे बदले में क्या मिलेगा. वह निष्काम भाव से औरों की सहायता करता है. पर साथ ही, वह यह अवश्य ध्यान रखता है कि उचित व्यक्ति की उचित स्थान और उचित समय पर सहायता की जाए. सात्त्विक भाव से दिया गया दान पानेवाले का तो भला करता ही है, वह देने वाले के हृदय को भी पवित्र, प्रसन्न और शांत बनाता है.

दातव्यम् इति : देना ही है इस भावना से, **यद् दानं :** जो दान, **देशे काले च पात्रे च :** स्थान, समय और पात्र का ध्यान रखकर, **अनुपकारिणे दीयते :** उपकार न करनेवाले व्यक्ति को दिया जाता है, **तद् दानं सात्त्विकम् स्मृतम् :** उस दान को सात्त्विक कहा जाता है.

यत्तु प्रत्युपकारार्थम् फलमुद्दिश्य वा पुनः.
दीयते च परिक्लिष्टं तद् दानं राजसं स्मृतम्..

गीता १७-२१

जो दान प्रत्युपकार के लिए या फल को ध्यान में रखकर दिया जाता है, या जिसे देने में कष्ट होता है, उस दान को राजसिक दान कहते हैं.

संसार में राजसिक मनोवृत्ति के लोगों की संख्या सबसे अधिक है. स्वभाव से स्वार्थी होने के कारण ऐसे व्यक्ति जब भी कुछ देंगे, पहले यह हिसाब अवश्य लगा लेंगे कि उस दान के बदले में उन्हें क्या मिलेगा. किसी भी सामाजिक कार्य के लिए दान देते समय वे अपने लिए कोई अधिकार या नाम अवश्य चाहेंगे. यहाँ तक कि जब वे भगवान के नाम पर दान देंगे तो बदले में भगवान से भी अपने लिए कुछ न कुछ आशा करेंगे. राजसिक मनोवृत्ति के मनुष्य कभी भी प्रसन्नता से दान नहीं देते क्योंकि उन्हें सदा यही लगता है कि वे जितना दे रहे हैं उसके बदले में उन्हें उतना मिलेगा नहीं. हमेशा ऐसा सोचते रहने के कारण ऐसे मनुष्य सदा अशांत और दुखी जीवन बिताते हैं.

यत् दानं तु : जो दान तो, **प्रत्युपकारार्थम् :** बदले में उपकार की आशा से, **वा पुनः :** या फिर, **फलम् उद्दिश्य :** उससे मिलनेवाले फल को ध्यान में रखकर, **परिक्लिष्टं च :** और कष्ट के साथ, **दीयते :** दिया जाता है, **तद् राजसं स्मृतम् :** उसे राजसिक दान कहा गया है.

अदेशकाले यद् दानम् अपात्रेभ्यश्च दीयते.
असत्कृतम् अवज्ञातं तत् तामसमुदाहृतम्..

गीता १७-२२

जो दान देश और काल का ध्यान रखे बिना अपात्र लोगों को दिया जाता है या जिसके देने में तिरस्कार और निरादर का भाव होता है, उस दान को तामसिक दान कहते हैं.

बिना सोचे-विचारे काम करने की जो भावना तामसिक लोगों में अन्य क्षेत्रों में दिखाई देती है वही दान के विषय में भी परिलक्षित होती है. वे जब दान देते हैं तो दान माँगनेवाले से पीछा छुड़ाने का भाव उनमें प्रबल रहता है. वे यह नहीं देखते कि वे किसे दान दे रहे हैं और कब और कहाँ दे रहे हैं. न यह जानने में उनकी रुचि होती है कि उनके दान से किसी का वास्तव में भला होगा भी या नहीं. दान माँगनेवाले व्यक्ति के प्रति उनमें सम्मान का भाव नहीं होता और वे उसका प्रायः अपमान भी कर देते हैं. (इन तीन गुणों की दृष्टि से त्याग का विवेचन हम पहले देख चुके हैं : श्लोक ५९-६१. इसी प्रकार से आहार, तप, यज्ञ, कर्ता, ज्ञान, बुद्धि और सुख के विवेचन के लिए गीता का सत्रहवाँ और अठारहवाँ अध्याय द्रष्टव्य हैं.

यद् दानं : जो दान, **अदेशकाले :** अनुचित स्थान और समय पर, **असत्कृतम् :** बिना सत्कार के, **अवज्ञातम् :** तिरस्कार के साथ, **अपात्रेभ्यः च :** और उन लोगों को जो उसके पात्र नहीं हैं, **दीयते :** दिया जाता है, **तत् तामसम् उदाहृतम् :** उसे तामसिक दान कहा गया है.

गुणानेतानतीत्य त्रीन् देही देहसमुद्भवान्.
जन्ममृत्यु-जरादुःखैः विमुक्तोऽमृतमश्नुते..

गीता १४-२०

शरीर में रहनेवाली आत्मा शरीर में उत्पन्न हुए इन तीन गुणों को पार करके, जन्म, मृत्यु और बुढ़ापे के दुःखों से मुक्त होकर अमरत्व को प्राप्त करती है.

शरीर प्रकृति के गुणों से बना है. जब तक मनुष्य शरीर में रहता है तब तक वह अपने शरीर में विद्यमान गुणों के अनुसार ही काम करेगा. जब मनुष्य शरीर से संबंधित इंद्रिय, मन, अहंकार आदि अपने व्यक्तित्व के सभी पक्षों के ऊपर चला जाएगा केवल तभी वह इन गुणों के ऊपर उठ सकेगा. तब उसे जन्म और मृत्यु और इनसे संबंधित विभिन्न प्रकार के दुःखों से छुटकारा मिल जाएगा. यदि मनुष्य की चेतना उसके मन और अहंकार में जो कुछ भी हो रहा है उससे अपने आपको सर्वथा अलग कर ले तो वह वर्तमान शरीर में रहते हुए ही इस मुक्ति और आनंद का अनुभव कर सकता है. ऐसा जीवन्मुक्त व्यक्ति सदा ही स्वतंत्र, शांत और प्रसन्न अवस्था में रहता है.

देही : शरीर में रहनेवाली आत्मा, **देहसमुद्भवान् :** शरीर में उत्पन्न हुए, **एतान् त्रीन् गुणान् :** इन तीन गुणों को, **अतीत्य :** पार करके, **जन्ममृत्युजरादुःखै :** जन्म, मृत्यु और बुढ़ापे के दुःखों से, **विमुक्त :** मुक्त होकर, **अमृतम् अश्नुते :** अमरत्व को प्राप्त करती है.■

Who Are You Calling Old?

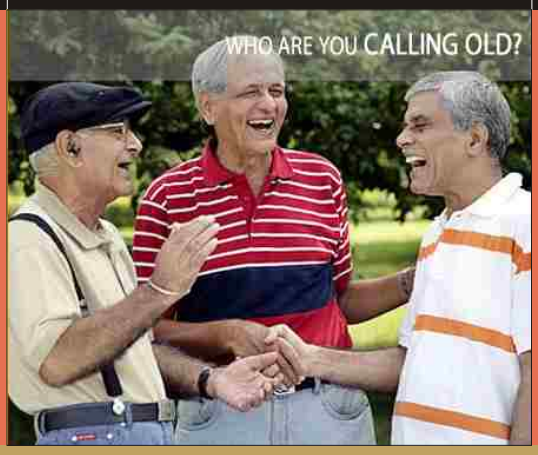

Proud2B60 :

is a special campaign by Help Age India.

Millions of people are living their later years with unprecedented good health, energy and expectations for longevity.

Suddenly, traditional phrases like "old" or "retired" seem outdated. Help Age's "Who Are You Calling Old?" campaign presents the many faces of this New Age.

New language, imagery, and stories are needed to help older people and the general public re-envision the role and value of elders and the meaning and purpose of one's later years. This campaign is about leading this change. It is about combating the negative image of the frail, dependent elder.

General Query

http://www.helpageindia.org

गर्भनाल द्वारा जनहित में जारी

डॉ. ओमप्रकाश गुप्ता

गणित एवं औद्योगिक इंजीनियरिंग में डिग्रियां. तीस वर्षों से मैनेजमेंट के प्रोफेसर. फिलहाल युनिवर्सिटी ऑफ ह्यूस्टन-डाउनटाउन में सेवारत. पचास से अधिक शोध-पत्र विश्व के नामी जर्नल्स में प्रकाशित. दो मैनेजमेंट जर्नल के मुख्य संपादक एवं कई अन्य जर्नल्स के संपादक. हिंदी पढ़ने-लिखने में रुचि. काव्य-लेखन, विशेषकर सामयिक एवं धार्मिक काव्य लेखन में.

सम्पर्क : om@ramacharit.org

प्रश्नोत्तरी

कौन बनेगा रामभक्त

निम्न प्रश्नों के उत्तर तुलसीकृत श्री रामचरितमानस के आधार पर दीजिये.
सही उत्तर अगले अंक में प्रकाशित होंगे.

१. विश्वामित्र के यज्ञ में कौन बाधा पहुँचाता था?
   अ) रावण
   ब) सुबाहु
   स) वशिष्ठ
   द) मेघनाद

२. सीता पुष्पवाटिका क्यों गई थीं?
   अ) राम को मिलने
   ब) पुष्प लेने
   स) गौरी पूजन के लिए
   द) शिव धनुष देखने के लिए

३. शूर्पनखा का नाम शरीर के किस अंग से पड़ा?
   अ) आँखें
   ब) नाखून
   स) गला
   द) अंगुली

४. पम्पा किसका नाम है?
   अ) एक अप्सरा
   ब) एक सरोवर
   स) एक पर्वत
   द) एक वृक्ष

५. 'जातुधानपति' शब्द किसके लिए है?
   अ) इंद्र
   ब) राम
   स) शेषनाग
   द) रावण

६. राम ने जंगल में स्वर्ण मृग का पीछा क्यों किया?
   अ) मृग-रूप में आये रावण को पकड़ने
   ब) मृग को सीता के लिए लाने
   स) मृग के द्वारा रावण का पता लगाने
   द) मृग की त्वचा से अपना आसन बनाने

७. इन घटनाओं में किनका क्रम सही है?
   अ) राम विवाह - केवट भेंट - ताड़का वध
   ब) केवट भेंट - ताड़का वध - राम विवाह
   स) केवट भेंट - राम विवाह - ताड़का वध
   द) ताड़का वध - राम विवाह - केवट भेंट

८. 'गिरिजा' कौन हैं?
   अ) सीता
   ब) मंदोदरी
   स) पार्वती
   द) सरस्वती

९. विभीषण से मिलने पर क्या कहकर राम ने उसे संबोधित किया?
   अ) विभीषण
   ब) मित्र
   स) लंकेश
   द) भाई

१०. 'राम रमापति कर धनु लेहू' - यह शब्द किसने कहे?
   अ) परसुराम
   ब) लक्ष्मण
   स) हनुमान
   द) नारद

प्रश्नों के उत्तर तुरंत जानने के लिए kbr@ramacharit.org पर आग्रह किया जा सकता है.

दिसम्बर २०१२ अंक में प्रकाशित प्रश्नों के सही उत्तर हैं :

१. अ, २. अ, ३. ब, ४. स, ५. ब, ६. ब, ७. द, ८. स, ९. द, १०. स

पंचतंत्र कई दृष्टियों से संसार की सर्वाधिक लोकप्रिय कृतियों में से एक है। इसमें संकलित कहानियों का मूल उत्स लोक-जीवन है। भारतीय कृतियों में पंचतंत्र ऐसी अकेली रचना है, जिसे पूरी तरह ज्ञानकोश कहा जा सकता है। कथा प्रस्तुति की जो शैली इसमें प्रयुक्त है, उसकी एक लंबी परम्परा है। 'वेद', 'ब्राह्मण' आदि ग्रंथों में भी इस फैंटेसी का प्रयोग हुआ है।

कुत्ते का वैरा कुत्ता

किसी शहर में एक चितकबरा कुत्ता रहता था. उसका नाम था चित्रांग. वहां बहुत लंबा अकाल पड़ गया. अब जब आदमी के ही खाने के लाले पड़े हों तो भला कुत्तों को कौरा कौन देता. कुत्ते भी मरे लगे. भूख प्यास से परेशान होकर चित्रांग परदेश चला गया. वहां किसी नगर में पहुंचने के बाद वह एक गृहस्थ की घरवाली की असावधानी का लाभ उठाकर चोरी से भीतर घुस जाता और तरह-तरह के व्यंजनों से पेट भरकर चुपचाप बाहर निकल आता. पर जब वह खा-पीकर उस घर से निकलने लगता तो उसे आसपास के मोटे-ताजे कुत्ते चारों ओर से घेर लेते और काट-काटकर लहूलुहान कर देते. उनके इस बर्ताव से दुखी होकर उसने सोचा, इससे अच्छा तो अपना ही देश था. वहां लाख दुर्भिक्ष हो कम से कम चैन से रहा तो जा सकता है. कोई दूसरा लड़ने को तो नहीं आ जाता. यही सब विचार कर वह अपने नगर को लौट आया.

उसे परदेश से लौटा हुआ जानकर उसके सगे-संबंधी आकर उससे हाल-चाल पूछने लगे, 'अरे भाई चित्रांग, हमें भी तो बताओ, परदेश में तुमने क्या देखा, वह है कैसा? वहां रहने वाले कैसे हैं? उनका बर्ताव-व्यवहार कैसा है?'

उस कुत्ते ने कहा, 'भाई, वहां की तो कुछ पूछो मत. जितनी तारीफ करो कम है. भंडार भरा हुआ और लोग मालामाल. उस नगर की औरतें भी बहुत चौकस नहीं रहती हैं. बस एक ही बात की कमी है कि वहां अपनी ही जाति के लोग एक-दूसरे की जान के दुश्मन हैं, और कभी न तो चैन से रहते हैं न किसी को रहने देते हैं.'

> *घड़ियाल ने बंदर की बातों पर विचार किया और फिर यह ठानकर वहां से अपनी मांद की ओर लौटा कि वह अपने घर पर कब्जा जमाने वाले को नहीं छोड़ेगा.*

घड़ियाल ने बंदर की बातों पर विचार किया और फिर यह ठानकर वहां से अपनी मांद की ओर लौटा कि वह अपने घर पर कब्जा जमाने वाले को नहीं छोड़ेगा. आते ही उस घड़ियाल पर हमला कर दिया. दोनों में जम कर लड़ाई हुई पर उसके साहस और हौसले के सामने घड़ियाल टिक नहीं पाया. इसने अपनी मांद पर कब्जा जमाने वाले घड़ियाल को मार डाला और फिर वहां आराम से रहने लगा. सच ही कहा है कि यदि परिश्रम के बिना धन-दौलत मिल भी जाए तो उसे भोगने में आदमी को वह आनंद नहीं मिलता जो अपने बल-बूते से पैदा किए हुए धन से मिलता है. भाग्य पर भरोसा करने वाले बूढ़े बैल के आगे सूखी घास भी आ जाए तो वह उसी को खाकर संतोष कर लेगा.■

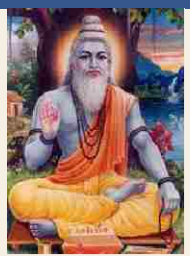

महर्षि वेद व्यास

वैदिककालीन ऋषि वेद व्यास की रचना महाभारत की गणना भारतीय साहित्य-भंडार के सर्वश्रेष्ठ महाग्रंथों में की जाती है। इसमें पांडवों की कथा के साथ अनेक सुन्दर उपकथाएँ हैं तथा बीच-बीच में सूक्तियाँ एवं उपदेशों के उज्जवल रत्न भी जुड़े हुए हैं। महाभारत एक विशाल महासागर है जिसमें अनमोल मोती और रत्न भरे पड़े हैं। रामायण और महाभारत भारतीय संस्कृति और धार्मिक विचार के मूल स्रोत माने जा सकते हैं।

महाभारत

सेनापति द्रोण

दुर्योधन और कर्ण के बारे में सोच-विचार करने लगे कि अब सेनापति किसे बनाया जाये?

कर्ण बोले- 'यहां पर जितने क्षत्रिय उपस्थित हैं, वे सब सेनापति बनने की योग्यता रखता हैं. शारीरिक बल, पराक्रम, यत्नशीलता, बुद्धि, शूरता, धीरज, कुल, ज्ञान आदि सभी बातों में यहां इकट्ठे हुए सभी क्षत्रिय राजा एक दूसरे की समता कर सकते हैं. पर सवाल यह है कि इनमें से सेनापति किसे बनाया जाये? सभी एक साथ तो सेनापति बन नहीं सकते हैं. किसी एक को ही इस पद के लिये चुनना होगा और सम्भव है कि इससे दूसरे लोग बुरा मानें. यह हमारे लिये हानिकर साबित होगा. इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए मुझे तो यही सबसे अच्छा प्रतीत होता है कि आचार्य द्रोण को ही सेनापति बनाया जाये. वह सभी वीरों के आचार्य हैं, शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ हैं और क्षत्रियों में तो उनकी समता करने वाला कोई है नहीं. मेरी राय में तो अपने आचार्य को ही सेनापति के पद पर बिठाया जाये.'

कर्ण की यह बात दुर्योधन ने मान ली.

'आचार्य! जाति, कुल, शास्त्र-ज्ञान, वय, बुद्धि, वीरता, कुशलता आदि सभी बातों में आप सबसे श्रेष्ठ हैं. आप ही अब इस सेना का सेनापतित्व स्वीकार करें. हमारी इस सेना का यदि आप संचालन करेंगे तो यह निश्चित है कि हम युधिष्ठिर को अवश्य जीत लेंगे.' यह कहकर दुर्योधन ने सभी क्षत्रिय वीरों के सामने द्रोणाचार्य से सेनापतित्व स्वीकार करने की विनती की.

एकत्र राजाओं ने यह सुन सिंहनाद करके दुर्योधन को प्रसन्न किया. शास्त्रोक्त रीति से द्रोणाचार्य का सेनापति-पद पर अभिषेक हुआ. उस समय ऐसा जय-जयकार हुआ, मानो आकाश विदीर्ण हो जायेगा. बंदी लोगों के स्तुति-गान और जय-घोष को सुनकर कौरव तो ऐसे उत्साह में आ गये कि पूछो मत. उन्हें यह भ्रम होने लगा मानो उन्होंने पांडवों पर विजय ही पा ली हो.

आचार्य द्रोण ने युद्ध के लिये कौरव सेना को शकट-व्यूह में रचा. कर्ण के रथ को उसी दिन पहले-पहल युद्ध के मैदान में इधर-उधर चलते देख कौरव सेना के वीरों में एक नया ही जोश और आनन्द दौड़ गया.

कौरवों की सेना के सिपाही आपस में बाते करने लगे- 'पितामह तो अर्जुन को मारना नहीं चाहते थे. अनमने भाव से युद्ध कर रहे थे, परन्तु कर्ण ऐसा नहीं करेंगे. अब तो पांडवों का नाश होकर ही रहेगा.'

द्रोणाचार्य ने पांच दिन कर कौरवों की सेना का संचालन करते हुए घोर युद्ध किया. यद्यपि अवस्था में वह बूढ़े थे, फिर भी जवानों को लजाने वाली फुर्ती के साथ युद्ध के मैदान में एक छोर से दूसरे छोर तक चक्कर काटते रहे और पागलों के से जोश के साथ युद्ध करते रहे. उनके भीषण आक्रमण के आगे पांडवों की सेना उसी तरह तितर-बितर हो जाती थी, जैसे आंधी चलने पर मेघ-राशि. सात्यकि, भीम, अर्जुन, धृष्टद्युम्न, अभिमन्यु, द्रुपद, काशिराज आदि सुविख्यात वीरों के विरुद्ध अकेले द्रोणाचार्य भिड़ जाते और एक-एक को खदेड़ देते. पांचों दिन उनके हाथों पाडंवों की सेना बहुत ही सताई गई. आचार्य द्रोण ने पांडव-सेना की नाक में दम कर दिया.

■

मानिक बन्द्योपाध्याय
(९ मई १९०८ - ३ दिसम्बर १९५६)

आधुनिक बांग्ला कथा साहित्य के अग्रणियों की पहली पंक्ति में अन्यतम. लगातार बीमारी तथा अभाव से जूझते हुए कुल ४८ साल की उम्र में ३६ उपन्यास एवम् १७७ छोटी कहानियाँ लिखीं. अपनी रचनाओं में जटिल मानव मनोविज्ञान एवम् ग्रामीण जीवन के यथार्थ की गहराई से पड़ताल की. आज भी उनकी साधारण कहानियाँ पाठक को आश्चर्यचकित कर देती हैं. उनकी कहानियों के चरित्रों की पहचान वे अपने आसपास के लोगों में सहजता से करने लगते हैं. उनकी रचनाएँ अद्भुत भाषाशिल्प एवम् वर्णन शैली से सहजता से संप्रेषण कर पाती हैं. 'पद्मानदीर माँझी' उनके प्रतिष्ठित उपन्यासों में सर्वाधिक चर्चित रही है.

अनुवाद

बांग्ला से हिन्दी अनुवाद गंगानन्द झा

जिसको घूस देना पड़ता है

मोटर चलती है, धीरे से. ड्राइवर घनश्याम मन ही मन विरक्त होता है, स्पीड बढ़ाने के अभ्यास के कारण हर अंग निसपिस करता रहता है, लेकिन वह मजबूर है. बाबू का हुक्म है, गाड़ी धीरे से चलाना. काम में जाते समय गाड़ी तेजी से चलाओ, बाबू को कोई उज्र नहीं, लेकिन पत्नी के साथ हवाखोरी के लिए निकलने पर उन दोनों को ही कलकत्ते की सड़क पर मोटर पर चढ़कर सैर सपाटा करने का अवर्णनीय आनन्द धीरे-धीरे चाट-चाट कर उपभोग करना अच्छा लगता है.

इतनी बड़ी, इतनी कीमती, ऐसी चमचम करती मोटरगाड़ी शहर की पक्की सड़क पर गड़गड़ करती चल रही है, यह सच ही अपने आप में काफी है, सुशीला के तन-मन में सिहरन उत्पन्न करने के लिए. ऊपर से पुरानी सस्ती बेकार की मोटर गाड़ियों को देखकर अपना मुँह बिचकाने का सुख अलग से है. इसके अलावे खचखच भरे ट्राम, बसों की ओर देखकर तीन साल पहले के कल्पनातीत स्वप्नजगत में यथार्थ रूप में विचरण करने की प्रत्यक्ष अनुभूति. तीन साल पहले माखन को भी तो इसी तरह लटकते हुए काम पर जाना पड़ता था. पति की साधारणता के अतीत की बात हो जाने की बात की याद तीव्रता से आने के कारण आज चमगादड़ की तरह लटकते लोगों पर उसे बड़ी ममता हो रही है. बगल में बैठा माखन धुआँ उड़ाता सुशीला की ओर टेढ़ी नजरों से देखता हुआ निवेदन के सुर में बोला, 'किसने सोचा था कि एक दिन हम मोटर चलाएँगे ?'

सुशीला ने विवेचना करते हुए जवाब दिया. वह मध्यवर्ग के भले घर की बेटी है, अच्छी तरह पास हुए गरीब घर के लड़के के साथ उसका विवाह हुआ है. ओ माँ! इतने अच्छे लड़के की नौकरी बस एक सौ रुपए महीने की. सुशीला को याद आता है, उसने अपने पति की कितनी भर्त्सना, अवज्ञा, अपमान और लांछना की है. आजकल वह कुछ-कुछ चालाक भी हुई है. इसीलिए सोच-विचार कर उसने कहा, 'मुझे पता था'.

> पत्नी के साथ हवाखोरी के लिए निकलने पर उन दोनों को ही कलकत्ते की सड़क पर मोटर पर चढ़कर सैर सपाटा करने का अवर्णनीय आनन्द धीरे-धीरे चाट-चाट कर उपभोग करना अच्छा लगता है.

माखन को सुशीला का पहले का व्यवहार याद आया. थोड़े अकबकाए स्वर में उसने पूछा, 'तुम जानती थी?'

'जानती तो थी ही. रुपए कमाने की क्षमता तुममें थी, मुझे पता था. तभी तो तुम्हें छेड़ती रहती, उकसाती रहती थी. मुझे लगा था कि तुम अपने आपको पहचानते नहीं हो. इसीलिए कोंच-कोंचकर तुम्हें खूब जिद्दी बनाती रही...'

'हाँ! तुम्हारे कारण ही आज इतने रुपए, ...ड्राइवर, गाड़ी धीरे से चलाओ.'

तब सुशीला बोली, 'लेकिन जो भी कहो. दास साहब नहीं रहते तो तुम्हारा कुछ भी नहीं होता.'

माखन हँसकर बोला, 'सही बात है, लेकिन यह भी सही है कि अगर मैं नहीं रहता तो दास साहब भी फूल कर कुप्पा नहीं होते. ओह, कितना तो घूस दिया है साले को.'

'तुमको इतना-इतना कण्ट्रैक्ट दिया उन्होंने.'

'यों ही दिया है?, इतना घूस कौन देता?'

गाड़ी चल रही है. आहिस्ते-आहिस्ते खरामा-खरामा चली जा रही है. एक बगल से गुजरती गाड़ी कीमती, लेकिन पुरानी स्पीड कम कर, लगभग रुक गई. माखन की गाड़ी के निकट में पहुँचने पर दास साहब की गाड़ी साथ-साथ चलने लगी.

'कहाँ जा रहे हैं?'

'जरा सैर के लिए निकले हैं हमलोग.'

अपने चेहरे, छाती और कमर पर मँड़राती दास साहब की नजर को सुशीला ने महसूस किया. उसने अन्दर से झाँककर कई बार दास साहब को अपने बैठकखाने में देखा है. शर्म से उसका सारा बदन सिकुड़ गया. इसी महापुरुष ने उनके पति को ट्राम पर लटकती हुई हालत से इस कीमती मोटर पर चढ़ने की हालत में पहुँचाया है. ये ससुर, जेठ इत्यादि गुरुजनों से भी ऊपर के गुरुजन हुए. ये देवतुल्य हैं.

'आपकी पत्नी?'

'जी हाँ.'

दास साहब के सवाल का अर्थ माखन समझता है. अपनी तरह के कई एक लखपतियों को वह जानता है, जो मोटर चलाते हैं केवल बाजार की औरतों की बदौलत, घर की औरत घर ही में रहती है.

सुशीला सोच रही थी, इसमें ताज्जुब क्या, ये तो कुछ ही दिनों में बूढ़े दिखने लगे हैं, इनके मुकाबले मैं तो काफी कमसिन दिखती हूँ. इस बीच में दोनों ही गाड़ियाँ रुक गई थीं. पीछे से एक दूसरी गाड़ी भद्दे ढंग से हॉर्न दे रही थी.

दास साहब उतर कर इस गाड़ी पर आकर बैठ गए. अपनी गाड़ी के ड्राइवर से पीछे-पीछे आने को कह दिया गया.

> *अपने चेहरे, छाती और कमर पर मँड़राती दास साहब की नजर को सुशीला ने महसूस किया. उसने अन्दर से झाँककर कई बार दास साहब को अपने बैठकखाने में देखा है. शर्म से उसका सारा बदन सिकुड़ गया. इसी महापुरुष ने उनके पति को ट्राम पर लटकती हुई हालत से इस कीमती मोटर पर चढ़ने की हालत में पहुँचाया है.*

गाड़ी में दास साहब के घुसते ही सुशीला को मालूम पड़ गया कि इस दोपहरी में ही उन्होंने शराब पी रखी है.

'अपनी पत्नी के साथ तो आपने परिचय नहीं कराया?'

'बस अभी कराए दे रहा हूँ. ये हमलोगों के मिस्टर दास हैं.'

अपने बदन पर की बनारसी साड़ी के रंग की तरह सलज्ज हँसी से सुशीला हल्की-सी मुस्कुराई नववधू की तरह. वह नववधू की ही तरह दिख रही है, इसमें सुशीला को कोई सन्देह नहीं था. दास साहब अड्डेबाज किस्म के लोग थे. अड्डा जमाने में देर नहीं लगती उनको. माखन के मन में जो दबा-दबा सा क्षोभ उत्पन्न हुआ था, वह थोड़ा-थोड़ा कर बढ़ता जा रहा था. जब कोई अपनी पत्नी के साथ कहीं जा रहा होता है

तो बिना बुलाए कोई उनके सर पर सवार नहीं हुआ करता - कम से कम ऐसे लोगों के साथ तो नहीं ही जिनके साथ थोड़ी-सी भी भलमानुषियत रखने की जरूरत महसूस की जाती है. रह रहकर माखन के मन में यही बात घुमड़ती रही कि किसी दूसरे के साथ दास इस तरह के आचरण करने की बात सोचता भी नहीं.

दास ने कहा, 'चाय पिया है?'

सुशीला ने कहा, 'नहीं.'

'मेरे घर आइए न, चाय साथ में पी जाएगी.'

माखन की ओर मुखातिब होकर दास ने कहा, 'उस कण्ट्रैक्ट के बारे में भी आपसे बात हो जाएगी. मैं आपको ढूँढ़ रहा था.'

माखन की दोनों आँखें चमचमाने लगीं. सुशीला का दम अटक गया. इधर कई दिनों से माखन इस कण्ट्रैक्ट को हासिल करने के चक्कर में था. बहुत बड़ा कण्ट्रैक्ट, लाख रुपयों से भी अधिक की रकम घर में आएगी. दास पकड़ में नहीं आ रहा था, बात उठाने से टाल जाता था. ईश्वरी प्रसाद को बार-बार आते-जाते और दास के साथ उसकी घनिष्ठता देखकर माखन ने उम्मीद छोड़ दी थी. उसने अन्दाज कर लिया था कि दास उसको ही कण्ट्रैक्ट देगा. दास आज उसी विषय में उससे बात करना चाहता है. इसी वास्ते उसको ढूँढ़ रहा था.

शहर के बाहरी संभ्रान्त इलाके में दास का विशाल घर था, सामने सजा सजाया बागीचा. अनेकों नौकर खानसामाओं के साथ दास अकेले ही इस घर में रहता है. शादी नहीं की है, पत्नी नहीं है. वह रिश्तेदारों की मदद करता है, लेकिन साथ में नहीं रखता. शौक होने से उन लोगों का साथ दो चार दिनों के लिए उपभोग करता है, छुट्टी में आनन्द मनाने की तरह.

जो कोई भी आए, उसे यह कहकर कि साहब घर पर नहीं हैं, दरवाजे पर से ही विदा कर देने का हुक्म जारी कर दास ने उन लोगों को घर के अन्दर ले जाकर बैठाया. घर की साज-सज्जा और सामान निहार-निहार कर देखती हुई सुशीला सोचने लगी कि अपने घर में यहाँ की कौन-सी खासियत जोड़ी जाए. इसके बाद चाय आई. बात पर बात होते रहने के बाद कण्ट्रैक्ट की बात उठी. सुशीला के सामने ही सारी चर्चा चलती रही. वह गहरी दिलचस्पी से सारी बातें सुनने और समझने की कोशिश करती रही, उत्तेजना से उसकी छाती टिपटिप करती रही. माखन के साथ आलोचना शुरू होने के बाद सुशीला के प्रति दास का ध्यान जैसे नहीं रह गया था. लगा कि आलोचना में ही वह मशगूल है. घर के बाहर शाम घनी होती जा रही थी. घर के अन्दर स्निग्ध रोशनी जलने लगी.

इसके बाद दास ने कहा, हार्वाड के साथ बातें करनी होंगी. बैठिए, 'फोन करके आता हूँ.' कमरे से निकलने के पहले सुशीला की ओर मुखातिब होकर हँसते हुए बोला, 'सिर्फ काम की बातें कर रहा हूँ. नाराज मत होइएगा.'

सुशीला हड़बड़ाकर बोली, 'नहीं, नहीं.'

दास के जाने के बाद सुशीला बोली, 'सवा लाख के लगभग होगा!'

'अधिक भी हो सकता है.'

'लौटते समय कालीघाट में पूजा चढ़ाकर घर जाएँगे.' सुशीला का गला भर आया था.

थोड़ी ही देर में दास लौट आया.

'माखन बाबू?'

'जी.'

'हार्वाड के साथ बात किया. एक बार आपको जाकर बात करनी पड़ेगी. कागजात लेकर आप अभी ही चले जाएँ. दो दस्तखत करा लाएँगे.' दास निश्चिन्त होने की मुद्रा में बैठा. '...इस बीच हम लोग बातें करें. आप लोगों को बिना खिलाए नहीं जाने दूँगा.' दास ने सिगरेट जलाया और सुशीला से बोला, 'लौटकर आएँ, तब तक हमलोग अड्डा जमाएँ. और एक कप चाय पीजिएगा?'

सुशीला और माखन एक-दूसरे का मुँह देखते रहे. पंखा चलने की आवाज से कमरे की स्तब्धता गम्-गम् करती रही. माखन और सुशीला दोनों को ही लगा कि आवाज उनके सर के अन्दर हो रही है - अकथ्य, उद्भट आवाज.

इसके बाद माखन बोला, 'तुम चाय पियो. मैं झट से आ जाता हूँ.'

सुशीला ने घूँट भरते हुए कहा, 'देर मत करना.'

'नहीं, बस जाऊँगा और आऊँगा.'

गाड़ी के रास्ते पर आते ही माखन ने ड्राइवर से कहा, 'जोर से चलाओ, जोर से.'■

सुशीला और माखन एक-दूसरे का मुँह देखते रहे. पंखा चलने की आवाज से कमरे की स्तब्धता गम्-गम् करती रही. माखन और सुशीला दोनों को ही लगा कि आवाज उनके सर के अन्दर हो रही है - अकथ्य, उद्भट आवाज.

प्रीति सेन गुप्ता

भारत के प्रथम चार्टेड अकाउन्टेंट की पुत्री. अहमदाबाद से अँग्रेजी में एम.ए. किया और यहीं व्याख्याता हो गईं, फिर अमेरिका जा बसीं. वहां घर की याद से निजात पाने के लिए शुरू हुआ अलग-अलग देशों की यात्रा करने का जुनून. अब तक ये अकेले सातों महाद्वीपों की यात्रा कर चुकी हैं. विश्व की तृतीय महिला यात्री हैं जिन्होंने अकेले यात्राएं की हैं. कविता संग्रह सहित २६ छब्बीस किताबें प्रकशित. ७ गुजराती साहित्य अकादमी के पुरस्कार मिले. विश्व की किसी भी स्त्री ने इतने यात्रा संस्मरण नहीं लिखे.

सम्प्रति - न्युयॉर्क में रहते हुए घूमने के जुनून को पूरा कर रहीं हैं.

अनुवाद

गुजराती से हिन्दी अनुवाद नीलम कुलश्रेष्ठ

पेनमुन ज़ोन को देखकर

एक महीन रेखा
नीचे पड़ी हुई, लम्बी चली जाती
पर बीच में आधी दुनिया का अंतर
हृदय-हृदय के अन्दर असंख्य दरारें!

यहाँ मित्रता के गाँव में
बहार का प्रवेश निषिद्ध है
चालीसेक साल में इस गाँव का
नाम मिट जाएगा
तो मित्रता का क्या होगा?

दो देशों के बीच एकमात्र पुल
जिसका नाम डरावना है
इस पुल पर जाकर लौटना नहीं होता
इस पर पग रखने वाले का नाम मिट जाएगा
तो पार करने वाले प्रयत्न का क्या होगा?

टीले के ऊपर, एक झोंपड़ी के अन्दर से
दूरबीन लेकर देख रही हूँ
चारों तरफ अपने ही भाइयों की दुश्मन बनी
हाथों में ली हुई बन्दूक की भयानक नालियां
मुक्त फहराते हुए झंडे को छूकर तो देखो
बंदी जीवन की नसों में
तड़तड़ाती चिंगारियां पटाखों की लड़ी जैसी
फूंकने, मारने चली आयेंगी

उत्तर-दक्षिण का विभाजन अखंड रहेगा
निश्चिंत रहेगा.
बिना युद्ध के ही शांति का नाम मिट जाएगा
तो एकता की इच्छा का क्या होगा?

■

पेनमुनज़ोन उत्तर दक्षिण कोरिया के बीच के 'नो मेंस लेंड' का नाम है.

घर से दूर

हिन्द महासागर
शुरू होता है
और समाप्त होता है जहाँ
वहां मेरा घर है
जिसे मैं घर गिनती हूँ वह है
क्या मेरे लिए बनाया घर है वह?

जिस-जिस की गिनती
घर का नाम लेते ही कर सकती हूँ
उनकी हूँकती स्मृतियां ही
मेरी साँसों की आजीविका
मेरे प्राणों को सींचती
मेरे प्राणों पर आशीषों की बौछार करती

और इसलिए तो जपती हूँ
घर के कोने-कोने की माला
दूर से आती हवा के कणों में
इसकी चरण रज छूती हूँ
मोम्बासा के तट खड़ी-खड़ी.

■

प्रो. डॉ. पुष्पिता अवस्थी

कानपुर में जन्म. पढ़ाई राजघाट, वाराणसी के प्रतिष्ठित जे. कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन में हुई. १९८४ से २००१ तक वसंत कॉलेज फ़ॉर विमैन के हिन्दी विभाग की अध्यक्ष रहीं. सूरीनाम में आयोजित सातवें विश्व हिन्दी सम्मेलन की संयोजक. एक दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित. विभिन्न साहित्यिक विभूतियों पर डॉक्यूमेंटरी फिल्मों का निर्माण. जापान, मॉरिशस, अमेरिका, इंग्लैंड सहित अनेक कैरिबियन देशों में काव्य-पाठ. सम्प्रति - नीदरलैंड स्थित 'हिन्दी यूनिवर्स फाउंडेशन' की निदेशक हैं.

सम्पर्क : Postbus 1080, 1810 KB Alkmaar, The Netherlands. email : pushpita.awasthi@bkkvastgoed.nl

भारतवंशी पुरखों के अर्पण

श्रमजीवी हिन्दुस्तानी
अत्याचारी स्वजनों और
सत्ताधारियों के
नागपाश से मुक्ति निमित्त
हिमालय की धरती छोड़
गोरों के कहे में
निकल पड़े
गठरी और ठठरी सहित
अपने अंडा-बच्चा सकेले
जल-जहाजों में...

लोकगीतों के स्वप्न-देखते
निर्गुण और दोहा-चौपाई को
अपने मन की खँजड़ी पर
गाते-गुनगुनाते
सागर-जायी धरती की ओर...

द्वीपों के ढूह को बनायी अपनी बस्तियाँ
संघर्ष और शोषण के बावजूद
अपनी हड्डियों से काढ़ निकाली
नवीन मातृभूमि
धरती पर जुते रहे आजीवन
बैलों की तरह
ढोते रहे ज़िंदगी
अपने ही जर्जर बच्चों को भेजते रहे
दूसरे देश पढ़ने के लिए
कुछ बनने के लिए

घरवाली की इज़्ज़त-खातिर
बेइज़्ज़त होते रहे खुद रात-दिन
स्त्रियाँ अपने झिर-झिर आँचल तले
ढाँकती रहीं बहु-बेटियाँ
अपने चिथड़े आँचल तले
काढ़ती रहीं - सपनों के कशीदे
अपने चंचल बच्चों के लिये

सतुआ की तरह
पिसते रहे - हमारे पुरखे
हमारे लिए

आज
सब चुप हैं
उनकी ही अर्थी और समाधियों पर
खड़ी की हैं - अपनी भोग की कुर्सियाँ
उनके ही कंधों पर टिके हैं आज भी
हमारे सिंहासन
और उनके आशीष की चमक है
हमारी मुस्कराहटों में।

■

महाकवि प्रो. हरिशंकर 'आदेश'

७ अगस्त, १९३६ को भारत में जन्म. शिक्षा: एम.ए. (हिन्दी, संस्कृत, संगीत), बी.टी., साहित्याचार्य, साहित्यालंकार, साहित्य रत्न, विद्या वाचस्पति, संगीत विशारद, संगीताचार्य आदि. कनाडा, अमेरिका व त्रिनिडाड के मिनिस्टर ऑफ रिलीजन, भारतीय विद्या संस्थान के महानिदेशक, श्री आदेश आश्रम ट्रिनिडाड के कुलपति, ज्योति एवं जीवन ज्योति त्रैमासिक के प्रधान संपादक तथा वर्ष विवेक एवं अंतरिक्ष समीक्षा के संपादक. अंतर्राष्ट्रीय हिन्दू समाज अमेरिका तथा विद्या मन्दिर कनाडा के आध्यात्मिक गुरु, मानद उप राज्यपाल व भूतपूर्व सांस्कृतिक दूत (भारत) भी रहे हैं. सम्मान एवं पुरस्कार : प्रवासी भारत रत्न, डॉ. सत्यानारायन मोदूरी सम्मान, हमिंग बर्ड गोल्ड मेडल टिनिडाड एवं अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों व पुरस्कारों से सम्मानित. कृतियाँ : हिन्दी अंग्रेज़ी व उर्दू की लगभग सभी विधाओं में साहित्य व संगीत की रचना. लगभग ३०० से भी अधिक पुस्तकें , काव्य व महाकाव्य प्रकाशित.

सम्पर्क : profadesh@gmail.com

कविता

मदिरालय

कोई आता, पीते हैं मय
कोई जाता, पीते हैं मय
कोई पैदा हो, पीता मय
कोई मरता पीते हैं मय

पीनेवाले खोजते सदा
बस एक बहाना पीने का
जो यथार्थ से भयभीत रहे
उसको बहलाते मदिरालय

क्या शांति दे सकेंगे, जिनमें
आँसू का हो खारापन लय
क्या धैर्य बंधायेंगे जग को
कर देते जो चेतना विलय

जिनमें निःश्वासों की छत हो
हों जिसकी नींव दु;खद स्मृतियाँ
कितने ही मन के महल तोड़
निर्मित होते जो मदिरालय

हर कलुष कामना के निकेत
नैतिकता के नीलाम-निलय
हर दूषण जहाँ पनपता है
हर दुष्प्रवृत्ति के विन्ध्यालय

ओ सत्य शांति के अभीप्सुकों!
आओ न जाल में इसके तुम
कर-कर विवेक का हनन सदा
मति मंद बनाते मदिरालय

करते राजस्व - आय अर्जन
दिखलाकर आर्थिक क्षति का भय
मदिरा पीकर रचते विधान
करते पीकर विधि का निर्णय

नेता, निर्देशक, निर्माता
अभिनेता, क्रेता, विक्रेता
सब संपोषक मदिरालय के
सबके संपोषक मदिरालय.
■

डॉ. माधवी सिंह

ग्वालियर में जन्म. आध्यात्मिक गुरु श्रीराम शर्मा रचित 'अखंड ज्योति' पत्रिकाओं को पढ़ते हुए हिंदी प्रेम परवान चढ़ा. कविताएँ लिखती हैं. अपने आदर्श डॉ. प्रणव पंड्या द्वारा 'वैज्ञानिक आध्यात्मवाद' पर किये गए कार्यों से प्रेरित होकर माइंड बॉडी विषय में विशेष रुचि है. सम्प्रति : 'स्टेट कॉलेज', पेनस्यल्वानिया, अमेरिका में मेडिसिन प्रक्टिस तथा पेनस्टेट हरपी मेडिकल कॉलेज में टीचिंग फेकेल्टी हैं.

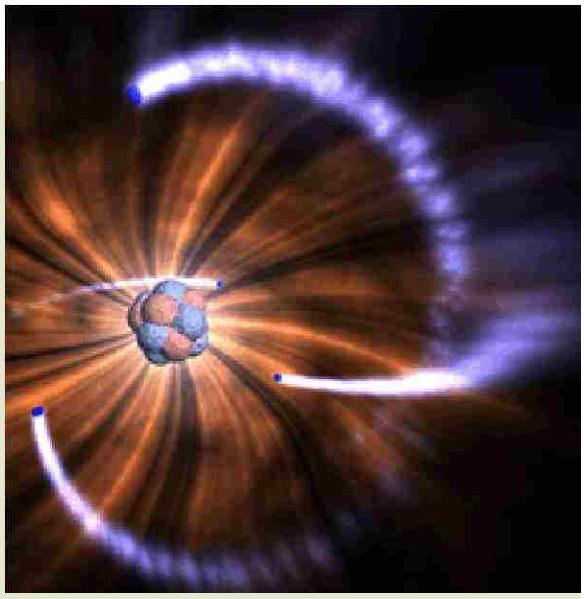

भाषा

भावों को व्यक्त करना
है भाषा
व्याकरण की परिधि में
समेटना ज़रूरी नहीं
हर मोती को
पिरोने वाला धागा
रेशमी ही हो
आवश्यक नहीं
अपनों से, जन मानस से
जुड़ने का साधन है
हमारी भाषा
इसे सरल, सहज, सुपाच्य रखें
ऐसी कर रहे
सब आशा.
■

मैं तुच्छ अणु

यूं तो अकेला मैं इक 'अणु'
हूँ बहुत ही तुच्छ मैं
संगति कर अनेक की
मैं बृहत्तर हो गया

दृश्य जगत की चाह है यह
मैं साथ सबके चलता रहूँ
काट अपने पंख मैं
बन्धनों में बंधता रहूँ

किन्तु तब भी मैं हुआ न
लिप्त हर इन बन्धनों में
ज्यों हुआ यह चक्र पूरा
स्वतंत्र विचारित करने लगा मैं

माना कि, मेरा अस्तित्व अति सूक्ष्म है
किन्तु है शक्ति अनंत
अंतस को मेरे यदि चीर दोगे
चकित कर दूंगा मैं विश्व को

हाँ, हूँ अकेला मैं इक 'अणु'
■

सुधा मिश्रा

बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में जन्म. सागर विश्व विद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की. बचपन से ही हिन्दी साहित्य में अभिरुचि रही. कनाडा प्रवास के दौरान कविता लिखना प्रारंभ. टोरोंटो में आयोजित कवि सम्मेलनों और कवि गोष्ठियों में सरल, मौलिक, भावुक प्रस्तुति के लिये जानी जाती हैं. इनकी कवितायें 'काव्योत्पल' तथा 'हिन्दी टाइम्स' में प्रकाशित हुई हैं. सम्प्रति - टोरोंटो में रहती हैं.

सम्पर्क : sudhamishra123@hotmail.com

कविता

एक प्रार्थना नव वर्ष से

आशाओं के दिये जलाकर
उम्मीदों के पुष्प खिलाकर
सपनों का एक महल सजाकर
स्वागत है नव वर्ष तुम्हारा

छोटी सी एक विनय करूं
सुनो प्रार्थना अगर मेरी तो
ये होगा उपकार तुम्हारा
स्वागत है नव वर्ष तुम्हारा

नये वर्ष में नयी कामना
हर दिल में लहरायेगी
इच्छाओं की कुसुम कली
खिलने को मुस्कायेगी

मन वीणा के तार बजेंगे
नयी योजना विकसित होगी
नये भविष्य की मधुर कल्पना
अतिशय उत्साह जगायेगी

कभी न देना कष्ट किसी को
कभी न अश्रु बिन्दु छलकाना
कभी न देना कोई निराशा
कभी न दुख बादल बरसाना

खुशियां आयें घर घर में
मंगल गीत सुनाई दें
छन छन बाजे वधू की पायल
आंगन में गूंजे किलकारी

बात बात पर लगें ठहाके
हर आनन आल्हादित हो
स्वास्थ्य मिले सबको सुन्दर
रौशन हो सबका गलियारा

बैर भाव मिट जाये सबका
आपस में स्नेह के द्वार खुलें
बढ़ें सभी उन्नति के पथ पर
कदम कदम पर मिले सफलता

आतंकवाद जड़ से मिट जाये
देशों में सदभाव बढे
हर तरफ़ शांति का हो प्रसार
जन जन में पनपे भाईचारा

सब धर्मों में बढ़े एकता
श्रद्धा का एक भाव पले
आदर हो सबका समान
मंदिर, मस्जिद, गिरजा, गुरुद्वारा

अगर प्रार्थना सुन ली तुमने
ये होगा उपहार तुम्हारा
स्वागत है नव वर्ष तुम्हारा
स्वागत है नव वर्ष तुम्हारा।

■

विजय निकोर

दिसम्बर १९४१ में जन्म. १९४७ के बँटवारे में दिल्ली आये. १९६५ से अमेरिका में निवास. हिन्दी और अंग्रेज़ी में अनेक रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित. कवि सम्मेलनों में नियमित रूप से भाग लेते हैं.

सम्पर्क : vvijay3@comcast.net

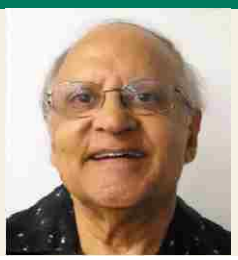

घाव समय के

अस्तित्व की शाखाओं पर बैठे
अनगिन घाव
जो वास्तव में भरे नहीं
समय को बहकाते रहे
पपड़ी के पीछे थे हरे
आए-गए रिसते रहे

कोई बात, कोई गीत, कोई मीत
या केवल नाम किसी का
उन्हें छील देता है, या
यूँ ही मनाने चला आता है–

मैं तो कभी रूठा नहीं था
जीने से, बस
आस जीने की टूटी थी
चेहरे पर ठहरी उदासी गहरी
हर क्षण मातम हो
गुज़रे पल का जैसे
साँसें भी आईं रुकी-रुकी
छाँटती भीतरी कमरों में बातें
जो रीत गईं, पर बीतती नहीं
जाती साँसों में दबी-दबी
रुँध गई मुझको रंध्र-रंध्र में ऐसे
सोये घाव, पपड़ी के पीछे जागे
कुछ रो दिए, कभी रिस दिए
वही जो संवलित था भीतर
और था समझने में कठिन
जाती साँसों को शनै-शनै
था घोट रहा

ऐसी अपरिहार्य ऐंठन में
अपरिमित घाव समय के
कभी भरते भी कैसे?
लाख चाह कर भी कोई
स्वयं को समेट कर, बहका कर
किसी को भूल सकता है कैसे?
■

पल्लवी सक्सेना
भोपाल में जन्म. नूतन कॉलेज, भोपाल से बी.ए. एवं अँग्रेज़ी साहित्य में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की. विगत ५ वर्षों से लंदन में निवास. हिन्दी ब्लॉग जगत की सक्रिय सदस्य एवं मेरे अनुभव (http://mhare-anubhav.blogspot.com) हिन्दी ब्लॉग लिखती हैं.
सम्पर्क : pallavisaxena80@gmail.com

कविता

रेत-सा रिश्ता

क्यूँ रिश्ता मुझसे अपना तुमने रेत-सा बनाया
क्यूँ आते हो तुम लौट-लौटकर
मेरी ज़िंदगी में गये मौसम की तरह
जानते हो ना कभी-कभी खुशगवार मौसाम भी
जब लौटकर आता है
तो कुछ शुष्क हवायें भी अपने साथ लाता है
जो लहूलुहान कर दिया करती है
न सिर्फ तन बल्कि मन भी
और तब तो तुम्हारे प्यार की यादों का
कोमल एहसास भी भर नहीं पाता
उन ज़ख्मों को तब ऐसा महसूस होता है
मुझे, जैसे तुमने ही ठग लिया है मुझे
मानो मैं स्तब्ध सी खड़ी हूँ
और कोई आकर मेरा सब कुछ
लिये जा रहा है मेरे हाथों से
खुद को इतना जड़-हताश और निराश
आज से पहले कभी नहीं पाया मैंने
शायद इसलिए तुमसे बिछड़ने के ग़म ने ही
मुझे बेजान-सा कर दिया है
कि एक खामोशी-सी पसरा गयी है मेरे अंतस में
मगर यह कैसी विडम्बना है हमारे प्यार की
कि मुझे इतना भी अधिकार नहीं
कि मैं रोक सकूँ उसे
यह कहकर कि रुको यह तुम्हारा नहीं
जिसे तुम लिये जा रहे हो अपने साथ
क्यूंकि सच तो यह है कि अब तो
मुझसे पहले उसका अधिकार है तुम पर
तुम तो अब मेरी यादों में भी उसकी
अमानत बनकर आते हो
तो किस हक से कुछ भी कहूँ उससे
इसलिए खड़ी हूँ पत्थर की मूरत बन यूं ही
अपने हाथों की हथेलियों को खोले
और वो लिये जा रहा है मेरा सर्वस्व
यूं लग रहा है मुझे जैसे तुम
रेत बनकर फिसल रहे हो मेरे हाथों से
और वो मुझे चिढ़ाता हुआ-सा लिए जा रहा है
तुमको अपने साथ
मुझ से दूर बहुत दूर
फिर कभी न मिलने के लिये
यह कहते हुए कि मेरे रहते भला
तुमने ऐसा सोच भी कैसे
कि यह तुम्हारा हो सकता है
तुम से पहले अब
यह तो मेरा है, मेरा था
और मेरा ही रहेगा हमेशा...
■

कीर्ति श्रीवास्तव
भोपाल विश्वविध्यालय से एम.कॉम., प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में गीत, ग़ज़ल एवं कविताओं का प्रकाशन.
सम्प्रति- प्रबंध संपादक- 'प्रेसमैन'.
संपर्क : 'राम भवन', ४४४-९ ए, साकेत नगर, भोपाल-२४ (म.प्र.)
ईमेल- gunjanshrivastava18@gmail.com

ख्वाब जिन्दगी

कभी शोख तो
कभी महताव जिन्दगी
देखो तो पल में आग
पल में पानी जिन्दगी
क्षण में बदलती
रूप अपना जिन्दगी
चेहरे पर चेहरा
है जिन्दगी
उसको याद करके
यादो में जी ले जिन्दगी
कभी सुकूं तो
कभी सहरा है जिन्दगी
जिसकी जुस्तजू में
गुजारी जिन्दगी
अब तो लगे बस
इक ख्वाब जिन्दगी.
■

लक्ष्य

है आगे बढ़ना गर
लक्ष्य को साथ रख
छोड़ सारी मुश्किलें
बिना खौफ आगे निकल

कर्म जो तेरा सच्चा है
कोई डगमगा नहीं सकता
कर्म के इस साँचे में
ख़ुद को ढालता चल

तू बन जा वो दिया
थपेड़ों से जो बुझता नहीं
हौंसला रख इस कदर
बारिश भी निसार हो

हर जंग जीत कर
तू खुद को जलाता चल
सुख-दुःख आनी जानी है
अपने को तैयार रख

धूप छाँव के जीवन में
साये को अलग न कर
ख़ुद को तपाकर आग में
सोने सा चमकता चल.
■

भूपेन्द्र कुमार दवे

जन्म : २१ जुलाई १९४१. शिक्षा : बी.ई. आनर्स, एफ.आई.ई., कहानी और कविताओं का आकाशवाणी से प्रसारण. प्रकाशित कृतियाँ : ३ खंड काव्य, १ उपन्यास, ५ काव्य संग्रह, २ गज़ल संग्रह, ७ कहानी संग्रह एवं २ लघुकथा संग्रह. मध्यप्रदेश विद्युत मंडल द्वारा कथा सम्मान. त्रिवेणी परिषद द्वारा उषा देवी मित्रा अलंकरण प्राप्त. संप्रति : भूतपूर्व कार्यपालन निदेशक, मध्यप्रदेश विद्युत मंडल.

सम्पर्क : b_k_dave@rediffmail.com

कविता

जिन्दगी थकी न थी

जिन्दगी थकी न थी कि मौत द्वारे आ गई
मुस्कुराती गोद थी, आँसुओं को भा गई

फूलों की सुगंध थी रंग बिरंगे लिबास में
चहक रही थी चाँदनी जाने किसकी आस में
नाचती थी डालियाँ भी खिलखिलाती रास में
पर उम्र के ढलान पे साँस कुछ भरने लगी
दीप बुझते देख के अर्थी खुद जलने लगी

घूँट दो पीने चला तड़पा हुआ था प्यास में
लड़खड़ाता चलता रहा टूटा घड़ा ले साथ में
बूँद पर एक ना मिली जिन्दगी की तलाश में
सफर अधूरा ही रहा पाँव भी कँपते रहे
हर कदम थकान थी गिरते रहे, चलते रहे

दूर का सफर था, चलते रहे इक आस में
कसमसाती उम्र थी बस मुस्कुराती लाश में
बैसाखी भर लिये रहे चरमराती पास में
नीड़ था उजड़ा हुआ, पंख पसरे जलते हुए
चहचहाते कुछ गीत थे कंठ में बिखरे हुए

डूबी न थी, टूटी न थी, तैरती थी आस में
नाव में कुछ साँस थी, हौसला था कुछ पास में
पर जोश में ऊँची लहर नाव लेकर बाँह में

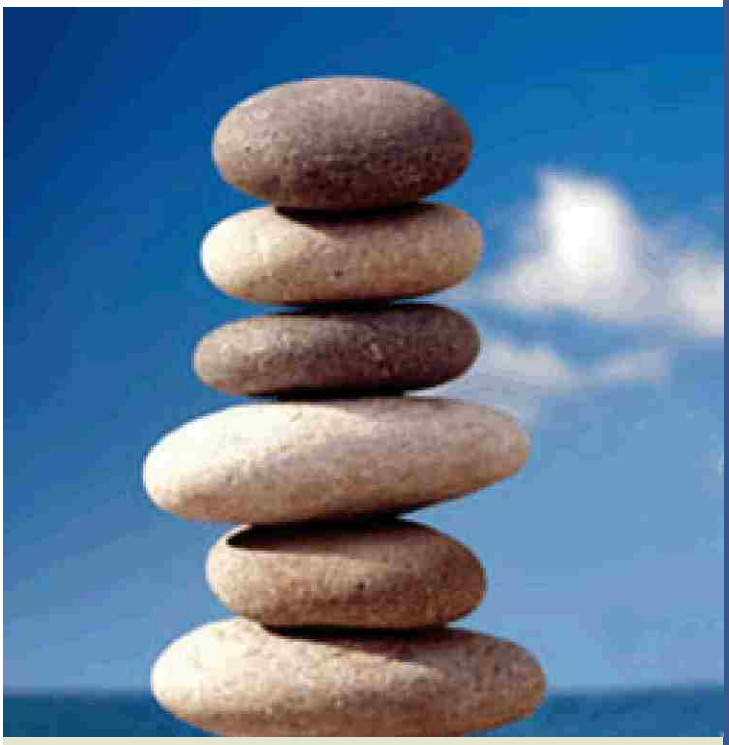

दे चुकी पतवार जाने किस अभागे हाथ में
जब किनारे छिप रहे थे दूरियों के माँद में

खुली न थी, खिली न थी, फिर भी कलियाँ झर गईं
शूल के शवों पर वो भी शिथिल होकर गिर गईं
तजकर सिसकती साँस बस जिन्दगी गुजर गई
काठ पर ना समा सकीं ठाठ की हर गुदड़ियाँ
अशर्फियाँ के दाम पर बिकती रहीं सिसकियाँ

जिन्दगी थकी ना थी कि मौत द्वारे आ गई
मुस्कुराती गोद थी, आँसुओं को भा गई.

■

अशोक सिंघई

जन्म : २५ अगस्त, १९५१ नवापारा (राजिम) जिला-रायपुर, छत्तीसगढ़. शिक्षा : एम एस-सी (रसायन शास्त्र), एम.ए. (हिन्दी), बी एड. कुछ सालों तक मध्यप्रदेश शिक्षा विभाग में शिक्षक रहे. प्रकाशित कृतियाँ : काव्य-संग्रह - 'अलविदा बीसवीं सदी', 'सम्भाल कर अपनी आकाशगंगा', 'धीरे धीरे बहती है नदी', 'सुन रही हो ना ?'.

सम्पर्क : asokasinghai@gmail.com

मुझे नहीं है याद

मुझे नहीं है याद
कब और किसने सिखाये थे
बाँधने जूतों के फ़ीते

कठिन से
गणित के सवाल
हल कर पाने का निष्छल आनंद
फिर मिला कभी
मुझे नहीं है याद

किसने सिखाया था संतुलन
क्यों बढ़ा दी गति
गति तो स्थिर है समय की
अपने पैरों को छोड़कर
कब हुई लुढ़कने की शुरुआत
मुझे नहीं है याद

ठिठकती हुई बिल्ली
दूर से ताकती चिड़िया
अनिकेतन मन से चेतना की बात
देखा कब टूटता तारा आखिरी बार
मुझे नहीं है याद.

■

घर में

मुझे अच्छे नहीं लगते
घर में खाल मढ़े हिरण
रबर की नकली छिपकलियाँ
या मिट्टी के लुभावने अंगूर

अच्छे लगते हैं
पिछवाड़े उग आये जंगली फूल
होते हैं जो गमलों की ऐष्वर्यमयी
चारदिवारी से आज़ाद

मुझे अच्छे लगते हैं
महानदी किनारे झाड़ियों में लटके
खट्टे-मीठे बेर
और कलिन्दर बाड़ी के
तरबूज और ककड़ियाँ

धीरे से आकर दाने पर
बैठ जाये चिड़िया
या कोई एक तितली
कहीं मंडराये एकाध फूल के आसपास
मुझे अच्छे लगते हैं
घर में
और फिर अच्छा लगने लगता है
घर.

■

नीरज गोस्वामी

अगस्त १९५० को जम्मू में जन्म. अंतरजाल की लगभग सभी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में ग़ज़लें प्रकाशित. पेशे से इंजीनियर. अनेक विदेश यात्राएं कर चुके हैं. सम्प्रति - भूषण स्टील मुंबई में वाइस प्रेसिडेंट के पद पर कार्यरत.

सम्पर्क : neeraj1950@gmail.com

शायरी की बात

कुआँ किसी प्यासे के घर नहीं जाता

उर्दू शायरी के दीवानों के लिए वसीम बरेलवी का नाम अजनबी नहीं बल्कि अज़ीज़ है. इस विश्व विख्यात शायर की देवनागरी लिपि में छपी पहली किताब 'मेरा क्या' रोचक एवं पठनीय बन पड़ी है. वसीम साहब ने अपनी शायरी में उर्दू के भारी भरकम लफ़्ज़ों का बहुत अधिक प्रयोग नहीं किया, बल्कि मौजूदा समय की समस्याओं पर बड़े सहज और सरल ढंग से लिखा है. ये ही कारण है की उनके शेर लोग आम बातचीत में अक्सर कोट करते हुए सुनते रहते हैं.

उसूलों पर जहाँ आंच आये, टकराना जरूरी है
जो जिंदा हो, तो फिर जिंदा नज़र आना जरूरी है
थके हारे परिंदे जब बसेरे के लिए लौटें
सलीका मंद शाख़ों का लचक जाना जरूरी है

वसीम साहब बड़े ही अलग से अंदाज़ में गहरी बात कह जाते हैं. इनकी लिखी ग़ज़लों को बहुत से ग़ज़ल गायक अपना स्वर दे चुके हैं. वो कहते हैं की 'लफ्ज़ और एहसास के बीच का फासिला तय करने की कोशिश का नाम ही शायरी है, मगर ये बेनाम फासिला तय करने में कभी-कभी उम्रें बीत जाती हैं और बात नहीं बनती.'

अच्छा है, जो मिला वो कहीं छूटता गया
मुड़ मुड़ के ज़िन्दगी की तरफ देखता गया.
मैं, खाली जेब, सबकी निगाहों में आ गया
सड़कों पे भीख मांगने वालों का क्या गया.

इसी किताब की भूमिका में वसीम साहब आगे कहते हैं 'शायरी मदद न करती, तो ज़िन्दगी के दुःख जान लेवा साबित हो सकते थे. वह तो ये कहिये कि अभिव्यक्ति के इस माध्यम ने मानसिक संतुलन बरकरार रखने में मदद की और झुलसा देने वाली धूप में एक बेज़बान पेड़ की तरह सर उठाकर खड़े रहने का अवसर दिया.'

अपने चेहरे से जो ज़ाहिर है छुपायें कैसे
तेरी मर्ज़ी के मुताबिक नज़र आयें कैसे
घर सजाने का तसव्वुर तो बहुत बाद का है
पहले यह तय हो कि इस घर को बचाएं कैसे

परंपरा बुक्स प्राइवेट लिमि., कोणार्क अपार्टमेन्ट, पटपड़गंज रोड, आई.पी. एक्टेंशन दिल्ली द्वारा प्रकाशित मात्र सौ रुपये मूल्य की ये किताब वसीम साहब की एक सौ चालीस ग़ज़लों को समेटे हुए है. इसके अलावा उनके ढेरों फुटकर शेर भी हैं. उनका लिखा हर शेर क़यामत ढाता है और दिल पर बहुत गहरा असर डालता है :

तुम्हारा प्यार तो साँसों में सांस लेता है
जो होता नशा, तो इक दिन उतर नहीं जाता
'वसीम' उसकी तड़प है, तो उसके पास चलो
कभी कुआँ किसी प्यासे के घर नहीं जाता

> *वसीम की शायरी में ज्ञान और विवेक की तहों का जायजा है. उनके चाहने वाले दुनिया भर में हैं और वो जहाँ जाते हैं लोग उन्हें सर आँखों पर बिठाते हैं. ये मुकाम बहुत कम शायरों को नसीब हुआ है.*

रघुपति सहाय फ़िराक गोरखपुरी साहब के महबूब शायर हैं वसीम साहब, वो उनसे और उनके कलाम दोनों से मोहब्बत करते हैं. उनका कहना है 'वसीम की शायरी में ज्ञान और विवेक की तहों का जायजा है'. उनके चाहने वाले दुनिया भर में हैं और वो जहाँ जाते हैं लोग उन्हें सर आँखों पर बिठाते हैं. ये मुकाम बहुत कम शायरों को नसीब हुआ है.

मैं इस उम्मीद पे डूबा कि तू बचा लेगा
अब इसके बाद मेरा इम्तिहान क्या लेगा. ■

महेंद्र दवेसर 'दीपक'

१४ दिसम्बर, १९२९ को नयी देहली में जन्म. प्रभाकर, बी.ए., एम.ए. फ़ाइनल (अर्थ-शास्त्र). भारत सरकार की विदेश-सेवा अवधि में इंडोनेशिया में Radio Republic Indonesia के हिंदी यूनिट का संस्थापन, संचालन. १९७१ से लंदन में निवास. कहानी संग्रह 'पहले कहा होता', 'बुझे दीये की आरती', 'अपनी-अपनी आग' प्रकाशित. पद्मानन्द साहित्य सम्मान से सम्मानित. 'दो पाटन के बीच' कहानी कमलेश्वर कहानी पुरस्कार से पुरस्कृत.

सम्पर्क : 70 Purley Downs Road, South Croydon, Surrey, CR2 ORB. ईमेल : mpdwesar@yahoo.co.uk

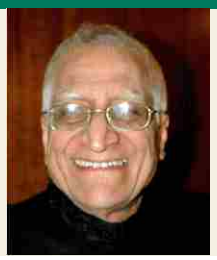

कहानी

एक रोटी, जली हुई

दरवाज़े खुलते हैं, बंद हो जाते हैं. जो दरवाज़े भीतर से पीठ पीछे बंद कर दिये जाते हैं और बाहर से खुल नहीं सकते, तो कैसा लगता है? मनीश धवन के साथ क्रिस्मस की पूर्व रात्रि को यही तो हुआ था. सालों से लंदन में क्रिसमस के दिन बर्फ़ नहीं पड़ी थी. इस बार व्हाईट क्रिसमस की उम्मीद थी. कड़ाके की सर्दी थी. हालांकि उसने गर्म कपड़े पहने हुए थे. सिर पर फ़्लैपदार टोपा था, गले में मफ़लर था और हाथों में दस्ताने, फिर भी वह ठंड में ठिठुर रहा था. रात के दो बजे थे और लंदन की सुनसान सड़क पर वह अपना ट्रॉली सूटकेस घसीटता चला जा रहा था. सूटकेस में उसके गिने चुने कपड़े थे. वह सड़क पर अकेला था किन्तु उसे लगता था कि सूटकेस के साथ उसका अतीत भी साथ साथ घिसटता चला आ रहा है.

बहुत भारी था वह दिन जो गुज़र गया. बहुत सबेरे से ही क्लेयर के साथ झगड़ा शुरू हो गया था और दिन भर शब्दों का घात-प्रतिघात चलता रहा था और स्थिति बेकाबू हो गयी.

वह बाथरूम में थी जब तीन वर्ष की जैन्नी का नैप्पी मल-मूत्र से भर गया. अंदर से हुक्म हुआ, 'मैं नहा रही हूं. तुम ही उसका नैप्पी बदल दो.'

तब मनीश सोचने लगा, यह भी कोई कामों में काम हुआ? जैन्नी का नैप्पी वह बदल दे? वह, जो देश भर की सुप्रसिद्ध सॉलिसिटर्ज़ की कम्पनी 'मनीश एण्ड टेलर' का सीनियर पार्टनर है?

नो वे!

... और फिर एक ऐसी आग लगी जो दिन भर बढ़ती गयी.

जैन्नी जन्मी तो चंगी भली थी. बिल्कुल मां जैसी सुन्दर. सुनहरी केश, बड़ी-बड़ी नीली आंखें, तीखे नयन-नक्श. अभी साल भर की भी नहीं हुई थी कि एक भयानक रोग का शिकार हो गयी. जान तो बच गयी पर दिमाग़ नहीं रहा. वह हस्पताल से एक जीवित गठरी बनी घर लौट आई. डॉक्टरों ने फ़तवा सुना दिया कि उसके लिए चौबीसों घंटे एक परिचारक, एक अटेंडेंट – का होना ज़रूरी है.

क्लेयर पर वज्रपात हो गया. जैन्नी का एक बड़ा भाई भी तो है. छः वर्ष का जेकब. वह कैसे संभालेगी इन दोनों बच्चों को?

> *"डेविड अभी नशे में बेहोश पड़ा हुआ था. अपना और बच्चों का जो भी कुछ वह समेट सकती थी समेटा और अपनी देह पर पति के जब्र की दस्तकारी, चोटों के नीले, लाल निशान लेकर वह अपने मायके पहुंच गयी."*

बेटी का रोग बना मां का दर्द किन्तु इन बच्चों का पिता डेविड जेंकिंज़ क्या परिवार की पीड़ा का भागीदार बन सका? उसकी तो जैसे लॉटरी लग गयी. वह एक कंपनी में मामूली क्लर्क था. नालायक़ इतना कि बारह वर्ष की नौकरी के बाद भी उसे कोई प्रमोशन नहीं मिला. कंपनी में छटनी हो रही थी किन्तु अपनी सीनियोरिटी के कारण वह सुरक्षित था. वह अपनी चाल चल गया. बेटी के रोग और उसके लिये परिचारक की अवश्यकता एक तगड़ा बहाना था. इस तरह से एक अच्छी रकम का हैंड-शेक पाकर वह नौकरी से मुक्त हो गया. अब वह घर में ही पड़ा रहता और सरकार की ओर से अटेंडेंस अलाउंस भी पाने लगा.

क्लेयर मनीश की सेक्रेटरी थी. ज्यों ही वह काम से घर लौटती, डेविड पब के लिये तैयार बैठा होता.

> *अप्सरा सी सुन्दर है क्लेयर! उसके सौंदर्य में और भी निखार आ जाता है जब वह अपने मेकअप और पूरी साज-सज्जा के साथ ऑफ़िस पहुंचती है. आज उसके रूप की साज-सज्जा हैं उसकी चोटों के लाल, नीले निशान! वही लेकर वह अपने बॉस के सामने आ उपस्थित हुई.*

'डार्लिंग, मैं दिनभर बच्चों के साथ लगा रहा हूं. मुझे भी तो थोड़ा बहुत विश्राम चाहिये.'

और उसका यह 'थोड़ा बहुत विश्राम' देर रात तक चला करता. वह पब में ही कुछ खा लेता और घर में बच्चों के साथ बैठी क्लेयर सोचा करती कि ऑफ़िस में वह भी तो अण्डों पर नहीं बैठी होती, वह भी तो दिन भर मेहनत करके घर लौटती है. उसे कब आराम मिलेगा?

एक रात वह नशे में धुत घर पहुंचा तो ध्यान आया कि घर की चाबी तो वह बाहर ही कहीं गिरा आया था. क्लेयर गहरी नींद सो रही थी. बाहर से बज रही घंटी उसने सुनी नहीं और डेविड देर तक चिल्लाता, दरवाज़ा पीटता रहा. कोई घंटा भर बाद जब दरवाज़ा खुला तो डेविड के जो हाथ दरवाज़ा पीट रहे थे, क्लेयर को पीटने में लग गए.

रोती, सुबकती क्लेयर रात भर तकिया भिगोती रही. तड़के सबेरे वह उठ खड़ी हुई. डेविड अभी नशे में बेहोश पड़ा हुआ था. अपना और बच्चों का जो भी कुछ वह समेट सकती थी समेटा और अपनी देह पर पति के जब्र की दस्तकारी, चोटों के नीले, लाल निशान लेकर वह अपने मायके पहुंच गयी और मां से लिपटकर रो पड़ी -

'मैं उस जानवर के साथ एक पल और नहीं रहूंगी.'

क्लेयर के माता पिता, रेचल और पीटर स्मिथ दोनों रिटायर्ड हैं और पेंशन पर हैं. आराम का बुढ़ापा बीत रहा था. बेटी और नाती, नातिन की मुसीबत उनकी भी मुसीबत बन गयी. उन्हें बच्चों को संभालना पड़ा.

एक अप्सरा सी सुन्दर है क्लेयर! उसके सौंदर्य में और भी निखार आ जाता है जब वह अपने मेकअप और पूरी साज-सज्जा के साथ ऑफ़िस पहुंचती है. आज उसके रूप की साज-सज्जा हैं उसकी चोटों के लाल, नीले निशान! वही लेकर वह अपने बॉस के सामने आ उपस्थित हुई. ऑफ़िस में हंगामा मच गया. मनीश सब काम धंधा छोड़कर क्लेयर को हस्पताल ले गया. वहां से उसकी चोटों के फ़ोटोग्राफ़ और रिपोर्ट लेकर वे दोनों पुलिस स्टेशन पहुंचे. कारवाई तो होनी ही थी. डेविड हथकड़ियों में थाने पहुंचा दिया गया और उस पर शुरू हुए दो मुकदमें. एक तो पत्नी पर जानलेवा हिंसक प्रहार का और दूसरा पत्नी द्वारा तलाक़ का.

इंग्लैंड की कोर्ट कचहरियों में न्याय मिलने में अनुचित देर नहीं लगती. डेविड को दो साल की जेल हो गयी और क्लेयर को पति से तलाक़ भी मिल गया. जैन्नी के परिचारक का जो अलाउंस डेविड को मिलता था वह क्लेयर की मम्मी रेचल को मिलने लगा क्योंकि जब वह ऑफ़िस में होती दोनों बच्चे अपने नाना-नानी के पास रहते.

क्लेयर को तलाक़ क्या मिला – एक रिश्ता टूटा, एक दूसरा रिश्ता बन गया. वही पुराना किस्सा! एक तरफ़ दौलत और दूसरी तरफ़ हुस्न. दौलत मनीश की, हुस्न क्लेयर का. कौन शिकार, कौन शिकारी? दोनों मन ही मन अपने को शिकारी समझते मगर शिकार हुए वे दोनों!

मनीश सड़क पर अपने ट्रॉली सूटकेस के साथ अपना अतीत घसीटता चला जा रहा था और सोचता जा रहा था, क्यों और कैसे वह ज़िंदगी के इस मरहले पर पहुंच गया?

एक दिन क्लेयर ने बेमतलब पूछ लिया था, 'मिसेज़ धवन से कब मिलवा रहे हो?'

'मिसेज़ धवन? पहले वाली या अब वाली?'

'तुमने दो शादियां की थीं?'

'नहीं.'

'शादी एक और बीवियां दो! यह कैसे हो गया?'

तब मनीश ने दराज़ में से शोभा की दो तस्वीरें निकाल दिखलायीं. एक में था उसका मधुरिम आकर्षक सुंदर, जवान मुखड़ा और दूसरी में उसका अधजला चेहरा और एक आंख बंद! उसने बतलाया कि शोभा के ऑफ़िस में आग लग गई थी.

उस दुर्घटना में उसका चेहरा जल गया और एक आंख जाती रही. वे तस्वीरें दिखाते समय मनीश की आंखें भर आईं थीं. क्लेयर ने आगे बढ़कर उसकी आंखें पोंछ डाली और आवेग में आकर मनीश ने उसके होंठ चूम लिए. इसके बाद तो चुम्बनों के बहाने बनते गए और वे दूसरे के करीब, और क़रीब होते गए.

फिर वे तीन ख़तरनाक, घातक शब्द उसके मुंह से निकल गए, 'आई लव यू!' क्लेयर के प्रत्युत्तर में शामिल था एक चौथा घातक शब्द, 'आई लव यू टू!!'

दोनों बने एक-दूसरे के शिकार भी, शिकारी भी!

मनीश ने क्लेयर को यह नहीं बतलाया कि आग की उस दुर्घटना के बाद शोभा की कंपनी ने उसका मुफ़्त इलाज भी करवाया था और उसे मुआवज़े में चालीस हज़ार पाउंड भी दिए थे जो पति-पत्नी के साझे खाते में गए थे और उसने शोभा को फुसलाकर अपने अलग खाते में डलवा लिए थे. बहाना बनाया कि धंधे में प्रगति के लिए इस पैसे से वह अपनी कंपनी का एक बढ़िया सा रिसेप्शन रूम तैयार करवायेगा और एक अच्छी सी रिसेप्शनिस्ट भी नियुक्त करेगा. भोली और निष्ठावान शोभा, तुरंत मान गयी. 'बैंक में पड़ा पैसा किस काम का? तुम्हारी कंपनी में लगेगा तो कुछ फ़ायदा ही होगा.'

शोभा ने पैसा खोया और पति भी! जो लड़की नियुक्त हुई, वह कंपनी की रिसेप्शनिस्ट नहीं थी. वह थी मनीश की नई सेक्रेटरी, क्लेयर! वही क्लेयर, जिसने सर्दी के इस कहर में आज उसे सड़क पर फेंक दिया है.

स्वयं मनीश ने अपनी पत्नी और ससुराल के अहसानों का क्या बदला दिया था? वह भारत में एक साधारण वकील था और उसे शोभा के साथ विवाह के लिये इंग्लैंड बुलाया गया था. यहां उसे नौकरी मिली बस-कंडक्टर की! मनीश के स्वर्गीय ससुर स्वयं एक जाने-माने रिटायर्ड वकील थे. वे कैसे बर्दाश्त कर लेते कि उनका दामाद – उनकी इकलौती बेटी का पति – एक बस-कंडक्टर की मामूली नौकरी करे? शोभा को दहेज में एक मकान तो वे दे ही चुके थे, अब उन्होंने इंग्लैंड में मनीश की वकालत की शिक्षा का बीड़ा भी स्वीकार किया और उसे उसके पैरों पर खड़ा किया.

हस्पताल से लौट आई शोभा. चेहरे पर अग्नि का भद्दा, अमिट लेप और एक चिराग़ गुल! वही हुआ, जो हुआ करता है – मनीश की विरक्ति और पति-पत्नी के बीच बढ़ती हुई दूरी और दूरी के साथ बहाने!

बहाने काम के आधिक्य के या दफ़्तर में हुई पार्टियों के, जो कभी थी ही नहीं. वह तो अपना अधिक से अधिक समय क्लेयर के साथ बिताना चाहता था. जब चोरी पकड़ी गयी तो शुरू हुई बेवफ़ाई के साथ बेहयायी. मनीश ने घर आना ही छोड़ दिया.

कोई बच्ची नहीं थी शोभा. वह भी जानती थी कि उसके साथ क्या हो रहा था. फिर भी बार-बार धोखा खाने को मन करता! बाहर सड़क पर निकलना तो शोभा को अच्छा नहीं लगता था. वह अपना जला चेहरा छुपाती पर्दों की ओट से पति के इंतज़ार में सड़क पर आंख टिकाये रहती. सपनों में भी उसी की आहटें सुनती और रातों में उठ-उठकर घर के दरवाज़े की ओर भागती. कई बार आधी रात में वीर और विजय ने मां को उसके बेडरूम तक पहुंचाया. एक रात उसकी रोती, सुबकती आवाज़ सुनकर दोनों बेटे शोभा के बेडरूम में चले गए. वह बिलख उठी.

जो लड़की नियुक्त हुई, वह कंपनी की रिसेप्शनिस्ट नहीं थी. वह थी मनीश की नई सेक्रेटरी, क्लेयर! वही क्लेयर, जिसने सर्दी के इस कहर में आज उसे सड़क पर फेंक दिया है.

'किसी तरह से, कहीं से अपने डैडी को ढूंढकर लाओ.'

तब विजय को कहना पड़ा, 'कोई तीन साल का बच्चा मां-बाप से बिछुड़ जाए, तो उसे ढूंढा जा सकता है. एक पचास वर्ष का आदमी जानबूझ कर घर न आना चाहे तो क्या हो सकता है? डैडी को घर का रास्ता मालूम है, जब चाहें लौट आएं.'

छोटा भाई, वीर कुछ ज़्यादा ही तेज़ मिज़ाज है. वह भड़क उठा, 'डैडी? कौन डैडी? मैं उस बेवफ़ा को अपना डैडी कैसे मान लूं?'

वह मां से बोला, 'कैसा है यह आप का पति? आप चेहरा जला बैठीं, एक आंख खो बैठीं! घर के लिए, परिवार के लिए. बदले में आपको मिला क्या? कलेजे पर पत्थर रख लो. भूल जाओ उस बेवफ़ा को. कांच के टुकड़े को हीरा समझ बैठीं थीं आप! खो गया, सो खो गया!'

मां की हालत देखकर एक दिन विजय ने पिता को फ़ोन किया - 'डैडी, हमसे क्या भूल हो गई? आप कई दिनों से घर नहीं आए.'

'नहीं बेटा, तुम्हारी कोई भूल नहीं. मैं अब भी तुम दोनों भाईयों से बहुत प्यार करता हूं. तुम अपनी लॉ की परीक्षा

पास करके मेरी कंपनी में शामिल हो जाओ और वहीं से अपना करियर शुरू करो. तुम्हारे छोटे भाई वीर की मेडिकल कॉलेज की पढ़ाई की आर्थिक ज़िम्मेदारी भी मुझ पर रहेगी. तुम दोनों अब बड़े हो गए हो, शोभा को संभाल सकते हो.'

'वीर की पढ़ाई की आप चिंता न करें. नाना जी हमारे लिये बहुत छोड़ गए हैं. बस आप बस घर आ जाइये.'

'सॉरी, बेटा! मैं जली हुई रोटी नहीं खा सकता.'

ऊपर बेडरूम के फ़ोन से शोभा ने भी पति की बात सुन ली थी. दुर्घटना वाले दिन अधूरा रह गया उसका दहन आज पूरा हुआ! आज महसूस हुआ कि वह किसी की पत्नी, जीवन-संगिनी नहीं है. वह एक खाद्य पदार्थ है. चबाई, खाई जाने वाली चीज़!! अब वह उस योग्य भी नहीं रही. वह, एक जली हुई रोटी!!!

शोभा फूट फूटकर रोने लगी.

वह 'कांच का टुकड़ा' सचमुच पूरी तरह से क्लेयर के हुस्न में खो चुका था किंतु हुस्न को शीशे में उतारने के लिये दौलत को कई खेल खेलने पड़ते हैं. क्लेयर को पार्टियों में अपने साथ देखने के लिये वह उसे महंगे से महंगे कपड़े, ज़ेवर ख़रीद कर देता क्योंकि अब वह उसी के साथ अपना भविष्य देखता था.

इंग्लैंड में कानूनन तीन साल से पुरानी हर कार को सरकार द्वारा अधिकृत गैराजों में प्रतिवर्ष टेस्ट किया जाता है ताकि कोई ख़तरनाक गाड़ी सड़क पर मौजूद न रहे. क्लेयर का छकड़ा इस टेस्ट में फ़ेल हो गया. बदले में मनीश ने उसे एक नयी बी.एम.डब्ल्यू. ले दी. तलाक़ के बाद कोर्ट ने मेम साहिब को डेविड का फ़्लैट प्रदान किया था. हमारे वकील साहिब ने उसे ढाई लाख पाउंड में बिकवा दिया और अपनी ओर से दो लाख पाउंड और डालकर एक शानदार फ़्लैट ख़रीदवा दिया. कार और फ़्लैट क्लेयर के नाम रजिस्टर करवाए गये.

दौलत से हुई ख़रीदारी – हुस्न की, इश्क़ की!

फिर एक दिन वह भी आया जब क्लेयर ने मनीश का परिचय अपने माता पिता रेचल और पीटर स्मिथ और बेटे जेकब से करवाया. जेक ने मम्मी के 'बॉय फ्रेंड' के साथ हाथ मिलाया और स्कूल से होमवर्क के बहाने भीतर चला गया. तब जैन्नी के बारे में कहा गया कि वह बीमार रहती है, आराम से सो रही है. मनीश ने न तो जैन्नी को देखा, न उसकी सही स्थिति ही जान सका.

रेचल और पीटर को मनीश अच्छा लगा था किंतु उन्हें इन दोनों के बीच उम्र का फ़र्क़ खटक गया. रेचल ने बेटी को समझाने की कोशिश की तो क्लेयर बेझिझक कह गयी,

'मम्मी, मेरे कपड़े, गहने, कार और फ़्लैट को देखो. मुझे

"वकील साहिब, मुझे नहीं चाहिये आपकी मेहरबानियां! इंसाफ़ और ज़ुल्म के बीच के अन्तर को समझते हैं आप? कोर्ट कचहरियों में आप दुनिया को इंसाफ़ दिलवायें और घर में अपनी पत्नी पर ज़ुल्म करें?"

दो बच्चों की तलाकशुदा औरत को – इतना सुख और वैभव कौन दे सकता है? उम्र के फ़र्क का क्या. हमारे देश में आदमी की औसत उम्र ८० वर्ष के आसपास है. भगवान मनीश को सौ साल की उम्र दे. हम दोनों का भविष्य उज्जवल होगा.'

उन्होंने भी समझ लिया कि क्लेयर बच्ची नहीं है. अपना भला बुरा जानती है.

विजय लॉ की परीक्षा पास कर गया. मनीश ने उसे अपनी कंपनी में शामिल करने का प्रस्ताव क्लेयर के आगे रखा तो उसे बुरा लगा. यों महसूस हुआ कि कोई बाहर का चोर उसके घर-परिवार में, उसके इस नए रिश्ते में सेंध लगा रहा है. उसका बिगड़ा, सिकुड़ा, विचलित चेहरा देखकर मनीश को कहना पड़ा– 'घबराती क्यों हो डार्लिंग? मेरे लिए जैसे मेरे विजय और वीर, वैसे ही हैं तुम्हारे जेक और जैन्नी. हम इन चारों में कोई भेदभाव नहीं रखेंगे.'

क्लेयर इस आश्वासन से संतुष्ट तो हुई मगर फिर भी कह गई,

'तुम यह पागलपन न कर बैठना. वह मुझ में देखेगा अपनी मां की सौत! आपस में नफ़रत बढ़ेगी और कंपनी के काम का जो हरज होगा, वह अलग. तुम ऐसा करो, उसे एक अलग कंपनी खोल दो और शुरू-शुरू में हमारी कंपनी का कुछ बिज़नेस उसे देते रहना.'

बहुत उचित था यह समझौता! एक व्यवसायिक मीटिंग में मिले दोनों बाप, बेटा. मीटिंग के बाद मनीश अपना यह निर्णय विजय को सुनाकर पछताया.

'वकील साहिब, मुझे नहीं चाहिये आपकी मेहरबानियां! इंसाफ़ और ज़ुल्म के बीच के अन्तर को समझते हैं आप? कोर्ट कचहरियों में आप दुनिया को इंसाफ़ दिलवायें और घर में अपनी पत्नी पर ज़ुल्म करें? आपका क्या अधिकार है कि आप इस पेशे में रहें. जी तो करता है कि मैं ही आपको कोर्ट में घसीटकर तमाशा देखूं लेकिन नहीं चाहता कि मम्मी किसी कचहरी में पेश हों. आप मेरे साये से भी बचकर रहिये.'

चोट खाए हुए अपना उतरा हुआ चेहरा लिए वकील साहिब वहां से तुरंत हट गए! लेकिन उन्हें अभी अपने छोटे बेटे के सामने भी ज़लील होना था.

एक दिन अचानक मनीश को मार्क्स एंड स्पेंसर में वीर मिल गया. ख़रीदे हुए कपड़ों का बिल देने के लिए वह कतार में उसके पीछे आ खड़ा हुआ. तब मनीश ने सोचा कम से कम अपने छोटे बेटे को ख़ुश कर दे. उसने कैशियर को समझा दिया कि उसके ठीक पीछे खड़े उसके बेटे के पैसे भी वह उसी के कार्ड में डाल दे.

वीर ने ज़िद की कि वह अपने हिस्से के पैसे ख़ुद देगा. तब मनीश ने उसे अपनी भाषा में कहा, 'मैं बाप हूं तुम्हारा. अब भी अपने दोनों बेटों से वैसा ही प्यार करता हूं.'

कैशियर ने वीर के हिस्से के पैसे भी मनीश के कार्ड में डाल दिये. वीर दुकान में कोई झगड़ा नहीं चाहता था, बाहर आते ही बाप से उलझ पड़ा -

'बेटों से प्यार और मां से नफ़रत! क्या अठारह वर्ष का बेटा वकील बाप को समझाएगा कि प्यार, मुहब्बत टुकड़ों में नहीं हुआ करते? यह कानून की किताब नहीं है कि यहां फ़लां धारा की फ़लां उप-धारा ही लागू हो सकती है, दूसरी कोई नहीं!'

मनीश ने कभी सोचा न था कि वीर इतना ज़ुबांदराज़ होगा. बेटा कहता रहा, बाप सुनता रहा –

'मम्मी का चेहरा जल गया, एक आंख जाती रही. आपकी तो दोनों आंखें सही सलामत थीं. आपकी दो आंखों से अपनी पत्नी न देखी गयी, पर उन आंखों को हमारी मां भी न दिखाई दी. आपको हमारी मां स्वीकार नहीं तो मैं आपको अपना पिता कैसे मान लूं? आपने मेरा बिल चुका दिया. कल आपके ऑफ़िस में चेक पहुंच जाएगा.'

वीर चला गया. शर्मिंदा हुआ मनीश गर्दन झुकाए सड़क देखता रहा! अगले दिन डाक द्वारा उसके ऑफ़िस में ३५० पाउंड का चेक पहुंच गया.

मनीश के दुखड़े अब शुरू हुए थे. अभी तो उसे और भी बहुत कुछ देखना था.

जेल में पड़ा डेविड मनीश को ही अपनी मुसीबतों का ज़िम्मेदार समझता था. अब उसकी प्रतिशोध की बारी थी. तलाक़ के समय कोर्ट ने शर्त रखी कि क्लेयर प्रति सप्ताह जेकब को उसके पिता से मिलवाएगी. उसने यह काम जेकब के नाना को सौंप दिया. डेविड उसे समझाता कि उसका और जैन्नी का पिता वही है और उसकी मम्मी का यह नया 'बॉय फ्रेंड' एक बाहर का आदमी है और सबका दुश्मन! उसी के कारण उसे जेल हुई और वह अपने परिवार से अलग हो गया.

जेकब के नाना भी वहीं होते. उन्होंने लाख टोका, 'तुम इस भोले, नादान के दिमाग़ में यह क्या ज़हर भर रहे हो?'

'मिस्टर स्मिथ, बाप-बेटे के बीच आने वाले आप कौन हैं? कोर्ट की पाबंदी आप लोगों पर है. मुझ पर कोई पाबंदी नहीं कि मैं अपने बेटे से क्या कहूं, क्या न कहूं. ज़हर मिला है मुझे, वही बांट रहा हूं.'

पिता द्वारा भरा हुआ ज़हर जेकब पर असर कर गया. वह मनीश से सख़्त नफ़रत करने लगा.

कई महीनों से क्लेयर के माता पिता, रेचल और पीटर ने सोच रखा था कि अपने विवाह की चालीसवीं वर्षगांठ वे क्रिस्मस के दिनों में स्पेन में बिताएंगे. हवाई टिकट आ चुके थे, होटल बुक हो चुका था. तीन हफ़्तों के लिये वे जेकब और जैनी को क्लेयर के हवाले कर गए.

जेकब और जैन्नी मम्मी के फ़्लैट में आ गए. तब मनीश ने देखी आराम से सो रही जैन्नी की सही हालत और तभी सामने आयीं जेकब की सारी बदतमीज़ियां.

क्लेयर जेकब को प्यार से कभी 'जेजे', कभी 'जेक' कहकर बुलाती किंतु जब मनीश उसे इसी तरह से पुकारता तो वह अकड़कर कहता, 'माई नेम इज़ जेकब जेन्किंज़, नॉट जेक'. अगर भूले से मनीश ने उससे एक गिलास पानी मांग लिया, तो वह अंग्रेज़ी के तीन अक्षर झाड़ देता है, 'डी.आई.वाई.' तात्पर्य, 'डू इट योरसेल्फ़ - अपना काम स्वयं करो.'

क्लेयर ने बेटे को समझाया भी कि तुम मनीश को अपने पिता की तरह समझो और उसकी इज़्ज़त करना सीखो, तो वह मां को भी साफ़ कह देता, 'नो, नैवर! माई फ़ादर इज़ मिस्टर डेविड जेंकिंज़! नो वन कैन टेक हिज़ प्लेस.'

बीस दिन तो क्या चार ही दिन में छटांक भर के इस छोकरे ने मनीश की ज़िंदगी दूभर कर दी!

क्लेयर के फ़्लैट में जैन्नी के लिए विशेष प्रबंध किए गए.

बेटों से प्यार और मां से नफ़रत! क्या अठारह वर्ष का बेटा वकील बाप को समझाएगा कि प्यार, मुहब्बत टुकड़ों में नहीं हुआ करते? यह कानून की किताब नहीं है कि यहां फ़लां धारा की फ़लां उप-धारा ही लागू हो सकती है, दूसरी कोई नहीं!

उसकी सुरक्षा के लिए उसकी खटिया के इर्दगिर्द जंगला लगाया गया. उसके पुराने झुनझुने उसके सिर के ऊपर टांगे गए, खटिया की बग़ल में एक तिपाई पर बीमारी से पहले की उसकी हंसती हुई तस्वीर रखी गयी. जैन्नी के सिर के सामने वाली दीवार पर उसका एक रंगीन पोर्टरेट टांगा गया. किसी तरह से लड़की के दिमाग़ के बंद कपाट फिर से खुल जाएं, इसलिए!

खटिया के सिरहाने दूसरी तरफ़ एक साइड-टेबल पर उसकी रोज़मर्रा की दूसरी अवश्यकताएं. उसकी दवाइयां, उसके नैप्पी का बंडल, नैप्पी बदलने के लिए महीन रबड़ के दस्तानों का पैकेट. हर बार नैप्पी बदलते समय नए दस्तानों की ज़रूरत पड़ती थी. झुनझुनों और तस्वीरों के सुझाव मनीश ही के थे और नैप्पी और दस्तानों के पैकेट की भी उसे पूरी जानकारी थी.

क्लेयर बाथरूम से निकली और जैन्नी को देखकर बरस पड़ी.

'कैसे इंसान हो तुम? लड़की मलमूत्र में पड़ी रही और तुमसे उसका नैप्पी भी न बदला गया!'

'मुझसे नहीं संभलती तुम्हारी यह लड़की!'

क्लेयर जैन्नी का नैप्पी बदलती हुई बड़बड़ाती रही –

'तुम तो कहते थे कि विजय, वीर, जेक और जैन्नी के बीच कोई भेदभाव नहीं होगा. अब यह मेरा, तुम्हारा कहां से आ गया?'

'तब मैंने जेक और जैन्नी को नहीं देखा था. जेकब जैसा बदतमीज़ लड़का तो दुनिया में नहीं होगा और बेचारी जैन्नी जैसी हुई, न हुई!'

मनीश का यह वाक्य क्लेयर के अन्तर को छलनी कर गया.

'जेक अभी छोटा है, सुधर जाएगा! मगर जैन्नी के लिए ऐसी बात करते तुम्हें शर्म नहीं आई? उसकी तस्वीरें देखी हैं तुमने? हंसती, खेलती बच्ची थी वह! एक हादसे का शिकार हो गयी, ठीक तुम्हारी शोभा की तरह. तुम तो अपनी एक आंख वाली मुंहजली मॉन्स्टर को छोड़ आए. मैं जैन्नी की मां हूं, कहां फेंक दूं उसे? क्या उसका गला घोंट दूं?'

शोभा के प्रति द्वेष में कहे गये क्लेयर के ये घिनौने, शब्द - एक आंख वाली मुंहजली, मॉन्स्टर - मनीश को बहुत बुरे लगे. अपनी पत्नी से अलगाव में वह बेचारी बिल्कुल निर्दोष थी और अपराधी सरासर वही था. निरुत्तर हुआ वह बग़लें झांकता रहा और क्लेयर रोती हुई वहां से उठी और दूसरे कमरे में बंद हो गयी.

उस दिन दोपहर का भोजन नहीं हुआ. जेक ने बिस्कुटों का डिब्बा ख़ाली करके काम चला लिया. मनीश ने व्हिस्की की बोतल खोल ली. उसकी शराब हो चुकी तो वह चुपचाप बाहर निकल गया. बंद होते दरवाज़े की खटाक जेक ने सुनकर अनसुनी कर दी. वह अपने क्रिसमस के खिलौनों में मस्त टी.वी. देखता रहा.

उधर अपने ग़म में निढाल क्लेयर नहीं जानती कब उसकी आंख लग गई. शायद कोई बुरा सपना देखा होगा. वह हड़बड़ाकर उठी तो देखा अंधेरा हो चुका था. तब ध्यान आया कि दोपहर का खाना तो हुआ नहीं. जेकब भूखा होगा. जैन्नी को दवाई देनी थी, उसे दूध पिलाना था.

'सॉरी, बेटा. मुझे नींद आ गयी थी. तुमने कुछ खाया कि नहीं.'

'मैंने बिस्कुट खा लिए थे.'

'और वह - विलेन - मनीश कहां है?'

'वह ड्रिंक कर रहा था. फिर उठकर मालूम नहीं कहां गया.'

क्लेयर ने जैन्नी को दूध पिलाया, उसे दवाई दी. तभी दरवाज़े की घंटी बजी. जेकब ने दरवाज़ा खोला. सामने मनीश खड़ा था.

क्लेयर ने पूछा, 'कहां थे तुम?'

'तुम तो अंदर कमरे में बंद हो गई थी. पेट तो भरना था कि नहीं? ख़ैर, अच्छा तंदूरी लंच हो गया.'

'जेक को भी साथ ले जाते तो क्या बिगड़ जाता? बेचारे को बिस्कुट खाने पड़े.'

चोरी पकड़ी जाने के बाद चोर जैसी हालत थी मनीश की! वह केवल 'सॉरी' कह सका. लम्बे समय तक दोनों के बीच मौन सन्नाटा छाया रहा. आख़िर मनीश ने चुप्पी तोड़ी – 'भूल जाओ सुबह की बातें. जैन्नी ठीक होती तो कहीं अच्छी सी जगह डिनर करते. आज रात डिनर में क्या होगा?'

क्लेयर सुबह से सुलग रही थी. जेकब के प्रति मनीश के व्यवहार ने आग में तेल का काम किया. वह भड़क उठी –

'तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं! बहुत हो लिया. मेरी, तुम्हारी अब और नहीं निभेगी. तुम हमारी जान छोड़ो और चले जाओ.'

"जैन्नी के लिए ऐसी बात करते तुम्हें शर्म नहीं आई? उसकी तस्वीरें देखी हैं तुमने? हंसती, खेलती बच्ची थी वह! एक हादसे का शिकार हो गयी, ठीक तुम्हारी शोभा की तरह. तुम तो अपनी एक आंख वाली मुंहजली मॉन्स्टर को छोड़ आए. मैं जैन्नी की मां हूं, कहां फेंक दूं उसे?"

> शोभा की एक अकेली आँख ने आगन्तुक को पहचान भी लिया और नहीं भी. एक बार की जली हुई रोटी फिर से अन-जली कैसे हो जाए? दिल के तवे से सड़ा-सड़ा सा धुआँ अब भी उठता है? और उस बेचारी आँख को चुभता रहता है.

'क्या कह रही हो तुम?'

'साफ़ शब्दों में, गेट आउट!'

और क्लेयर ने मनीश का सामान उसके ट्रॉली सूटकेस में भरना शुरू कर दिया. मनीश बड़बड़ाता रहा-

'तो यह है मेरे अहसानों का बदला! ज़मीन से आसमान पर बिठाया तुम्हें. तुम्हारे ये गहने, कपड़े, यह कार, सब मेरे दिये हुए हैं. तुम्हारे इस फ़्लैट में भी मेरा हिस्सा है.'

'सब अपनी हवस के लिए. तुम्हारी हवस मुझपर अहसान नहीं हो सकती. अपनी मुंहजली मॉन्स्टर से छुटकारा चाहिये था तुम्हें. एक दूसरी औरत चाहिये थी.'

'वह कोई भी हो सकती थी. मैं बदनसीब तुम्हारे सामने थी और शिकार हो गयी!'

'यों तो मैं जाऊँगा नहीं. मेरी कार मुझे लौटा दो और फ़्लैट में मेरे हिस्से के पैसे दे दो.'

'फ़्लैट और कार मेरे हैं, मेरे नाम रजिस्टर्ड हैं. वकील हो, मुकदमा कर के देख लो. कपड़ों में एक लो-नेक ब्लाउज़ और स्कर्ट दे सकती हूं. कभी बाज़ार में पहन के निकलना, अच्छे लगोगे!'

सोफ़े पर पसरा, मनीश टस से मस नहीं हुआ. उसने सपने में भी नहीं सोचा होगा कि एक ही दिन में उसके साथ यह सब हो जाएगा.

क्लेयर अपना काम करती रही.

'तुम्हारा जो भी सामान इस ट्रॉली सूटकेस में समा सकता था, मैंने रख दिया है. बाकी जो भी बचा हो बाद में मंगवा लेना.'

मनीश अब भी सोफ़े पर जमा रहा. क्लेयर चिल्लाई, 'मैं एक पल को भी तुम्हारा मुंह नहीं देखना चाहती. तुम निकलते हो या मैं पुलिस बुलाऊँ?'

मनीश को पुलिस से क्या डर? उसे डर था मीडिया का! सोसाइटी में उसका नाम है, स्टेटस है. उसके जीवन की यह बीभत्स झांकी टी.वी. पर दिखाई जाएगी, रेडियो पर, अख़बारों में चर्चा होगी और वह हार गया, गिड़गिड़ाता हुआ सा बोला-

'आधी रात हो चली है. आज तो बर्फ़ भी पड़ेगी. बिना बुकिंग के क्रिसमस की इस रात ख़ुदा मिल सकता है, होटल में कमरा नहीं मिल सकता. मैं कल तड़के, सबेरे निकल जाऊंगा.'

'मौसम पर मेरा कोई कंट्रोल नहीं और मेरा कोई होटल भी नहीं. सुबह तक शायद मुझे तुमपर तरस आने लगे. तुम्हें जाना होगा. आज और अभी!'

मनीश बाहर आ गया. सुनसान सड़क और तीरों सी चुभती ठंडी हवा. ख़ाली टैक्सी तो कोई थी नहीं. जो भी थीं, सब भरी हुई. बीच-बीच में कुछ लोगों की कारें गुज़र जातीं. गाते बजाते, नौजवान लड़के लड़कियों से ठसाठस भरी हुई. इस मौसम में पैदल चल रहे अकेले यात्री पर उनकी नज़र पड़ती. फिर जब वे उसे चिढ़ाते हुए कार का शीशा खिसकाकर उसे वेव करके मैरी क्रिसमस कहते, तो उसे आग लग जाती. देशभर में ख़ुशियां मनाई जा रही थीं. घरों, दुकानों के बाहर जगमगाती बत्तियां, सड़कों पर रोशनी के महराब, पेड़ों पर रंगबिरंगे बल्बों की सजावट. उसे लगता सभी उसका मज़ाक़ उड़ा रहे थे. अब तो बर्फ़ भी पड़नी शुरू हो गयी थी और उसका घर अभी भी कोई डेढ़ मील दूर था.

बर्फ़बारी तेज़ हो गई थी और घरों की छतों पर, पेड़ों पर और सड़कों पर सफ़ेद परत चढ़ने लगी थी और सुनसान रात का वह अकेला राही.

आख़िर घर पहुंच ही गया. यही थी उसकी मंज़िल - उसके अतीत और वर्तमान का संगम!

विजय और वीर घर से बाहर किसी क्रिसमस पार्टी में थे. शोभा घर में अकेली थी. मनीश ने घर की घंटी बजाई.

ट्रिंग... ट्रिंग... ट्रींग!

'आती हूं, बाबा! नालायकों से कई बार कहा है कि कार की चाबी के गुच्छे में घर की चाबी भी रख लो. पर इनपर कोई असर हो, तब न?'

एक साथ घर की कई बत्तियां जलीं. शोभा के बेडरूम की, सीढ़ियों की, हॉल की और बाहर दरवाज़े के ऊपर की. दरवाज़े में एक स्पाइ-होल भी फ़िट हो रखा है. कांच के टुकड़ों का एक नन्हा सा झरोखा जिसमें भीतर से बाहर के आगंतुक की पहचान तो हो सकती है किन्तु बाहर वाला भीतर नहीं देख सकता. इस प्रक्रिया के लिए शोभा की एक आंख बहुत है!

शोभा की एक अकेली आँख ने आगन्तुक को पहचान भी लिया और नहीं भी. एक बार की जली हुई रोटी फिर से अन-जली कैसे हो जाए? दिल के तवे से सड़ा-सड़ा सा धुआँ अब भी उठता है? और उस बेचारी आँख को चुभता रहता है. वह धीरे-धीरे सीढ़ियां चढ़ गयी. सभी बत्तियां फिर से गुल हो गयीं.

बाहर बर्फ गिरती रही.■

ब्रेम्पटन, कनाडा में भव्य कवि सम्मेलन सम्पन्न

विगत १५ दिसम्बर २०१२ को ब्रेम्पटन, कनाडा में पिछले वर्ष के हिन्दी कवि सम्मेलन की स्वर्णिम सफलता से प्रेरित स्वामी मोहन दास सेवा समिति, कनाडा, द्वारा श्री हनुमान मंदिर में पुनः भव्य हिन्दी कवि सम्मेलन आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंदिर के पुरोहितों सर्वश्री मुकेश चौबै, मंगल शर्मा और पवन शर्मा द्वारा मंगलाचरण, स्वस्तिवाचन एवं कविगणों के अभिनंदन से प्रारंभ हुआ. पंडित मुकेश चौबे ने सुमधुर स्वर में सरस्वती तथा गणेश वंदना की तथा सभी उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुये कविता की महत्ता पर प्रकाश डाला. हास्य, व्यंग्य, अध्यात्म, दर्शन, प्रेम, शक्ति एवं भक्ति के विविध पुष्पों से सुसज्जित कविता वाटिका की सुगंध तथा शोभा सराहनीय थी. सुश्री सुधा मिश्रा, राज कश्यप, सरोज भटनागर एवं सर्वश्री राकेश तिवारी, भगवत शरण, सरन घई, सुमन घई, हरजिन्दर सिंह, श्याम त्रिपाठी, भारतेन्दु श्रीवास्तव, गोपाल बघेल, शान्ति स्वरूप सूरी, संदीप त्यागी, कैलाश भटनागर, हर भगवान शर्मा, देवेन्द्र मिश्र ने सहज, सरल, सुरम्य, भाव भीनी मौलिक रचनाओं की प्रस्तुति द्वारा उपस्थित श्रोताओं को आल्हादित किया. मंच पर सुशोभित विभूतियों ने अपने वक्तव्यों में कवि गणों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुये ये कामना की कि अगले वर्ष के सम्मेलन में युवा वर्ग का और अधिक प्रतिनिधित्व एक सराहनीय प्रयास होगा.

कवि सम्मेलन के दूसरे सत्र में श्री मोहन दास सेवा समिति, कनाडा की प्रबंधक समिति के अध्यक्ष जीत शर्मा, उपाध्यक्षा सुनीता कालिया, सचिव सुभाष शर्मा, आयोजक सुमन कालिया तथा लक्ष्मी नारायण मंदिर के ट्रस्टी प्रेम शर्मा, प्रधान नवल गरोत्रा एवं ग्रे टाईगर्स सीनियर्स क्लब के अध्यक्ष राम गुप्ता ने कवि गणों और मंच पर प्रतिष्ठित अतिथियों को स्नेह सुरभित पुष्पों और पारंपरिक परिधानों की भेंटों से सम्मानित किया.

> *कवियों ने सहज, सरल, सुरम्य, भाव भीनी मौलिक रचनाओं की प्रस्तुति द्वारा उपस्थित श्रोताओं को आल्हादित किया. कवि सम्मेलन की अविस्मरणीय संध्या का समापन मुकेश चौबे की हृदयस्पर्शी गज़ल से हुआ.*

कवि सम्मेलन की अविस्मरणीय संध्या का समापन मुकेश चौबे की हृदयस्पर्शी गज़ल से हुआ. समस्त कार्यक्रम को रोजर्स, सहारा और एटीन टीवी चैनल्स द्वारा फ़िल्माया गया. अंत मे सभी लोगों ने सुमधुर, सुस्वादु सहभोज का आनंद उठाते हुये श्री हनुमान मंदिर एवं स्वामी मोहन दास सेवा समिति को मनोहारी सांस्कृतिक संध्या आयोजित करने के लिये सराहा और धन्यवाद ज्ञापन किया.■

रपट : प्रोफ़ेसर देवेन्द्र मिश्र

गर्भनाल एक सुन्दर और उपयोगी पत्रिका है. हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार करने में आपका योगदान सराहनीय है. आयु के ऐसे पड़ाव पर आ गया हूं कि ईमेल के सूक्ष्म अंक और अक्षर किसी से पढ़वाने पड़ते हैं. परन्तु मेरी लेखनी सतत प्रवाहमान है. आपके कार्य के लिये मेरी शुभकामनाएँ.

हरिशंकर आदेश, त्रिनिदाद

गर्भनाल का दिसंबर-२०१२ अंक मिला. बहुत अच्छा लगा कि अब 'गर्भनाल' पत्रिका मुझे ईमेल के जरिए ही पढ़ने को मिल जाती है. मुझे मधुसुदनजी का आलेख 'हिंदी, अंग्रेजी से टक्कर ले सकती है' बहुत पसंद आया. आज सभी लोग, कम से कम भारतीय इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है और किसी भी भाषा से टक्कर लेने में सक्षम है किन्तु फिर भी लोग इसके प्रयोग से कतराते हैं. सच है कि कस्तूरी कुंडल बसे मृग ढूंढे वन माहि. इस अंक में दागमार मारकोवाजी से बातचीत भी काफी रोचक लगी. जब भी कोई विदेशी हिंदी सीखता है और फिर भाषा के प्रचार-प्रसार में जीवन लगा देता है तो सचमुच आश्चर्य होता है और सुखद अहसास भी कि हिंदी-भाषा और संस्कृति से लोगों का इतना गहरा जुड़ाव है.

कुसुम नैपसिक, कालोरादो, अमेरिका

प्रवासी भारतीयों के लिये गर्भनाल पत्रिका बहुत ही सुंदर प्रयास है. इसे पढ़ कर मन झूम उठता है और सर गर्व से ऊंचा हो जाता है. हिन्दी प्रेमी देश में ही नहीं विदेशों में भी अपने सृजन साहित्य के जरिये अपनी भाषा में विचार, मनोभाव, खोज, ज्ञान-विज्ञान के विषय में इतनी गहराई से लिखते हैं और गर्भनाल जैसी पत्रिकाएँ उनके लिये मंच प्रदान करती हैं. लगता है वह शुभ दिवस दूर नहीं जब भविष्य में हिंदी भाषा विश्व में प्रथम स्थान पर होगी.

उल्लेख करना चाहूंगी कि संस्कृत भाषा के बहुतेरे शब्द तोजर्मन, स्पेनिश, पोलिश, तागालू (फिलिपीन) योगोस्लावियन आदि भाषाओं लिये गये हैं, दूसरी ओर हिंदी भाषा के शब्द भी उक्त भाषाओं में मिलते हैं. मेक्सिको के आम लोग तक भारत जैसे मसालों का प्रयोग करते हैं. गर्भनाल जैसे प्रयासों के लिये मेरी अनंत शुभकामनाएँ.

शैला मदान, अमेरिका

गर्भनाल पत्रिका के ताजा दिसम्बर अंक में कुछ रचनाएँ पढ़कर बहुत अच्छा लगा. धीरे-धीरे अन्य रचनाएँ भी पढ़ रहा हूँ. हिन्दी के लिये आपकी इस सेवा के लिये साधुवाद.

गोपाल बघेल 'मधु', टोरोंटो, कनाडा

गर्भनाल का दिसम्बर अंक 'हिंदी' के प्रति आस्था और ज़िम्मेदारी जागृत कर गया. अंक के 'बातचीत' कॉलम में दाग्मार मार्कोवा का कथन 'मेरे विचार में हिंदी को पहले अपने देश में अपनी उचित जगह मिलनी चाहिए. तब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उसका भविष्य उज्जवल होगा' बहुत सटीक लगा.

देश के बाहर रहते हुए हमारी भी यही अनुभूति है. बाहर उसी का सम्मान होता है जो घर पर मज़बूत होता है. रही बात उचित जगह मिलने की तो हमारी समझ में हिंदी को अपनी जगह बनानी पड़ेगी, उसे यह आसानी से मिलेगी नहीं और उसके प्रयास ग्रास रूट स्तर पर करने होंगे.

माधवी सिंह, अमेरिका

गर्भनाल के दिसम्बर अंक में बाबू राजेन्द्र प्रसादजी की स्मृति में लेख पढ़ अश्रु आ गये. बाबूजी, सरदार पटेलजी, राधाकृष्णनजी, पन्तजी, आचार्य कृपलानीजी, विजय लक्ष्मी पंडित, सरोजिनी नायडू, राज कुमारी अमृत कौर, मनमोहनी सहगल, किदवई, श्यामाप्रसाद मुखर्जी और अन्य नेताओं के चित्र घूम गये आँखों में. बाबूजी की पहली १९५१ की गणतंत्र दिवस की यात्रा आँखों देखी है. चार घोड़ों की बघ्घी पर बैठे, श्वेत परिधान, मुस्करात मुख पर हाथ जोड़े, जनता को अभिवादन करते ऐसे लग रहे थे जैसे कोई देवता पृथ्वी पर आये हैं. हमें एक पीतल की गोल प्लेट, जिस पर शेर की त्रिमूर्ति उकेरी हुई मिली और साथ में चार लड्डू भी.

उम्मीद गर्भनाल में ऐसे ही लेख पढ़ने को मिलते रहेंगे.

गुड्डो दादी, अमेरिका

गर्भनाल का ताज़ा संस्करण मेरे समक्ष है और हर बार की तरह मेरा पाठक मन संतुष्ट व प्रसन्न है. गर्भनाल परिवार को एक और उम्दा प्रस्तुति हेतु दिल से धन्यवाद. सच कहूँ तो ये बिलकुल ऐसा है जैसे खाना सुस्वादु तो है ही साथ ही सुरुचिपूर्ण तरीके से परोसा भी गया है. हर बार की तरह सबसे पहले मनोयोग से शायरी की बात को पढ़ कर अपनी क्षुधा शांत की. डॉ. मधुसुदन का हिंदी पर तार्किक विश्लेषण निसंदेह अकाट्य और सराहनीय लगा. उन्होंने अपने माध्यम से हिंदी के मन की बात पुरजोर तरीके से कही है. उन्हें मेरी ओर से हार्दिक धन्यवाद.

पूजा भाटिया 'प्रीत', इंदौर

आपकी लोकप्रिय पत्रिका गर्भनाल का अंक प्राप्त हुआ. हमेशा की तरह इस बार का अंक भी बेहतरीन है.

पूजन नेगी

आपकी बात

गर्भनाल के ७३वें अंक में डॉ. मधुसूदन का लेख 'हिन्दी अंग्रेजी से टक्कर ले सकती है?' पढ़कर इच्छा हुई कि 'अंग्रेजी पद्य रचना में देवनागरी किस तरह मदद कर सकती है' इस विषय पर मेरी खोज को प्रस्तुत करूँ. अतः मैं अपने एक लेख का अंश यहां उद्धृत कर रहा हूं जो इस पर प्रकाश डालता है :—

'काव्य में संगीत के आवरण के नीचे पद्य रचना का विस्तृत पटल होता है और भाषा ही पद्य रचना में सुगमता प्रदान करने की विशेषता रखती है. हिन्दी भाषा को पद्य रचना में मदद मिलती है उसकी लिपि 'देवनागरी' से क्योंकि इससे मात्रा गिनना बहुत सरल हो जाता है. अंग्रेजी भाषा में पद्य रचना के लिये force, length, pitch, weight, silence इन पाँच बातों पर ध्यान रखने के लिये स्वर, व्यंजन, शब्द के उच्चारण का समय और शब्दों के जोर व वजन आदि बातों पर ध्यान देना पड़ता है, जो बहुत ही जटिल प्रतीत होता है. अतः मैंने पाया है कि हम यदि अंग्रेजी पद्य को देवनागरी लिपि में लिखें और मात्रा की सिर्फ गिनती करें तो यह काम उतना ही सरल हो जाता है, जितना हिन्दी पद्य रचना में है.

उदाहरणार्थ :

टिंक्कल टिंक्कल लिटिल स्टार
२११ २११ १११ २१
हाउ आर वंडर वाट यू आर
२१ २१ २११ २१ २ २१
अप एब्व दि वर्ल्ड सो हाय
११ २१ १ २१ २ २१
लाईक ए डायमंड इन दि स्काय
२२१ २ २१२१ ११ १ २१

एक और उदाहरण :

टेल मी नाट इन मार्नफुल नंबरस्
२१ २ २१ ११ २१११ २१२
लाइफ इस बट एन एम्पटी ड्रीम
२११ ११ ११ २१ २१२ २१
एंड दी सोल इस् डैड दैट स्लम्बरस्
२१ २ २१ ११ २१ २१ २१२
एंड थिंग्स आर नाट व्हाट दे सीम
२१ २१ २१ २१ २१ २ २१

अब यदि अंग्रेजी में पद्य रचना करने के लिये उपरोक्तानुसार हम देवनागरी का प्रयोग करें और ऐसे शब्दों का चयन करते चलें कि मात्रा का गणित ठीक बैठता चले तो अंग्रेजी में पद्य रचना बहुत ही सरल तरीके से हो सकेगी.

भूपेंद्र कुमार दवे, जबलपुर

गर्भनाल का ७३वां अंक पढ़ा, सभी रचनाएं हिंदी के उच्च स्तर का प्रतिनिधित्व करती हैं क्योंकि लिखने वाले हिंदी के अनुभवी रचनाकार हैं. गंगानंद झा जी का सम्पादकीय 'अपनी बात' काफी अच्छा लगा. परन्तु मैं एक बात कहना चाहता हूँ भ्रष्टाचार के जन्मदाता भ्रष्टाचारी ही होते हैं अतः निशाना तो भ्रष्टाचारियों पर ही साधा जायेगा. यदि मैं सभी लेख, कविताओं, कहानियों की समीक्षा लिखूं तो पूरा एक लेख बन जायेगा. जो भी है गर्भनाल का प्रकाशन एक अच्छा प्रयास है हिंदी की सेवा करने का.

पंकज कुमार

गर्भनाल के ताजा दिसम्बर अंक में हिन्दी प्रेमी दागमार मारकोवा का साक्षात्कार पढ़ा. बहुत-सी बातें उनके हिंदी प्रेम की जानने को मिलीं. डॉ. अमरनाथजी की लिखी विश्व हिंदी सम्मलेन की रिपोर्ट बहुत विश्लेषणात्मक है.

गर्भनाल बहुत शास्त्रीय पत्रिका है. ये देखकर अच्छा लगता है कि देश विदेश के बहुत से विद्वान इससे जुड़े हैं.

नीलम कुलश्रेष्ठ, अहमदाबाद

गर्भनाल का ताजा अंक पढ़ा. जिसमें राघवेंद्र झा का स्मरण राजैन बाबु की कुछ यादें पढ़कर जो जानकारी मिलीं उससे ज्ञान में बढ़ोत्तरी हुई. शुक्रिया. मैं चिंतन के बारे में जरूर कहना चाहूँगी जो कि ब्रजेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा लिखा गया है कि वह कबीले तारीफ है. 'आओ आज जिंदगी जी लें' मृदुल जोशी की एक सुंदर रचना है. आपका पूरा अंक ही कबीलेतारीफ है. सबकी प्रतिक्रिया दे पाना संभव नही होगा. मेरी हार्दिक शुभकामनायें उम्मीद करती हूं कि गर्भनाल पत्रिका मुझे इसी तरह ईमेल पर प्राप्त होती रहेगी.

कीर्ति श्रीवास्तव, भोपाल

गर्भनाल दिसम्बर-२०१२ के अंक में डॉ. मधुसूदन जी का शोधपरक आलेख पढ़ा. बहुत अच्छा लगा. काश कि ये सारी बातें और तथ्य भारत सरकार को समझायी जायें. मधुसूदन जी का लेख पढ़कर मैं दावे से कह सकता हूं कि हिन्दी भविष्य में ज़रूर ही अंग्रेजी को टक्कर देगी, उसे कोई नहीं रोक पाएगा.

प्रवीण कुमार जैन, मुंबई

गर्भनाल के ताजा अंक पर अभी एक नजर ही डाल पाया हूं. बहुत खूबसूरत मैगज़ीन है. पूरी पत्रिका आराम से पढ़ूंगा. एक सुन्दर काम के लिये आपको बहुत-बहुत बधाई.

मनीष शुक्ला, लखनऊ

गर्भनाल का ताजा दिसम्बर अंक भी सदा की तरह विषयवस्तु एवं प्रस्तुति में अत्यंत सुन्दर, पठनीय है.

अनिल वर्तक

गर्भनाल के अंक इंटरनेट के माध्यम से मिलते रहते हैं. अच्छी साहित्यिक रचनाएँ होती हैं इस पत्रिका में. दिसंबर २०१२ अंक के सम्पादकीय में आपने एक ज्वलंत मुद्दे को उठाया है. मुझे भी लगता है शिक्षा के क्षेत्र में भारत में बहुत कुछ गोलमाल हो रहा है. चंडीगढ़ में जो पकड़ा गया, वह एक तरह का मसला है, वास्तव में कई और तरह के मसले भी पकड़ में आ सकते हैं. मुझे तो कुछ मामलों में सरकारी नियंत्रक/नियामक संस्थाओं की कार्यप्रणाली भी संदिग्ध लगती है. हो न हो, बहुत सारे कॉलेज तो शत प्रतिशत भ्रष्टाचार के सहारे ही चल रहे हों, जाँच करने पर उनका शिक्षा से कोई वास्ता ही न निकले. कई कोर्स संदेह के घेरे में हैं. जितने भी पीजीडी कोर्सेज हैं, उनकी तो सघन जाँच की जरूरत है. सरकारी सहायताओं के उपयोग व तमाम नियामक संस्थाओं की कार्यप्रणाली की भी सघन जाँच होनी चाहिए. इस अंक में सृजनात्मक रचनाएँ भी प्रभावशाली हैं. एक अच्छी पत्रिका के लिए हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं!

डॉ. उमेश महादोषी, रुड़की

गर्भनाल का ताजा अंक भी सदैव की भांति उत्तम है. इधर गर्भनाल की मुद्रित प्रतियाँ प्राप्त नहीं हो रही हैं, क्या गर्भनाल मुद्रित तौर पर चल नहीं पाई?

महेश चन्द्र द्विवेदी, लखनऊ

गर्भनाल में प्रकाशित आलेख दिल के अन्दर तक पहुँचकर सवाल करने लगते हैं कि क्यों हो रहा है ऐसा.

राजकिशोर जी का लेख 'गांधी विचार की सबसे बड़ी कमी' आज के परिपेक्ष्य में भी देखा जा सकता है, जब लोगों के झुण्ड अन्ना जी से जुड़ रहे थे, मेरे मन में स्वाभाविक-सा प्रश्न उठा कि कितने उनके नियमों का पालन करेंगे व देश की उन्नति के लिए बनाये नियमों का पालन करेंगे. उन दिनों में एक बिल्डर के यहाँ काम करती थी. वो और उनके पार्टनर जो विदेश में रहते थे लिंक पर लाइक करते थे व हमसे भी ऐसा करने को कहते थे. उन्हीं के आफिस में मैंने देखा कि उन्होंने एक नेपाली लड़के को जो नाबालिंग था, का बालिग का सर्टिफिकेट बना कर चौबीस घन्टे का नौकर बना रखा था. वो लड़का बोलता कुछ भी नहीं था. ऐसा लगता था कि बोलना जानता ही नहीं है. मेरे लिए शरबत लेकर आता था, चुपचाप रखता, चुपचाप खाली गिलास ले जाता. एक दिन कोई नहीं था आफिस में, मैंने उससे बात की तो बोला मेरे पापा ने थोड़े से पैसों के लिए यहां काम पर रख दिया है, मैं बाहर नहीं जा सकता, मुझे पायलट बनना है. मैंने उससे पूछा कि तुम्हें कम्प्यूटर आता है बोला नहीं, मैंने कहा जब कोई नहीं हो तब आना. मेरे लिए आश्चर्य की बात थी कि जो भी मैं सिखाती उसे दुबारा सिखाने की जरूरत नहीं पड़ती. मैंने गूगल और यूट्यूब पर उसे अंग्रेजी व साइन्स के पाठ कैसे ढूंढते हैं व पढ़ते हैं सिखा दिया. एमएस वर्ल्ड सिखा दिया, उसमें काम करना व ईमेल करना सिखा दिया.

एक दिन उसने बगावत कर दी कि मैं काम नहीं करूंगा, मेरे पढ़ने की उम्र है. मेरे बांस को मुझ पर शक हो चुका था क्योंकि वो बोलने लगा था साथ ही आफिस के ही लोगों ने बता दिया कि वो यहां कम्प्यूटर सीखता है मैडम से. वो बगावत करके चला गया. मुझे खुशी हुई कि उसकी अन्तरआत्मा जागी और उसने अपने हक जाने.

मेरी क्लास लगनी बाकी थी. बिल्डर तैयार, मेरी क्लास लगाने के लिए, उसने कहा आप समझती क्या हैं अपने आप को. मेरा जवाब था कि बच्चों से साथ अन्याय करने वाले, कभी इण्डिया अगेन्स करप्शन के भाग नहीं ले सकते. अन्ना हजारे को लाइक करना बन्द कर दीजिए, अपनी जीवन शैली सुधारिये. मैंने अपना पर्स उठाया और घर आ गयी, मैं चली, मुझे भी ऐसी जगह काम नहीं करना. बिल्डर जैनी थे. जैन क्षमा पर्व पर उनका माफी का ईमेल मेरे पास भी आया पर मैंने कोई जवाब नहीं दिया क्योंकि वो सबको एक जैसा भेजा गया था, जो गलती की थी उन्होंने उसको उल्लेख करके माफी नहीं मांगी गई थी.

गंगानन्द झा ने जिस तरफ इशारा किया है वो काफी गहरे जड़ें फैला चुका है. सबसे बड़ी बात इन बातों पर, उस स्तर का एक्शन लिया ही नहीं जाता, जितना राजनीति पर, जबकि देश के विकास की धुरी शिक्षा होती है राजनीति नहीं. सच ये भी है कि हमने राजनीति से किनारा भी किया है, जिसका नतीजा है कि गलत लोग सत्ता पर बैठे हैं, उनका वहां से जाने का रास्ता बनाना होगा हमें और अपने अन्दर जाने का रास्ता भी तैयार करना होगा. जिससे परिवर्तन की राह आसान हो सके.

बबीता वाधवानी, जयपुर

Thanks a lot for your kind email and the soft copy of Garbhanal. It is interesting to read about World Hindi Conference and other topics related to various aspects of language.

Dr. Krishna Kumar Mishra, Mumbai